हिन्दी दैनिक

प्रत्यूष नवबिहार

जोहार

रांची संस्करण

www.tezraftarlive.com
Email-navbiharjh@gmail.com

रांची, पटना और दिल्ली से प्रकाशित

रांची ● गुरुवार ● 07.11.2024 ● वर्ष : 15 ● अंक : 106 ● पृष्ठ : 12 ● आमंत्रण मूल्य : ~~3 रुपये~~ 2 रुपये

शुभकामना संदेश

छठ महापर्व के शुभ अवसर पर *प्रत्यूष नवबिहार* की ओर से पाठकों, विज्ञापनदाताओं एवं हॉकरों सहित सभी शुभेच्छुओं को हार्दिक शुभकामनाएं।

-संपादक

अवकाश की सूचना

छठ महापर्व के शुभ अवसर पर *प्रत्यूष नवबिहार* के कार्यालय में 07 नवंबर 2024 को अवकाश रहेगा। अतः समाचारपत्र का अगला अंक 09 नवंबर 2024 को प्रकाशित होगा।

-संपादक

एक नजर

राहुल गांधी कल आयेंगे झारखंड

रांची : लोकसभा के प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी 08 नवंबर को नयी दिल्ली से बिरसा मुंडा एयरपोर्ट रांची आयेंगे और दो विधानसभा क्षेत्र में जनसभा को संबोधित करेंगे। इस क्रम में पहला सिमडेगा के गांधी मैदान में 12.10 बजे आयोजित जनसभा को संबोधित करेंगे। इसके बाद गांधी 1.5 बजे से सिमडेगा से लोहरदगा के लिए प्रस्थान करेंगे। इसके बाद लोहरदगा के बीएस कॉलेज ग्राउंड में राहुल गांधी 1.45 बजे आयोजित जनसभा को संबोधित करेंगे। फिर गांधी लोहरदगा से बिरसा मुंडा एयरपोर्ट आयेंगे और विशेष विमान से रांची से दिल्ली के लिए वापस लौट जाएंगे। यह जानकारी प्रदेश कांग्रेस के मीडिया विभाग के चेयरमैन सतीश पॉल मुंजनी ने बुधवार को दी।

बद्रीनाथ धाम के कपाट 17 को होंगे बंद

गोपेश्वर : उत्तराखंड के चार धामों में शामिल बद्रीनाथ धाम के कपाट रविवार 17 नवंबर रात नौ बजकर सात मिनट पर शीतकाल के लिए बंद हो जाएंगे। कपाट बंद होने की प्रक्रिया के अंतर्गत पंच पूजा बुधवार 13 नवंबर से शुरू होंगी। बीकेटीसी मीडिया प्रभारी डॉ. हरीश गौड़ ने बुधवार को बताया कि श्री पंचपूजाओं के अंतर्गत पहले दिन 13 नवंबर को भगवान गणेश की पूजा होगी और इसी दिन भगवान गणेश के कपाट बंद हो जाएंगे। दूसरे दिन गुरुवार 14 नवंबर को आदि केदारेश्वर मंदिर तथा शंकराचार्य मंदिर के कपाट बंद होंगे। तीसरे दिन शुक्रवार 15 नवंबर को खडग पुस्तक पूजन तथा वेद ऋचाओं का वाचन बंद हो जाएगा। उन्होंने बताया कि चौथे दिन शनिवार 16 को मां लक्ष्मीजी को कढ़ाई भोग चढ़ाया जाएगा।

फूट डालो और राज करो वाले अब हमारे समाज को बांटने की कोशिश में हैं : हेमन्त

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरायकेला : मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने बुधवार को चक्रधरपुर और सरायकेला में चुनावी सभाओं को संबोधित किया। चक्रधरपुर में उन्होंने झामुमो के उम्मीदवार सुखराम उरांव के समर्थन में सभा की और लोगों से मतदान की अपील की। सरायकेला में पार्टी प्रत्याशी गणेश महली के पक्ष में चुनावी सभा की।

सोरेन ने कहा कि आदिवासी-मूलवासियों के अधिकार के लिए वे संघर्ष कर रहे हैं। इनके लिए उन्होंने कई कार्य किए हैं। इसलिए वे आज आशीर्वाद मांगने आए हैं। उन्होंने कहा कि विपक्ष की नीति है फूट डालो और राज करो। उन्होंने कहा कि हमारे ही कुछ भाई और गोतिया को उन्होंने अपनी ओर मिला लिया है और अब वे हमारे समाज को बांटने की कोशिश में हैं। साथ ही कहा कि ये लोग रोटी, बेटी और माटी की बात करते हैं। असम के मुख्यमंत्री बिस्वा सरमा झारखंड में घूम रहे हैं। इनके ही राज्य में आदिवासियों को आज तक आदिवासी का दर्जा और आरक्षण नहीं मिला है।

गुजरात में बिलकिस के आरोपियों को भाजपा ने संरक्षण दिया

सोरेन ने कहा कि इनके बगल में ही मणिपुर में आदिवासी लड़की को निवस्त्र कर सड़क पर घुमाया गया। मणिपुर जल रहा है। वहां आदिवासियों पर हिंसक हमले हो रहे हैं लेकिन न असम के हिमंता ने आज तक कुछ कहा और न इनके प्रधानमंत्री मोदी ने कुछ कहा। दौरा करना तो दूर की बात है। उन्होंने कहा कि गुजरात में बिलकिस के आरोपितों को इन्होंने संरक्षण दिया। ये लोग नारी सम्मान की बात करने के अधिकारी नहीं हैं।

हेमन्त सोरेने कहा कि छत्तीसगढ़ में अभी इनकी सरकार है लेकिन देख लीजिये वहां आदिवासियों और उनके जंगल का क्या हाल है। इनकी कारोबारी मित्रों द्वारा आदिवासियों को उनके ठिकाने से विस्थापित किया जा रहा है। जो नहीं विस्थापित हो रहे हैं उनको नक्सली बताकर जेल में डाल दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इनको झारखंड के आदिवासियों से नहीं यहां की खनिज संपदा और संसाधनों से मोह है। झारखंड की खनिज संपदा को ये लोग अपने व्यापारी मित्रों को देना चाहते हैं।

सुखराम उरांव को जिताना जरूरी

सोरेन ने कहा कि हम पहला ऐसा राज्य हैं, जिसने अपने कर्मचारियों को पेंशन देने की घोषणा की है। उन्होंने कहा कि इनके लिए कायदा-कानून नाम की कोई चीज नहीं है। चुनाव कराने आये सिपाहियों ने सिमडेगा में बाजार में रात को निकल कर फायरिंग की लेकिन उन पर अभी तक कोई कार्रवाई नहीं की गयी। साथ ही कहा कि मंईयां सम्मान की राशि को दिसंबर से बढ़ाकर 2500 रुपये कर दिया गया है। हमारी अगली सरकार हर घर में एक लाख रुपये देने का काम करेगी। साथ ही उन्होंने बाकी की योजनाओं का भी जिक्र किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि जो बाहर के नेता यहां घूम रहे हैं, उनको यहां से भगाने के लिए सुखराम उरांव को जिताना जरूरी है। उन्होंने कहा कि आदिवासी-मूलवासियों के अधिकार के लिए वे संघर्ष कर रहे हैं। इनके लिए उन्होंने कई कार्य किए हैं। इसलिए वे आज आशीर्वाद मांगने आए हैं। विरोधियों ने साजिश कर उन्हें जेल में डाल दिया। उनका उद्देश्य हेमंत सोरेन सरकार को गिराना था और झामुमो को खत्म करना था लेकिन उन्हें पता नहीं है कि जेएमएम इस राज्य की चीन की दीवार है। कोई इसको लांघ कर नहीं जा सकता, जो इस दीवार पर चढ़ेगा वो खत्म हो जाएगा।

रोटी की बात करने वालों के शासन में लोग भूख से मरे

हेमन्त सोरेन ने विपक्ष पर निशाना साधते हुए कहा कि ये लोग मां और बेटियों की बात करते हैं। गुजरात और पंजाब के मामले इनके असली चेहरे उजागर करते हैं। ये ऐसे ही लोगों के साथ हैं, जो महिलाओं से दुष्कर्म और छेड़छाड़ के आरोप में जेल में बंद है। चुनाव के वक्त ये इनका इस्तेमाल करते हैं। हेमन्त सोरेन ने कहा कि आज ये रोटी की बात करते हैं। यहां डबल इंजन की सरकार में लोग भात-भात कर भूख से मर गए। आपकी सरकार ने कोरोना जैसी महामारी देखी लेकिन किसी की मौत भूख से नहीं हुई।

खनन के नाम पर नहीं होगा विस्थापन

हेमन्त सोरेन ने कहा कि माटी की बात करनेवालों ने खनन और डैम निर्माण के नाम पर लोगों को विस्थापित किया। यहां कारखाना और माइनिंग इनके मित्रों का है। आज सबसे अधिक जमीन आदिवासियों का है। इस जमीन को कब्जा करने के लिए ये लोग नयी-नयी नीति बनाते हैं। पहली बार उनलोगों ने उन्हें टक्कर दी है। खनन के नाम पर विस्थापन नहीं होगा। उद्योग लगने से पहले तय होगा रोजगार और मुआवजा। इसके बाद बात आगे बढ़ेंगी। उद्योगों में 75 प्रतिशत स्थानीय होंगे। हेमन्त ने कहा कि माटी की बात करने वालों ने खनन और डैम निर्माण के नाम पर लोगों को विस्थापित किया। यहां कारखाना और माइनिंग इनके मित्रों का है। आज सबसे अधिक जमीन आदिवासियों का है। इस जमीन को कब्जा करने के लिए ये लोग नया नया नीति बनाते हैं।

खरना संपन्न, अस्ताचलगामी सूर्य को पहला अर्घ्य आज

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : महापर्व के दूसरे दिन बुधवार को खरना अनुष्ठान हुआ। दिनभर उपवास करने के बाद व्रती सूर्यास्त होने के बाद भगवान की पूजा-अर्चना कर खीर, रोटी और केला का नैवेद्य दीं। इसके बाद स्वयं इसे ग्रहण कीं। उसके बाद प्रसाद स्वरूप इसका वितरण किया गया। इसके साथ ही व्रतियों का 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हो गया। महापर्व छठ पर अस्ताचलगामी सूर्य को पहला अर्घ्य आज यानि गुरुवार को दिया जायेगा। खरना बुधवार को मनाया गया। छठ महापर्व पर फलों का बेहद खास महत्व होता है। इसे लेकर राजधानी में छठ बाजार सज गये हैं। रांची के जिला स्कूल मैदान में मंगलवार से ही बाजार सज गया है। बाजार में कांके, मांडर, रातू, ओरमांझी, डोरंडा, पुंदाग, धुर्वा, डीपाटोली, रांची, मोरहाबादी, नामकुम, लोवाडीह, डोरंडा आदि क्षेत्र के 300 लोगों ने दुकान लगायी है। बुधवार को सुबह से ही खरीदारों की भीड़ बाजार में उमड़ पड़ी।

इन इलाकों में सजा छठ बाजार

राजधानी के मेन रोड स्थित डेली मार्केट, हरमू बाजार, डोरंडा बाजार, मोरहाबादी, बरियातू, कडरू, चुटिया, हटिया, धुर्वा, पंडरा, लालपुर, कांटाटोली, अरगोड़ा, कोकर, धुर्वा आदि में भी छठ बाजार बाजार सजे हैं। खरीदारी के अंतिम दिन होने की वजह से आज शहर में खरीदारों की भीड़ लगी रही। लोग केला कांदी, सेब की पेटी, संतरे की पेटी, फलों का टोकरा सहित अन्य पूजन सामग्री ले जाते नजर आ रहे थे।

रांची के आसमान में छाए रहेंगे बादल

झारखंड के मौसम विज्ञान केंद्र ने पूर्वानुमान लगाया है कि छठ के पहले और दूसरे अर्घ्य के दिन मौसम शुष्क रहेगा। सुबह में कोहरा या धुंध रहेगा। बाद में आंशिक बादल छाये रहेंगे। यह स्थिति करीब करीब सभी जिलों की रहेगी। बुधवार को राजधानी का मौसम शुष्क रहा। सुबह में राजधानी के कई स्थानों पर घना कोहरा था। बाद में आकाश में बादल छाये रहे। राजधानी का अधिकतम तापमान 28 तथा न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेसि के आसपास रहा। मौसम केंद्र ने पूर्वानुमान लगाया है कि 11 नवंबर तक मौसम की स्थिति सामान्य रहेगी। आकाश में हल्के बादल छाये रहेंगे। फिलहाल बारिश का अनुमान नहीं है। बता दें 7 नवंबर को छठ पूजा का पहला अर्घ्य है और 8 नवंबर को दूसरा एवं अंतिम अर्घ्य है।

गुलबी घाट पर आज राजकीय सम्मान के साथ होगा शारदा सिन्हा का अंतिम संस्कार

एजेंसी

पटना : मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने घोषणा की है कि बिहार कोकिला, पद्मश्री एवं पद्म भूषण से सम्मानित स्व. शारदा सिन्हा का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ होगा। राजधानी पटना के गुलबी घाट पर गुरुवार सुबह आठ बजे राजकीय सम्मान के साथ उनका अंतिम संस्कार होगा। भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा गुरुवार शाम शारदा सिन्हा के राजेन्द्र नगर स्थित घर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। मुख्यमंत्री ने शारदा सिन्हा के निधन की सूचना मिलते ही स्थानीय आयुक्त, नई दिल्ली को उनके परिवार के सदस्यों से समन्वय स्थापित कर उनका पार्थिव शरीर वायुयान से पटना भेजने का निर्देश दिया। मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद आज इंडिगो की फ्लाइट से उनका पार्थिव शरीर दिल्ली से पटना लाया गया।

शारदा सिन्हा के निधन पर सीएम हेमन्त ने जताया शोक

रांची : बिहार की मशहूर लोक गायिका शारदा सिन्हा का मंगलवार रात को दिल्ली एम्स में निधन हो गया। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने भी शोक जताया है। हेमन्त सोरेन ने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर लिखा, अपनी आवाज से छठ एवं अन्य त्योहारों को जीवंत करने वाली स्वर कोकिला आदरणीय श्रीमती शारदा सिन्हा जी के निधन की दु:खद खबर मिली। स्व शारदा जी नारी सशक्तिकरण की विराट मिसाल थीं। उनका चले जाना देश के लिए अपूरणीय क्षति है, जिसकी भरपाई शायद ही कभी पूरी हो पाएगी। छठी मइयां स्व शारदा जी की आत्मा को शांति प्रदान कर शोकाकुल परिवारजनों को दु:ख की यह विकट घड़ी सहन करने की शक्ति दे।

उप्र के हरदोई में सड़क हादसा, 10 लोगों की मौत, पांच घायल

एजेंसी

हरदोई : उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में ग्राम रोशनपुर के पास बुधवार को डीसीएम और ऑटो की टक्कर में 10 लोगों की मौत हो गई और पांच लोग घायल हो गए। जान गंवाने वालों में 05 महिलाएं, 02 बच्चियां, 01 बच्चा और 02 पुरुष हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सड़क हादसे में जान गंवाने वाले लोगों के शोक संतप्त परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। साथ ही संबंधित अधिकारियों को घायलों के समुचित उपचार के निर्देश दिए हैं। इसके साथ ही घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की भी कामना की है। पुलिस अधीक्षक नीरज कुमार जादौन ने बताया कि रोशनपुर गांव के पास सामने से आ रहे डीसीएम की ऑटो से टक्कर हो गई। इस हादसे में ऑटो अनियंत्रित होकर पलट गया, उसमें सवार सात सावारियों की मौके पर मौत हो गई, जबकि आठ लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। कुछ देर बाद तीन घायलों ने बिलग्राम स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में दम तोड़ दिया। गंभीर रूप से घायल पांच अन्य लोगों को बेहतर इलाज मुहैया कराया जा रहा है। घटना की जानकारी पर जिला अधिकारी, पुलिस अधीक्षक और अन्य अधिकारी जिला मुख्यालय से घटनास्थल के लिए रवाना हुए। घटना के बाद से डीसीएम चालक और हेल्पर फरार हो गए। मृतकों की शिनाख्त की जा रही है।

प्रधानमंत्री ने हरदोई सड़क हादसे पर जताया दु:ख, मुआवजे की घोषणा की

लखनऊ : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले में हुई सड़क दुर्घटना पर शोक व्यक्त किया है। साथ ही प्रधानमंत्री ने इस हादसे में जान गंवाने वाले लोगों के आश्रितों को दो-दो लाख रुपये और घायलों को 50-50 हजार रुपये की आर्थिक सहायता की घोषणा की है। प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक्स पोस्ट में लिखा कि हरदोई जिले में हुई सड़क दुर्घटना मन को व्यथित करने वाली है। इसमें कई परिवारों ने अपनों को खो दिया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि उन्हें इस अपार दुख को सहने की शक्ति प्रदान करें। इसके साथ ही मैं सभी घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना करता हूं। राज्य सरकार की निगरानी में स्थानीय प्रशासन पीड़ितों की हरसंभव मदद में जुटा है।

ट्रंप होंगे अमेरिका के नये राष्ट्रपति, पीएम मोदी ने दी बधाई

एजेंसी

वाशिंगटन : डोनाल्ड ट्रंप बुधवार को अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। यह एक पूर्व राष्ट्रपति के लिए असाधारण वापसी है, जिन्होंने चार साल पहले पराजय स्वीकार करने से इनकार कर दिया था, अमेरिकी संसद परिसर में हिंसक विद्रोह को जन्म दिया था, जिन्हें आपराधिक आरोपों में दोषी ठहराया गया था और जो दो बार हत्या के प्रयासों से बच चुके हैं। विस्कोन्सिन में जीत के साथ ट्रंप ने राष्ट्रपति पद के लिए जरूरी 270 निर्वाचक मंडल वोट हासिल कर लिए। ट्रंप की यह जीत राजनीति के प्रति उनके खुलेपन को प्रमाणित करती है। उन्होंने अपनी डेमोक्रेटिक प्रतिद्वंद्वी कमला हैरिस पर व्यक्तिगत रूप से स्त्री-विरोधी और नस्लवादी शब्दों के साथ हमला किया था। उन्होंने अमेरिका की ऐसी तस्वीर पेश की जिसमें हिंसक प्रवासी बड़ी संख्या में हैं। उन्होंने राष्ट्रपति के रूप में, संघीय सरकार को नया स्वरूप देने और अपने कथित दुश्मनों के खिलाफ प्रतिशोध लेने पर केंद्रित एजेंडा को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया है। बुधवार सुबह अपने समर्थकों से बात करते हुए, ट्रंप ने दावा किया कि उन्होंने 'एक अभूतपूर्व और शक्तिशाली जनादेश' हासिल किया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने डोनाल्ड ट्रंप को बधाई दी

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार डोनाल्ड ट्रंप की 'ऐतिहासिक' जीत सुनिश्चित होने पर बुधवार को उन्हें बधाई दी और वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए साथ मिलकर काम करने का आह्वान किया। मोदी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, मेरे दोस्त डोनाल्ड ट्रंप को उनकी ऐतिहासिक चुनावी जीत पर हार्दिक बधाई। आपके अपने पिछले कार्यकाल की सफलताओं के क्रम में, मैं भारत-अमेरिका व्यापक वैश्विक और रणनीतिक साझेदारी को और मजबूत करने के लिए हमारे सहयोग को नए सिरे से आगे बढ़ाने की आशा करता हूं। उन्होंने कहा, आइए एक साथ मिलकर अपने लोगों की बेहतरी के लिए और वैश्विक शांति, स्थिरता और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए काम करें। मोदी ने इस पोस्ट के साथ ट्रंप से मुलाकात की कुछ पुरानी तस्वीरें भी साझा की। ऐसी एक तस्वीर में वह ट्रंप के साथ गले मिलते तो दूसरे में दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़कर ठहाके लगाते दिख रहे हैं।

खड़गे ने भी दी बधाई

कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में डोनाल्ड ट्रंप की जीत पर बुधवार को उन्हें बधाई दी और कहा कि हम वैश्विक शांति और समृद्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मिलकर काम करने के लिए तत्पर हैं। खड़गे ने 'एक्स' पर पोस्ट किया, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की ओर से हम राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को उनकी चुनावी जीत के लिए बधाई और शुभकामनाएं देते हैं। भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका एक मजबूत व्यापक वैश्विक रणनीतिक साझेदारी साझा करते हैं, जो लंबे समय से साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, साझा हितों और दोनों देशों के लोगों के बीच संबंधों पर आधारित है। उन्होंने कहा, हम वैश्विक शांति और समृद्धि के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ मिलकर काम करने के लिए तत्पर हैं।

रिपब्लिकन पार्टी ने चार वर्षों में पहली बार सीनेट में बहुमत हासिल किया

रिपब्लिकन पार्टी ने मंगलवार देर रात अमेरिकी सीनेट में बहुमत हासिल कर लिया। पार्टी ने अपनी सीटों पर जीत के क्रम को दोहराते हुए डेमोक्रेटिक पार्टी के कब्जे वाली कई सीटों पर जीत हासिल कर चार साल में पहली बार सीनेट में अपना दबदबा बढ़ा लिया। नेब्रास्का में रिपब्लिकन पार्टी की अप्रत्याशित जीत ने उसे शीर्ष पर पहुंचा दिया।

आदर्श आचार संहिता के दायरे में ही हो चुनाव प्रचार : के रवि कुमार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी के. रवि कुमार ने कहा है कि स्वच्छ निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण मतदान कराने में सभी राजनीतिक दलों एवं प्रत्याशियों का सार्थक सहयोग अपेक्षित है। उन्होंने कहा कि मतदाताओं को गुमराह करने के उद्देश्य से राजनैतिक दल और कार्यकर्ता बगैर तथ्यात्मक आधार पर कोई गलत बयानबाजी नहीं करेंगें साथ ही बगैर प्रमाणित आरोपों के तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर अन्य दलों अथवा दूसरे दलों के कार्यकर्ताओं की आलोचना से दूर रहेंगे। इसके अलावे किन्हीं नेताओं अथवा अन्य दलों के कार्यकर्ताओं के निजी जीवन के किसी पहलू, जो सार्वजनिक गतिविधियों से संबंधित नहीं हो, की आलोचना नहीं की जानी है। वह आज सभी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ निर्वाचन सदन में बैठक कर रहे थे।

श्री कुमार ने कहा कि मतदान के दिन वोटर टर्नआउट में गति प्रदान करने हेतु सभी मतदान कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया है साथ ही चैन सिस्टम के तहत तीव्रता से मतदान कराने का भी प्रशिक्षण हर स्तर पर मतदान कर्मियों को दिया गया है। उन्होंने कहा कि सभी मतदान केंद्रों पर पीठासीन पदाधिकारी प्रत्याशियों के पोलिंग एजेंट की उपस्थिति में सुबह 5:30 बजे से मॉक पोल की प्रक्रिया शुरू कर देंगें। अगर किसी कारण से प्रत्याशियों के पोलिंग एजेंट समय पर उपस्थित नहीं हो सके तो उनका 15 मिनट तक इंतजार करने के उपरांत पीठासीन पदाधिकारी द्वारा मॉक पोल की प्रक्रिया प्रारंभ कर दी जाएगी। उन्होंने कहा कि मतदान केंद्र के अन्दर मतदान कर्मियों अथवा पोलिंग एजेंट को मोबाईल का इस्तेमाल नहीं करना है।

एक नजर

खरना के साथ 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू, आज पहला अर्घ्य

बड़कागांव : बड़कागांव प्रखंड के लगभग 7000 घरों में सूर्य उपासना के महापर्व के दूसरे दिन व्रतियो ने छठ महापर्व को लेकर खरना किया। व्रती दिन भर व्रत रखी। भगवान सूर्य देव की आराधना के पश्चात शाम में प्रसाद स्वरूप दूध और गुड़ की खीर ग्रहण किया। खरना के पूर्व स्वच्छता का विशेष ख्याल रखा गया, लोगों ने अपने घर के द्वार पर गोबर के पुताई किया ताकि स्वच्छता बना रहे। बड़कागांव प्रखंड के तकरीबन 100 से अधिक छठ घाटों की साफ सफाई स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं प्रबुद्ध जनों के द्वारा कर दी गई है। छठ महापर्व का खरना के बाद 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू हो गया।आज गुरुवार शाम को अस्ताचाल व कल शुक्रवार को उगते सूर्य को अर्घ्य अर्पण किया जाएगा। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार यह छठ महापर्व मूल रूप से वंश की बढ़ोतरी एवं परिवार की सुख व स्मृद्धि के लिए किया जाता है। आज बड़कागांव सूर्य मंदिर छठ घाट, बड़कागांव पीपल नदी छठ घाट ,बादम छठ घाट, हरली छठ घाट, विश्रामपुर छठ घाट, कांडतरी छठ घाट, अम्बाजीत छठ घाट, महुगाई कला छठ घाट, नापोखुर्द छठ घाट ,तलसवार छठ घाट, सीकरी छठ घाट, चेपाकला छठ घाट, बरवाडीह छठ घाट, के अलावा प्रखंड के 100 से अधिक छठ घाट में छठ महापर्व की पूजा की जा रही है।

बटेश्वर मेहता ने किया तूफानी दौरा

हजारीबाग : बरकट्ठा विधानसभा से निर्दलीय प्रत्याशी बटेश्वर प्रसाद मेहता ने बुधवार को तूफानी दौरा किया। बटेश्वर प्रसाद मेहता अपने सैकड़ों समर्थकों संग टाटीझरिया प्रखंड के झरपों बाजार पहुंचे और टेंपो छाप पर वोट देने का आग्रह किया। कहा कि इस बार जनता ने मूड बना लिया है। 13 तारीख को टेम्पो छाप पर वोट करेंगे। बरकट्ठा विधानसभा की जनता वर्षों से दो लोगों का दंश झेल रही है। मैं एक सेवक के रूप में उनकी समस्याओं का समाधान करने आया हूं। हर जगह जनता का भरपूर समर्थन मिल रहा है। मुझे यहां के जनता का भरपूर आशीर्वाद भी मिल रहा है। बताया की मंगलवार को बरकट्ठा, जयनगर और चलकुसा में जो लोगों का प्यार और अपनापन मिला उससे अभिभूत हूं। इस दौरान जीप चेयरमैन उमेश प्रसाद मेहता, प्रदीप मेहता, भागवत मेहता समेत बड़ी संख्या में समर्थक उपस्थित थे।

हजारीबाग के खत्री समाज की प्रशंसनीय पहल

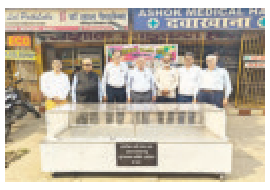

हजारीबाग : जीवन के बाद मृत्यु ही सत्य है इसी मूल मंत्र को समझते हुए खत्री समाज ने दिवंगत के अंतिम दर्शन हेतु शव को सुरक्षित रखने के लिए एक फ्रिजर बॉक्स को मुर्दा कल्याण समिति के अध्यक्ष मो.खालीद को दिया। जिसे भी इस बॉक्स को लेना हो वो इसका लाभ नि:शुल्क उठा सकते है इसका मुख्य उद्देश्य समाज के हर तबके के लोग इसका लाभ उठा सके इस मौके पर खत्री समाज के अध्यक्ष के सी मल्होत्रा,राकेश चोपड़ा,अजय कुमार मल्होत्रा, विकास खत्री, राजेश कपूर, अमित भंडारी, हरीश सेठी, अशोक भंडारी, मो खालीद सहित अन्य गणमान्य लोग उपस्थित थे।

जनसंपर्क के दौरान अगवा किए गए मांडू प्रत्याशी संजय मेहता, हत्या की मिली धमकी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : मांडू विधानसभा क्षेत्र से जेबीकेएसएस प्रत्याशी संजय मेहता को जनसम्पर्क के दौरान कुछ लोगों ने अगवा कर लिया था। घटना मंगलवार की रात की है जब वे मांडू विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत विष्णुगढ़ थाना क्षेत्र के मडमो पंचायत में खरकट्टो गाँव में थे। हालांकि वो अपहरकताओं के चुंगल से बच कर निकालने में सफल रहे। उन्होंने इसकी लिखित शिकायत विष्णुगढ़ थाना में दर्ज कराया है। इसके साथ ही उन्होंने जिला निर्वाचन अधिकारी, निवार्ची पदाधिकारी मांडू विधानसभा क्षेत्र, पुलिस अधीक्षक हजारीबाग, एवं अनुमंडलाधिकारी अधिकारी सदर हजारीबाग को पत्र लिखकर सुरक्षा हेतु गुहार लगाया है। इस मामले में जेबीकेएसएस के केन्द्रीय अध्यक्ष संजय मेहता ने कहा कि जब से उन्होंने मांडू विधानसभा क्षेत्र में चुनावी अभियान शुरू किया है तब से उन्हें जगह जगह रोक कर परेशान किया जा रहा था। उन्हें डराया धमकाया जा रहा था। उनके प्रचार वाहनों को रोक दिया जा रहा था। उनके साथियों के साथ भी बदसलूकी की गई थी। इसकी शिकायत उन्होंने विभिन्न पदाधिकारियों से भी किया था और सुरक्षा की मांग किया था। इसी दरमियान मंगलवार की रात एक बार फिर 15 से 20 संख्या में अज्ञात लोगों ने उन्हें घेर लिया। उनके साथियों को घेर कर रखा गया और उन्हें बाइक पर बिठाकर अगवा करने की नियत से वाहन से ले गए। कहा कि बीच जंगल में वे अंधेरे का फायदा उठाकर बाइक से वे भागने में सफल रहे। उन्होंने कहा कि विरोधी उन्हें लगातार चुनाव प्रचार करने से रोकने की कोशिश कर रहे हैं। पहले भी धमकियाँ दी गईं थीं परंतु उन्होंने मांडू विधानसभा क्षेत्र में अपना चुनावी अभियान और जनसम्पर्क जारी रखा। उन्होंने कहा कि किसी भी शक्ति के सामने वे झुकेंगे नहीं और अपना चुनावी अभियान जारी रखेंगे।

सपा प्रत्याशी उमाशंकर अकेला ने चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरही : बरही विधानसभा क्षेत्र से समाजवादी पार्टी के प्रत्याशी सह वर्तमान विधायक उमाशंकर अकेला ने मंगलवार को जनसंपर्क अभियान के तहत क्षेत्र में व्यापक प्रचार-प्रसार किया। इस दौरान उन्होंने डूमरडीह, खोड़ाहार और कदवा गांवों का दौरा कर जनता से मुलाकात की और आगामी चुनाव में उन्हें समर्थन देने की अपील की। अकेला ने इस अवसर पर जनता से क्रम संख्या 04 पर साइकिल के निशान पर बटन दबाकर उन्हें विजय दिलाने की अपील की। उन्होंने क्षेत्र की जनता को सपा की नीतियों और अपने द्वारा किए गए कार्यों के बारे में अवगत कराया और भरोसा दिलाया कि उनकी जीत से क्षेत्र में विकास कार्यों में तेजी आएगी। इस अभियान में प्रखंड अध्यक्ष मो वारिस अंसारी, छद्दु गोप, कुणाल कतरियार, गाजो यादव, रघु यादव, शरीफुल हक, महेश यादव, अर्जुन यादव, रामानंद यादव, अशोक ठाकुर, वीणा उरांव, संतोष यादव, मीणा देवी, दिनेश कुमार, मोहम्मद इमरान, मोहम्मद कुर्बान, मोहम्मद सेराज, मोहम्मद मनौवर, मोहम्मद साजिद, सैफी खान, बुलाकी यादव, सुशील केशरी, पप्पू ठाकुर, मिथलेश उपाध्याय, मोहम्मद कलीम सहित कई समर्थक और पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

झारखंड को बचाने के लिए भाजपा को वोट दें : शेफाली गुप्ता

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

हजारीबाग : भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता सदर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद के पक्ष में लगातार जनसंपर्क कर अपना शतप्रतिशत दमखम लगा रही है। ऐतिहासिक एवं प्रचंड जीत सुनिश्चित के साथ राज्य में भाजपा की सरकार बनाने हेतु कटिबद्ध है। बुधवार को भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने हजारीबाग लोकसभा सांसद मनीष जायसवाल एवं भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद के साथ मिलकर सदर पश्चिमी क्षेत्र में आशीर्वाद यात्रा के तहत जोरदार जनसंपर्क किया। क्षेत्र के देवतुल्य जनता- जनार्दन से मिलकर भाजपा के पक्ष मतदान करने का अपील किया। साथ ही ठगबंधन की सरकार को उखाड़ फेंकने का आव्हान किया। क्षेत्र के देवतुल्य जनता- जनार्दन ने गर्मजोशी के साथ फुलमाला के साथ जोरदार स्वागत व अभिनंदन किया। इस दौरान सदर पश्चिमी के ओरिया, बिरबिर, बेलामुंडवार, सखिया, बैहरी एवं चानो में में आशिर्वाद यात्रा के तहत जनसंपर्क चलाया गया। भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने झारखंड के 25 वर्ष के साथ भाजपा की 25 संकल्प का विस्तार पूर्वक चर्चा की। पीछले भाजपा सरकार में हुई राज्य का विकास एवं उत्थान पर भी लोगों को अवगत कराया। नगरनिगम क्षेत्रान्तर्गत कोर्रा स्थित हेठ टोला के मतदाताओं के बीच भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने चुनाव प्रभारी सह राज्य सभा सांसद दर्शना सिंह एवं महिला मोर्चा के बहनों के साथ मिलकर जनसंपर्क की तथा भाजपा के पक्ष में मतदान करने को लेकर जागरूक किया। 13 नवंबर दिन बुधवार को क्रम संख्या 02 कमल निशान पर वोट देकर भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद को प्रचंड एवं ऐतिहासिक मतो से विजय बनाने का लोगों से आग्रह किया। मौके पर भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता ने कहा कि झारखंड को बचाने के लिए भाजपा को वोट दे तथा राज्य में सुशासन की भाजपा की सरकार बनाएं। झारखंड की जनता ठगबंधन के सरकार से त्रस्त है। जिसका मुहतोड़ जवाब झारखंड की जनता अबर कमल खिलाकर देगी। उन्होंने कहा कि भाजपा की सरकार बनते ही चहूंओर विकास की गाड़ी दौंड पडेगी तथा हर वर्ग को सम्मान एवं हर वर्ग खुशहाल होगा।

पूर्व मंत्री यशवंत सिन्हा ने अटल विचार मंच कार्यालय का किया उद्घाटन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बिष्णुगढ़ : हजारीबाग जिले के विष्णुगढ़ प्रखंड अंतर्गत मांडू विधानसभा के अटल विचार मंच के निर्दलीय प्रत्याशी विपिन सिन्हा ने चेडरा अवस्थित करंज मोड में चुनाव को संचालित करने हेतु कार्यालय खोला , जिसका उद्घाटन पूर्व वित्त मंत्री , विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा ने किया ।कार्यालय उद्घाटन के तदोपरांत सिन्हा ने जनता और कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा, विष्णुगढ़ की जनता हमेशा मुझे अपना स्नेह दी है । मैंने इस क्षेत्र को विकसित किया है और जब तक मैं जीवित हूं, विष्णुगढ़ की धरती को मैं नहीं छोड़ूंगा, आगे सिन्हा ने कहा जब प्रखंड के गांव में पक्की सड़के नहीं होती थी। तो मैंने प्रधानमंत्री सड़क योजना के तहत हर जगह सड़के बनवाई प्रखंड में बिजली की किल्लत को देखते हुए मैंने दामोदर घाटी निगम से बिजली मुहैया करवाया। जिसका उपयोग सभी विष्णुगढ़ वासी कर रहे हैं , जिससे हमें खुशी मिलती है । सिन्हा ने भाजपा पर निशाना साधते हुए कहा अब भाजपा 1980 की भाजपा नहीं रही, अब भाजपा सांप्रदायिक जहर घोलने का काम करती है। उन्होंने कहा चुनाव आ गए तो भाजपा को झारखंड की धरती में घुसपैठिए नजर आने लगे, केंद्र में भाजपा की 10 वर्षों से सरकार है और घुसपैठियों को रोकना भी केंद्र सरकार का कर्तव्य है। उस समय इस मुद्दे को क्यों नहीं उठाया गया। चुनाव के समय ही ऐसे मुद्दे भाजपा के द्वारा उठाए जाते हैं और सांप्रदायिक जहर घोलकर वोट बैंक की सिर्फ राजनीति की जाती हैं। हिंदू मुस्लिम की राजनीति की जाती है। लेकिन यही बीजेपी की बागडोर जब अटल बिहारी बाजपेयी के हाथ में थी तो ऐसी कोई भावनाएं ऐसा कोई सांप्रदायिक माहौल उत्पन्न नहीं होता था।

अवैध अंग्रेजी शराब से भरा ट्रक पकड़ा गया, चालक-परिचालक गिरफ्तार

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

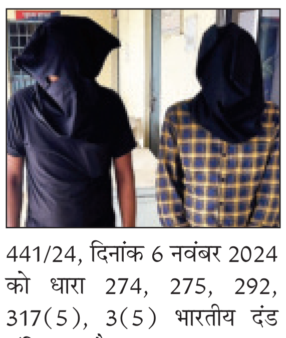

बरही : मंगलवार की रात करीब 9:30 बजे गुप्त सूचना के आधार पर बरही पुलिस ने हजारीबाग रोड स्थित युवराज होटल के पास अवैध अंग्रेजी शराब से लदा एक ट्रक संख्या जेएच 02 पी 5433 पकड़ा। ट्रक की जांच में केबिन के भीतर बने बॉक्स में बड़ी मात्रा में अवैध शराब पाई गई। पुलिस द्वारा जब्ती और तलाशी के दौरान ट्रक से 16 बैग में कुल 768 बोतलें (375 मिली) ब्लेंडर प्राइड और 25 पेटियां इम्पेरियल ब्लू, जिनमें 750 मिली की 12 बोतलें प्रति पेटी, कुल 300 बोतलें जब्त की गईं। इस शराब और ट्रक को थाने के मालखाना और परिसर में सुरक्षा के तहत रखा गया है। इस मामले में बरही थाना में कांड संख्या 441/24, दिनांक 6 नवंबर 2024 को धारा 274, 275, 292, 317(5), 3(5) भारतीय दंड संहिता और 47(ए) उत्पाद अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया गया है। ट्रक चालक बिरेंद्र मिश्रा (35 वर्ष, निवासी खिनहर, जिला मधुबनी) और सहायक चालक पप्पु कुमार सिंह (45 वर्ष, निवासी फुलेलपुर, जिला पटना) को विधिवत गिरफ्तार कर आज, 6 नवंबर 2024 को न्यायालय में पेश किया गया।

सांसद मनीष संग प्रदीप ने किया प्रचार, सदर प्रखंड के 23 गांवों में चलाया जनसंपर्क अभियान

सदर विस से बीजेपी को हैट्रिक जीत दिलाएं : मनीष जायसवाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

> ▸ सेवा और सम्मान के साथ नेता नहीं बेटा बनकर सदा रहूंगा हाजिर : प्रदीप प्रसाद

हजारीबाग : हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल के साथ सदर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी मनीष जायसवाल ने बुधवार को सघन चुनाव प्रचार किया। सदर प्रखंड के 23 गांवों में ताबड़तोड़ जनसंपर्क कर दोनों नेताओं ने बीजेपी के पक्ष में आगामी 13 नवंबर को कमल निशान पर मतदान करने का अपील किया। सांसद मनीष जायसवाल और बीजेपी प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद ने अपने चुनावी दौरे की शुरूआत सुबह ग्राम पंचायत ओरिया से किया। ग्राम ओरिया के बाद बिरबीर, बेलामुण्डवार, सखिया, बहेरी, गुडवा , कानी मुंडवार, सितागढ़ा, जुलजुल चौक और दुग्धा मोड़, बंगलवाटांड़, गुरहेत, धवैया, बहोरनपुर, चंदवार, रेवार, चोरहेता, मरहेता, पौता, तुरांव, मोरांगी, हत्यारी और तुम्बा पहुंचकर लोगों से भाजपा शासित केंद्र सरकार और विभिन्न राज्यों की भाजपा सरकार के जनकल्याणकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी और झारखंड के वर्तमान झामुमो- कांग्रेस और राजद की भ्रष्ट गठबंधन सरकार की नाकामियों को रखते हुए झारखंड की माटी, बेटी और रोटी की सुरक्षा के लिए बदलाव का संकल्प लेने का अपील किया। इस दौरान सांसद मनीष जायसवाल और भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद का क्षेत्र के लोगों ने बाइक जत्थे के साथ फूल माला पहनाकर गाजा- बाजा के साथ अभूतपूर्व स्वागत किया। हजारीबाग सांसद मनीष जायसवाल ने कहा कि सदर विधानसभा क्षेत्र से बीजेपी को हैट्रिक जीत दिलाई और क्षेत्र के विकास को गति देने के साथ सच्चे और अच्छे जनप्रतिनिधि का चयन कर अपने भविष्य को सुरक्षित करें। सदर विधानसभा क्षेत्र के भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद ने लोगों से अपने पक्ष में आशीर्वाद मांगा और कहा की सेवा और सम्मान के साथ नेता नहीं बेटा और भाई बनकर सदा आपके सेवा में हाजिर रहूंगा, बस मौका जरूर दें । मौके पर विशेष रूप से विशेषरूप से पूर्व विधायक प्रतिनिधि विजय कुमार, सदर पश्चिमी भाजपा मंडल अध्यक्ष रणधीर पाण्डेय, भाजपा नेत्री शेफाली गुप्ता, समाजसेवी कमल गोप, शिवपाल यादव, अनेश्वर प्रसाद, भाजयुमो जिला अध्यक्ष राजकरण पाण्डेय, संतोष गुप्ता, विनोद कुमार राणा, चौधरी प्रसाद साहू, चंद्र किशोर पाण्डेय, सुधीर तिवारी, लालेंद्र साहू, विनोद कुमार राम, रंजीत राम, अनूप तिवारी, बैजू राणा, सोनी देवी, धनेश्वर प्रसाद, नरेंद्र पप्पू, त्रिभुवन प्रसाद, दामोदर प्रसाद, सिकंदर प्रसाद, भारत ठाकुर, प्रकाश राणा, भेखलाल राणा, अनमोल साव, सिलीनी, सांसद मनीष जायसवाल के मीडिया प्रतिनिधि रंजन चौधरी सहित अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहें ।

संक्षिप्त खबरें

निर्दलीय प्रत्याशी हर्ष अजमेरा की धर्मपत्नी प्रीति जैन ने किया जनसंपर्क

हजारीबाग : सदर विधानसभा से निर्दलीय प्रत्याशी हर्ष अजमेरा की धर्मपत्नी प्रीति जैन ने बुधवार को नगर निगम क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर जनसंपर्क अभियान चलाया। इस अभियान में उनके साथ महिला समाज की कई महिलाएं भी शामिल रहीं, जिन्होंने क्षेत्र के नागरिकों के सुख-दुख को सुनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। छड़ी छाप को समर्थन देने की अपील करते हुए प्रीति जैन ने लोगों से समर्थन और आशीर्वाद मांगा। इस जनसंपर्क के दौरान प्रीति जैन ने नागरिकों के घर-घर जाकर उनसे संवाद स्थापित किया और उनकी समस्याओं को विस्तार से सुना। क्षेत्रवासियों ने अपने जीवन में आ रही विभिन्न समस्याओं, जैसे कि जलापूर्ति, सड़क मरम्मत, साफ-सफाई, बिजली, और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी आदि पर अपनी बात रखी। प्रीति जैन ने लोगों को आश्वस्त किया कि हर्ष अजमेरा के नेतृत्व में इन समस्याओं के समाधान के लिए पूरी तरह से समर्पित होकर काम किया जाएगा। इस अवसर पर प्रीति जैन ने हर्ष अजमेरा की जनसेवा और निस्वार्थ भाव से क्षेत्र के विकास के लिए प्रतिबद्धता पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हर्ष अजमेरा हमेशा से ही जनता की आवाज को प्रमुखता देने और उनके हित में कार्य करने के लिए जाने जाते हैं। क्षेत्र में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए वे एक मजबूत विकल्प के रूप में सामने आए हैं। इस जनसंपर्क अभियान में कई महिलाएं शामिल हुईं और उन्होंने प्रीति जैन का समर्थन करते हुए क्षेत्र के विकास और सुरक्षा में योगदान देने का संकल्प लिया। महिलाओं ने प्रीति जैन के साथ मिलकर छड़ी छाप हर्ष अजमेरा को जिताने का संकल्प लिया, ताकि एक बेहतर और सुरक्षित भविष्य का निर्माण हो सके।

चौपारण में स्टॉल लगाकर खरीद दाम पर छठ सामाग्री कराया उपलब्ध

चौपारण : प्रखंड में छठ महापर्व पर चौपारण दुर्गा मंडप प्रांगण में व्रतियों को उचित मूल्य पर छठ सामग्री का वितरण किया जा रहा है। छठ सामग्री विक्रेताओं ने तिलैया मंडी से खरीदारी कर दाम के दाम बिक्री किया जा रहा है। इस कार्य में अहम भूमिका सुधीर केशरी, संगम केशरी, पिंटू केशरी, कुंदन केशरी, अशोक केशरी सहित केशरी समाज के समाजसेवियों ने छठ महापर्व के व्रतियों के लिए आर्थिक और समय बचत का बीड़ा उठाये हैं।

सड़क जाम से राहगीरों व छठ की खरीददारी करने वाले लोगों को हुई परेशानी

बड़कागांव : हजारीबाग जिले के बड़कागांव में सड़क जाम आम आए दिन होते रहता है वहीं आज छठ पूजा के अवसर पर पुजा का समान खरीदने वाले छठव्रतियों व इस त्योहार में आवागमन करने वाले को सड़क जाम होने से काफी परेशानी का सामना करना पड़ा घंटो जाम में फंसे रहे और बेबस दिखे इसे लेकर प्रखंड मुखिया संघ के अध्यक्ष रंजीत कुमार से सड़क जाम को लेकर पुछे जाने पर कहा कि अभी आपसे सूचना मिली है हम इंस्पेक्टर व एसडीपीओ को सूचना देकर जाम छुड़वाने का निवेदन करेंगे जिसमें इस छठ महापर्व अपने गंतव्य तक पहुंचने वाले लोगों व खरीदारी में लगे छठव्रतियों को कठिनाई महसूस न हो और कुछ देर बाद पुलिस प्रशासन द्वारा सड़क जाम से मुक्त कराया गया जिससे राहगीर चैंन की सांस लिए और अपने गंतव्य स्थान की ओर आगे बढ़े।

अमित सिन्हा ने दारू प्रखंड में घर-घर जाकर किया प्रदीप प्रसाद के पक्ष में की मतदान की अपील

हजारीबाग : दारू प्रखंड में आगामी चुनाव को लेकर भाजपा नेता डॉ. अमित सिन्हा ने घर-घर और दुकानों में जाकर भाजपा प्रत्याशी प्रदीप प्रसाद के पक्ष में मतदान करने की अपील की। इस दौरान डॉ. सिन्हा ने लोगों से पार्टी के सिद्धांतों और विकास कार्यों को ध्यान में रखते हुए प्रदीप प्रसाद को समर्थन देने की अपील की। डॉ. अमित सिन्हा ने कहा कि भाजपा सरकार ने हमेशा जनता के हित में काम किया है और आगामी चुनाव में प्रदीप प्रसाद की जीत से क्षेत्र में और भी विकास होगा। उन्होंने मतदाताओं से अपील की कि वे मतदान प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लें और अपने वोट का सही उपयोग करें।भाजपा नेता ने कहा कि प्रदीप प्रसाद के नेतृत्व में क्षेत्र में नई ऊर्जा और समृद्धि आएगी, और यह चुनाव केवल भाजपा के लिए नहीं, बल्कि क्षेत्र के उज्जवल भविष्य के लिए महत्वपूर्ण है।

वैकल्पिक चिकित्सालय में प्रमाण पत्र वितरण समारोह का हुआ आयोजन

हजारीबाग : कुश-क्रांतिदर्शी योग सह वैकल्पिक चिकित्सालय में प्रमाण पत्र वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में कुश-क्रांतिदर्शी के संस्थापक आचार्य मनोज कुमार कुशवाहा के द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किए हुए प्रशिक्षुओं सह चिकित्सकों को प्रशिक्षण एवं अनुभव प्रमाण पत्र आचार्य मनोज कुशवाहा एवं विनोबा भावे विश्वविद्यालय के सहायक व्याख्याता रंजीत कुमार के द्वारा दिया गया ।प्रमाण पत्र पाने वालों में महादीन दयाल भास्कर, क्रांति कुमारी, रोहित रंजन, पिंकी बेसरा, भारती कुमारी, अनामिका सिन्हा, अश्विनी कुमार, मुकुंद हेंब्रोम, सुखदेव हेंब्रोम, बासमती मुर्मू, संदीप कुशवाहा, मनमोहित कुमार शामिल थे। इस अवसर पर आचार्य मनोज कुमार कुशवाहा ने कहा कि मुझे इस बात की हार्दिक प्रसन्नता है की वैकल्पिक चिकित्सा के क्षेत्र में मैं अब अकेला नहीं रहा, मेरे साथ अब चिकित्सकों की पूरी टीम है, जो दवा मुक्त भारत बनाने के मेरे अभियान में मेरे साथ है। आयोजन का समापन ईश्वरीय चिकित्सा पद्धति अपनाएं और स्वत: ठीक हो जाएं के नारे के साथ किया गया।

एक नजर

हथियार सप्लायर गिरफ्तार

रांची : रांची के कोतवाली थाना पुलिस ने एक हथियार सप्लायर को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार हथियार सप्लायर का नाम मो राजन है। वह हिंदपीढ़ी मस्जिद रोड के समीप का रहने वाला है। इसके पास से दो देशी पिस्टल, तीन खाली मैगजीन, दो गोली, एक मोबाइल फोन और एक स्कूटी बरामद किया गया है। सिटी एसपी राजकुमार मेहता ने बुधवार को संवाददाता सम्मेलन में बताया कि गुप्त सूचना मिली कि कुछ अपराधकर्मी अवैध हथियार लेकर कोतवाली थाना क्षेत्र के पुरानी रांची अखाड़ा चौक के पास है। किसी आपराधिक घटना को अंजाम देने के फिराक में हैं। इसके बाद कोतवाली डीएसपी प्रकाश सोय के साथ एक टीम का गठन किया गया। गुप्त सूचना के आधार पर मुस्लिम वेशभूषा में भेष बदलकर कोतवाली डीएसपी पिस्टल का खरीदारी करने पहुंचे। इस दौरान मो. राजन को गिरफ्तार किया। पूछताछ में हथियार सप्लायर मो राजन ने इस धंधे में शामिल कई लोगों के नाम भी बताये है। इसके सहयोगियों में एक निर्दलीय प्रत्याशी का भी नाम सामने आया है। फिलहाल पुलिस उसकी जांच पड़ताल कर रही है। पूछताछ में मो राजन ने बताया कि वह एक पिस्टल को 45 से 60 हजार में बेचता था।

चम्पाई सोरेन ने की मंडल मुर्मू को सुरक्षा देने की मांग

रांची : सिदो-कान्हू के वंशज मंडल मुर्मू का सिर काटकर लाने वाले को 50 लाख रुपये देकर सम्मानित करने को लेकर सोशल मीडिया में वायरल मैसेज को लेकर पूर्व मुख्यमंत्री चम्पाई सोरेन गंभीर मामला बताया है। चम्पाई सोरेन ने बुधवार को इस वैट का स्क्रीन शॉट सोशल मीडिया साइट 'एक्स' पर शेयर करते हुए इसे राजनीति का निम्नतम स्तर करार दिया है। उन्होंने पोस्ट में लिखा है कि ऐसी धमकियों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। झारखंड पुलिस और साहेबगंज पुलिस को टैग करते हुए लिखा है कि ऐसे लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। चम्पाई सोरेन ने झारखंड के मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी और साहेबगंज के जिला निर्वाचन पदाधिकारी को भी टैग करते हुए कहा है कि मंडल मुर्मू के परिवार की सुरक्षा का इंतजाम करें। मंडल मुर्मू पिछले दिनों भाजपा में शामिल हुए थे।

लोजपा सांसद ने किया संकल्प पत्र का विमोचन

रांची : लोक जनशक्ति पार्टी (रामविलास) ने झारखंड विधानसभा चुनाव को लेकर रांची के करमटोली स्थित प्रेस क्लब में संकल्प पत्र का विमोचन किया। पार्टी के खगड़िया सांसद, झारखंड चुनाव के सह प्रभारी राजेश वर्मा, प्रदेश अध्यक्ष बिरेन्द्र प्रधान, प्रदेश उपाध्यक्ष आदित्य विजय प्रधान, प्रदेश सचिव शिवजी कुमार, आईटी सेल के प्रदेश अध्यक्ष अभिषेक राय, लेबर सेल के प्रदेश अध्यक्ष उत्तम राय, कार्यालय प्रभारी राजेश रंजन और रतन प्रसाद उपस्थित थे। संकल्प पत्र के विमोचन के मौके पर सांसद राजेश वर्मा ने कहा कि यह झारखंड के विकास का पत्र है। इस पत्र में गरीब, दलित, महिला, आदिवासी, युवाओं के मुद्दे को समाहित किया गया है। सांसद राजेश वर्मा ने कहा कि प्रदेश के बहुमुखी विकास को लेकर लोजपा कृत संकल्पित है, इसी को लेकर राज्य में पहली बार हमारी पार्टी ने मेट्रो सेवा शुरू करने की बात कही है। रांची, टाटा और धनबाद को मेट्रो सेवा से जुड़ जाने पर विकास के नए रास्ते खुलेंगे। संकल्प पत्र में झारखंड में स्थापित होने वाले उद्योगों में युवाओं के रोजगार और हरिजन आदिवासी युवाओं को नौकरी के लिए नि:शुल्क आवेदन के साथ नि:शुल्क परीक्षा स्थल तक जाने की व्यवस्था की बात कही गई है।

भाजपा ने 2019 के झारखंड मुक्ति मोर्चा के मेनिफेस्टो का कराया रियलिटी चेक

देश को मोदी की गारंटी पर विश्वास है, न कि सत्ताधारी गठबंधन के झूठे वादों पर : प्रतुल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता प्रतुल शाहदेव ने झारखंड मुक्ति मोर्चा, कांग्रेस, राष्ट्रीय जनता दल और माले के संयुक्त घोषणा पत्र पर हमला किया। प्रतुल ने कहा कि देश की जनता को मोदी की गारंटी पर विश्वास है, ना कि सत्ताधारी गठबंधन के एक वोट के बदले सात झूठ के वायदों पर।

प्रतुल ने झारखंड मुक्ति मोर्चा के 2019 के मेनिफेस्टो निश्चय पत्र का जिक्र करते हुए कहा कि उन्होंने कुल 114 वायदे जनता से किए थे लेकिन पांच वर्षों में इस सरकार ने एक वादे को पूरा नहीं किया। पांच वर्षों तक ठगी गई जनता इस बार झामुमो के नेतृत्व वाली सरकार को बाहर का रास्ता दिखाएगी। उन्हें इस ठगबंधन के झूठे वादों पर कतई विश्वास नहीं। प्रतुल बुधवार को प्रदेश मुख्यालय में प्रेस वार्ता को संबोधित कर रहे थे।

प्रतुल ने कहा कि झारखंड 2019 में सरकार ने अपनी निश्चय पत्र में कहा था कि सरकार गठन के 2 साल के भीतर राज्य के खाली पड़े सभी सरकारी पदों पर नियुक्ति हो जाएगी। स्थिति यह है कि कि सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2,87,000 पद अभी भी खाली है। इन्होंने हर प्रखंड में नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना की घोषणा की थी। ग्रामीण क्षेत्र के अभ्यर्थियों को नौकरी के लिए 10 प्रतिशत अतिरिक्त अंक देकर मेरिट सूची बनाने की बात, हर प्रखंड में नशा मुक्ति केंद्र की स्थापना की बात, पांच वर्षों में 25 लाख रोजगार की बात, बेरोजगारों को ?5000 और ?7000 का प्रति महीना भत्ता देने का वादा किया था। इनके सारे वादे झूठे साबित हुए।

प्रतुल ने कहा कि 2019 के निश्चय पत्र के स्थानीय लोगों के अधिकार वाले अध्याय में भूमि अधिकार कानून बनाने की बात, रोजगार अधिकार कानून की बात, हर शहीद परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरियों में सीधी नियुक्ति के लिए कानून बनाने की बात, झारखंड आंदोलन के शहीदों के परिजनों के लिए पेंशन योजना आदि बनाने के लिए बड़ी घोषणा की थी। किसी एक को भी धरातल पर नहीं उतारा गया।

प्रतुल ने कहा कि निश्चय पत्र के महिलाओं के अधिकार अध्याय में झारखंड मुक्ति मोर्चा ने सभी आंगनबाड़ी सेविका, सहायिका, रसोईया को नियमित करने की बात कही थी। प्राथमिक से लेकर पीएचडी तक सभी प्रकार की शिक्षा बेटियों के लिए निशुल्क, हर अनुमंडल में महिला महाविद्यालय, हर गरीब परिवार की महिलाओं को ?2000 प्रतिमाह चूल्हा खर्च, तीन लाख की आबादी पर एक महिला थाना की स्थापना की बात थी। सारी घोषणाएं हवा-हवाई हो गई।

प्रतुल ने कहा कि निश्चय पत्र के आदिवासी, दलित संरक्षण अध्याय में इन्होंने पेसा कानून को सख्ती से लागू करने का वादा किया था। आज तक नियमावली भी लागू नहीं हो पाया। आदिवासी पारंपरिक स्वशासन व्यवस्था को लागू करने की घोषणा, खनन नहीं पर्यटन की विकास नीति, वन पट्टा देने की प्रक्रिया को सरल बनाने की घोषणा, ट्राइबल सब प्लान को राशि को दूसरे योजना में डाइवर्ट नहीं करने का संकल्प लिया था लेकिन यहां भी इन्होंने प्रदेश के आदिवासी, मूलवासियों के साथ साथ छल किया।

जेएसएससी सीजीएल की सीट के लिए 25-25 लाख रुपये तक की बोली लगी : बाबूलाल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी ने हेमंत सरकार पर जेएसएससी सीजीएल के सीट की बोली लगाने का आरोप लगाया है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट साझा कर कहा कि, "काम के दाम मांगते, ऐसी तो अभिलाषा है, झूठ और अन्याय की, हेमंत इकलौती परिभाषा है। भ्रष्टाचार के सारे रिकॉर्ड तोड़ने के बाद हेमंत सरकार ने युवाओं के सुनहरे भविष्य को बर्बाद करने का निर्णय लिया है, इसी का नतीजा है कि जेएसएससी सीजीएल में नौकरी देने के नाम पर सीट बेची जा रही है। छात्रों के भविष्य और सपनों की कीमत लगाकर हेमंत सोरेन एवं उनके सहयोगी अपना पेट भरने में मस्त है, एक एक सीट के लिए 25 - 25 लाख रुपए तक की बोली लग रही है, जिसके कारण छात्रों का हाल दिन ब दिन बदतर होता जा रहा है। हाल यह है कि हेमंत सरकार में ऐसी रीति बन गई है कि पढ़ने वाले पढ़ते रहे, पैसे वाले बढ़ते रहें।

ईडी ने मनी लाउंड्रिंग मामले में आरोपियों के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग की

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने झारखंड एचसी में मनी लाउंड्रिंग मामले को लेकर आरोपी अफसरों और नेताओं के खिलाफ सीबीआई जांच की मांग की याचिका दायर की है। इस याचिका में कहा गया है कि ईडी ने मनी लाउंड्रिंग जांच के दौरान मिले तथ्यों और सबूतों को पीएमएलए की धारा-66(2) के तहत राज्य सरकार के साथ साझा किया था। लेकिन राज्य सरकार की ओर से आरोपी अफसरों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज नहीं करायी गई। इसके बदले राज्य सरकार ने ईडी के अफसरों के विरुद्ध ही प्राथमिकी दर्ज करवाई। इसमें राज्य के विधि पदाधिकारी की भूमिका अहम रही। इस कारण ईडी ने राज्य सरकार के साथ जो सूचनाएं साझा की थीं, उसके आलोक में प्राथमिकी दर्ज कर जांच की जिम्मेदारी सीबीआई को सौंपी जाये।

ईडी द्वारा कोर्ट में दायर की गई याचिका में कहा गया है कि विजय मदन लाल चौधरी के मामले में सुप्रीम कोर्ट के दिये गये फैसले के आलोक में ईडी ने जो सूचनाएं साझा की हैं, उसके आधार पर संबंधित लोगों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कर जांच करना आवश्यक है। लेकिन राज्य सरकार ने इस मामले में प्राथमिकी दर्ज नहीं की। बता दें कि याचिका में बताया गया है कि ईडी ने पीएमएलए की धारा-66(2) के तहत मनरेगा घोटाला, अवैध खनन, ग्रामीण विकास विभाग में भ्रष्टाचार, जमीन घोटाला, टेंडर घोटाला, लघु उद्योगों को कोल लिंकेज आवंटन में भ्रष्टाचार, बालू और शराब के अवैध कारोबार से संबंधित सूचनाएं राज्य सरकार के साथ साझा की थीं। लेकिन राज्य सरकार ने इस सूचना के आधार पर प्राथमिकी दर्ज कर जांच नहीं करायी। वहीं, इस दौरान ईडी ने राज्य सरकार के साथ राजस्व से जुड़े अधिकारी के घर से मिले दस्तावेज और उसमें की गयी छेड़छाड़ से संबंधित सूचनाएं भी साझा की थीं।

भाजपा के कारण नहीं मिल रहा सहारा निवेशकों का पैसा, जेएमएम दिलायेगी राशि : सुप्रियो

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड मुक्ति मोर्चा के केंद्रीय महासचिव और पार्टी के प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने भारतीय जनता पार्टी के संकल्प पत्र में सहारा के निवेशकों का पैसा लौटाने के वादे को मुद्दा बनाया है। रांची में संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर शहर के निवेशकों का पैसा लौटाने के लिए वर्ष 2023 में पोर्टल बनाया गया था। सुप्रियो भट्टाचार्य ने बीजेपी से सवाल करते हुए कहा कि वर्ष 2023 से 24 तक सरकार ने निवेशों को का पैसा क्यों नहीं लौटाया। क्या वजह है कि लोकसभा चुनाव के दौरान भी शहर के निवेशकों का पैसा भाजपा ने नहीं लौटाया और एक बार फिर से विधानसभा चुनाव में इसे मुद्दा बनाया गया है। कहा कि सरकार निवेशकों का पैसा नहीं लौटनी वाली सिर्फ उन्हें कोरा आश्वासन दिया जा रहा है।

सुप्रियो भट्टाचार्य ने कहा कि भाजपा ने सहारा से बकाया वसूली के लिए अखबार में विज्ञापन जारी किया है। यह पहली बार है जब अखबारों में इस तरह का विज्ञापन दिया गया है। जेएमएम नेता ने कहा, झारखंड के एक करोड़ से अधिक लोगों ने सहारा में निवेश किया है। इन सभी का पैसा फंसा हुआ है और मिलने की उम्मीद कम लगती है।

सुप्रियो ने कहा, सुप्रीम कोर्ट के आदेश के अनुसार सेबी को 5,000 करोड़ रुपये सीआरसीएस को देने को कहा गया। सभी दावेदारों को अपना रिटर्न पाने के लिए वेब पोर्टल पर आवेदन करने को कहा गया। सुप्रियो ने आरोप लगाया कि अमित शाह 2019 में गृह मंत्री बने और 2021 में उन्हें सहकारिता मंत्री बनाया गया और यहीं से खेल शुरू हुआ।

कहा कि सहारा का पैसा खा जाना मोदी की गारंटी है। मैं साफ शब्दों में कहना चाहता हूं कि सभी निवेशकों को पता होना चाहिए कि अखबार में दिया गया विज्ञापन काला सच है। निवेशकों को एक भी पैसा वापस नहीं किया जाएगा, ये कहा जा सकता है। कहा, गुजराती भाई सारा पैसा खा रहे हैं। नीरव मोदी, मेहुल चोकसी, ललित मोदी सभी का गुजरात से कनेक्शन है। भाजपा यहां ड्रामा कर रही है। गृह मंत्री सहकारिता मंत्रालय का प्रभार क्यों संभालेंगे, क्योंकि 5000 करोड़ रुपये का मामला था।

कहा कि हम भाजपा के घर में घुसकर सहारा का पैसा वापस लाएंगे और हेमंत सोरेन के सत्ता में आने के बाद यह लूट बंद होगी और झारखंड की जनता की गाढ़ी कमाई उन्हें वापस मिलेगी।

बीजेपी की तुष्टिकरण की राजनीति कभी सफल नहीं होगी : कैलाश यादव

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : राजद चुनाव अभियान समिति प्रभारी कैलाश यादव ने बुधवार को बीजेपी नेताओं पर कड़ा प्रहार किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि भाजपा के तमाम नेता राज्य में तुष्टिकरण की भाषा का प्रयोग कर बेहद ही शर्मनाक और अत्यंत ओछी राजनीति का परिचय दे रहे हैं। ये अमन, चैन, शांति और सौहार्द बिगाड़ने का असफल प्रयास कर रहे हैं।

कैलाश यादव ने कहा कि झारखंड विधानसभा चुनाव 2024 में देशभर से प्रचार प्रसार करने आ रहे बीजेपी नेता देश के गृहमंत्री अमित शाह, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री सह राज्य प्रभारी हिमंता बिस्वा सरमा राज्य में नफरती बयानबाजी कर कट्टरपंथी व्यवहार का परिचय दे रहे हैं। बीजेपी नेताओं का कहना है कि सत्ता में आने के बाद राज्य में एनआरसी, यूसीसी लागू करेंगे, जिसमें आदिवासी समाज शामिल नहीं रहेंगे। इस वक्तव्य से स्पष्ट है कि एनआरसी और यूसीसी सिर्फ मुस्लिम समाज के लोगों पर लागू करेंगे। ऐसा घृणित बयान देकर भाजपा नेता राज्य में अशांति का माहौल कायम करने का प्रयास कर रहे हैं और बेहद ही गंदी व तुष्टिकरण की राजनीति का पैगाम दे रहे हैं।

इस दौरान यादव ने कहा कि बीजेपी सहित एनडीए नेताओं को समझ लेना चाहिए कि झारखंड एक धर्मनिरपेक्ष राज्य है। यहां पर हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई व जैन समाज के लोग आपसी भाईचारे के साथ शांति और मित्रतापूर्ण तरीके से निवास करते हैं। इसलिए बीजेपी के कट्टरपंथी विचारधारा के मंसूबे को राज्यवासी कभी सफल नहीं होने देंगे।

भाजपा को पता होना चाहिए कि महागठबंधन में राजद की प्रमुख भूमिका है, जिसका नेता राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव हैं। जो देश के सबसे लोकप्रिय और धर्मनिरपेक्ष विचारधारा और सामाजिक उत्थान एवं सामाजिक न्याय के प्रणेता हैं।

झारखंड विस चुनाव में पोस्टर-बैनर से पटी राजधानी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रांची : झारखंड में पहले चरण के चुनाव का काउंट डाउन शुरू हो गया। 13 नवंबर को 43 सीटों के लिए वोट डाले जाने हैं। लिहाजा, आसमान में उड़न खटोलों की संख्या बढ़ गई है। सभी पार्टियां वोटरों को रिझाने में जुटी हैं। प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, रक्षा मंत्री, मुख्यमंत्री समेत तमाम दलों के बड़े-बड़े नेताओं का दौरा हो रहा है। सरना धर्म कोड, ओबीसी आरक्षण, यूसीसी, घुसपैठ, भ्रष्टाचार, परिवारवाद, क्राइम, पलायन जैसे मुद्दे छाए हुए हैं। दूसरी तरफ राजधानी में पोस्टर वार चल रहा है। भाजपा और झामुमो के बीच जनहितैषी साबित करने की होड़ मची हुई है।

शहर के सभी प्रमुख चौक-चौराहों पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और प्रधानमंत्री मोदी की तस्वीर वाले पोस्टर दिखाए दे रहे हैं। इससे यह भी साफ हो गया है कि इंडिया गठबंधन के लिए हेमंत सोरेन चेहरा हैं, तो वहीं एनडीए के लिए मोदी। झामुमो ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन की तस्वीर के साथ नारा दिया है 'एक ही नारा, हेमंत दुबारा'। इसके अलावा 40 लाख झारखंडियों को सर्वजन पेंशन के तहत 1000 हजार रुपये प्रति माह पेंशन की गारंटी, 200 यूनिट मुफ्त बिजली के साथ-साथ झामुमो ने सबसे ज्यादा फोकस मंईयां सम्मान योजना पर किया है। हेमंत सोरेन की तस्वीर के साथ विशाल पोस्टर लगाए गये हैं। इसमें 'दिसंबर से हर मंईयां को 2500 रुपये का उपहार, हर बहना को हर साल 30 हजार' का नारा दिया गया है।

इस चुनाव में एनडीए का नेतृत्व कर रही भाजपा ने भी पोस्टर बैनर के जरिए वादों की झड़ी लगा दी है। पार्टी ने 'रोटी बेटी माटी की पुकार, झारखंड में भाजपा सरकार' का स्लोगन दिया है। साथ ही 2.87 लाख खाली पदों पर सरकारी नौकरियों को भरने और पांच लाख स्वरोजगार का जिक्र कर भाजपा यूथ का भरोसा जीतने में जुटी है। झामुमो के मंईयां सम्मान योजना के काट के रुप में गो-गो दीदी योजना के जरिए हर माह 2100 रुपये को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की गारंटी के रूप में पेश किया जा रहा है। इन सबके बावजूद बैनर-पोस्टर के मामले में चुनाव आयोग ने पार्टियों को पीछे छोड़ दिया है। हर जगह बैनर और पोस्टर लगाकर वोट डालने के लिए लोगों को जागरूक किया जा रहा है। इसके लिए एक से बढ़कर एक स्लोगन वाले बैनर लगाए गये हैं। जैसे, 'मताधिकार-सपरिवार, नकदी, शराब, उपहार को करें अस्वीकार, बिकाऊ नहीं आपका मताधिकार, महिला-पुरुष-बुजुर्ग और यूथ, आओ मिलकर चलें पोलिंग बूथ' जैसे स्लोगन लोगों को खूब आकर्षित कर रहे हैं। अब देखना है कि इसका कोई असर भी पड़ता है या नहीं।

संक्षिप्त खबरें

भाजपा नेता सिमोन मालतो ने झामुमो का दामन थामा

रांची : झारखंड विधानसभा चुनाव से पहले संताल परगना स्थित बरहेट के भाजपा नेता सिमोन मालतो ने बुधवार को झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) का दामन थाम लिया। कांके रोड रांची स्थित मुख्यमंत्री आवासीय परिसर में मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन की उपस्थिति में सिमोन मालतो समर्थकों के साथ झामुमो में शामिल हुए। मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने सिमोन मालतो एवं उनके समर्थकों को झारखंड मुक्ति मोर्चा की सदस्यता ग्रहण करायी।

कांग्रेस सांसद पप्पू यादव ने मुख्यमंत्री से की मुलाकात

रांची : कांग्रेस पार्टी के सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव ने बुधवार को कांके रोड स्थित मुख्यमंत्री आवास पर मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन से मुलाकात की। इस दौरान दोनों नेताओं के बीच झारखंड विधानसभा चुनाव की तैयारियों एवं रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा हुई।

बिहार सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने की पदयात्रा

रांची : बिहार सरकार के ग्रामीण विकास मंत्री श्रवण कुमार ने तमाड़ विधानसभा से एनडीए उम्मीदवार (जदयू) गोपाल कृष्ण पातर उर्फ राजा पीटर के पक्ष में बुधवार को पद यात्रा की। साथ ही जनसंपर्क अभियान के तहत छेड़ुआडीह, लुपुंगडीह, उलिलोहर, जामडीह, डीमोडीह सहित अन्य गांवों में जाकर लोगों से राजा पीटर को चुनाव में रिकार्ड मतों से विजयी बनाने की अपील की। पद यात्रा एवं संपर्क अभियान में मंत्री के साथ अनुप कुमार सिंह, सुमित कुमार सिंह, घासीराम महतो, शिवेश्वर सिंह मुंडा, अंजुल यादव, महावीर महतो, वृंदावन महतो, ससोधर महतो, बीरेंद्र महतो सहित अन्य शामिल थे।

पूज्य प्रकाश बने सीआईडी के एसपी

रांची : पदस्थापन के लिए प्रतीक्षारत पूज्य प्रकाश को झारखंड सीआईडी का एसपी बनाया गया है। डीजीपी के आदेश के बाद आईजी मानवाधिकार ने मंगलवार देर रात यह आदेश जारी कर दिया है। जारी आदेश में कहा गया है कि पदस्थापन के इस प्रस्ताव पर भारत निर्वाचन आयोग की सहमति प्राप्त है। गौरतलब है कि बीते दिनों बोकारो एसपी के पद पर पदस्थापित रहे पूज्य प्रकाश का स्वास्थ्य के कारणों तबादला कर दिया गया था।

विविध कार्यक्रमों के साथ मनाया जाएगा श्याम जयंती महोत्सव

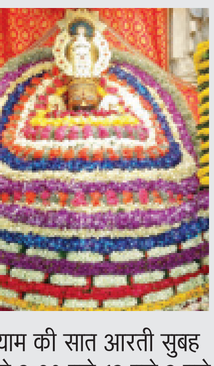

रांची : खाटूधाम के परंपरा के अनुसार कार्तिक शुक्ल एकादशी दिन मंगलवार 12 नवंबर को हरमू रोड स्थित श्री श्याम मंदिर में बाबा श्याम का जन्मोत्सव बड़े ही धूमधाम से मनाया जाएगा। श्री श्याम मित्र मंडल के प्रथम महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि जन्मोत्सव के अवसर पर मंदिर संपूर्ण दिवस खुला रहेगा। साल में मात्र इसी दिन बाबा श्याम की सात आरती सुबह 5.30 बजे, 8.30 बजे 12.15 बजे 7.00 बजे 8.30 बजे 12 बजे 2 बजे पंचदीप व शंख आरती की जाएगी। मंडल के महामंत्री विश्वनाथ नारसरिया ने बताया कि संपूर्ण मंदिर को सुगंधित फूल से एवं विद्युत साज से सजाया जा रहा है। पूरा मंदिर परिसर जन्मउत्सव दिवस को विद्युत की सजा से जगमग करता रहेगा। कोलकाता बेंगलुरु एवं अन्य जगह से विशेष इंपोर्टेड फूलों से बाबा का अनुपम दिव्य श्रृंगार किया जाएगा। श्री श्याम मित्र मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी ने बताया कि श्री श्याम जयंती महोत्सव का मुख्य समारोह रात्रि 9:30 बजे से प्रारंभ होगा। बाबा श्याम की अखंड ज्योत मुख्य यजमान प्रज्वलित करेंगे। विभिन्न तरह के फलों का प्रसाद मगहीपान एवं मेवा का भोग लगाकर बाबा श्याम को अपनी मनोकामना अर्जी अर्पित करेंगे। इस अवसर पर मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी की निगरानी में मंदिर में ही निर्मित हो रहे छप्पन भोग का प्रसाद बाबा श्याम को अर्पित किया जाएगा। विशेष रूप से बन रहे मेवा केक को रात्रि में काटा जाएगा। रात्रि में बाबा की अखंड ज्योत होने के साथ ही साथ भजनों की अनुपम गंगा कानपुर से आ रहे राज रस्तौगी द्वारा मीठे-मीठे भजनों से रिझाया जाएगा। सर्वप्रथम मंडल के सदस्यों द्वारा शुरुआत के सभी देवी देवताओं का भजन गाया जाएगा। भक्तों के लिए ज्योत में आहुति देने के लिए विशेष व्यवस्था की जा रही है। मंडल के अध्यक्ष सुरेश सरावगी ने सभी श्याम प्रेमियों को इस पावन दिवस में सम्मिलित होने का आग्रह किया है।

आचार संहित उल्लंघन मामले में हिमंता को क्लीन चिट

रांची : देवघर के डीसी ने सारठ में चुनाव आचार संहिता उल्लंघन के मामले में असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा को क्लीन चिट दे दी है। झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो), कांग्रेस, माले और राजद के नेताओं ने चुनाव आयोग से हिमंत पर विभाजनकारी भाषण देने का आरोप लगाया था। इस क्लीन चिट पर भाजपा ने प्रतिक्रिया व्यक्त की है। भाजपा के प्रदेश प्रवक्ता अजय साह ने बुधवार को कहा कि हिमंता सरमा को मिली इस क्लीन चिट से झामुमो और उसके सहयोगी पूरी तरह से बेनकाब हो गए हैं। साथ ही यह भी स्पष्ट हो गया है कि हिमंता की आवाज झारखंड के आम लोगों की आवाज का प्रतिनिधित्व करती है। साह ने कहा कि हिमंता बिस्वा सरमा ने हमेशा बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ आवाज उठाई है और जिस तरह उन्होंने असम में घुसपैठ के खिलाफ कदम उठाए, भाजपा झारखंड में भी वही कार्य करेगी। प्रधानमंत्री और गृह मंत्री भी इस बात को दोहरा चुके हैं कि देश में अवैध घुसपैठियों को चिह्नित करके बाहर निकाला जाएगा। यही कारण है कि झामुमो और कांग्रेस घबरा रहे हैं। क्योंकि, उनका वोट बैंक इस प्रकार की गतिविधियों में ही सुरक्षित रहता है।

एक नजर

वोटर कार्ड के अलावा अन्य 12 दस्तावेज के साथ मतदाता कर सकते हैं मतदान

धनबाद : भारत निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली के निर्देशानुसार मतदाता अपने वोटर आईडी कार्ड के अलावा अन्य 12 दस्तावेज के साथ मतदान कर सकते हैं। इसकी विस्तृत जानकारी देते हुए जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा ने बताया कि मतदान करने के लिए आधार कार्ड, भारतीय पासपोर्ट, ड्राइविंग लाइसेंस, केंद्र/राज्य सरकार/पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग या पब्लिक लिमिटेड कंपनी द्वारा उनके कर्मचारियों के लिए जारी फोटो युक्त सर्विस आईडी कार्ड, बैंक या पोस्ट ऑफिस द्वारा जारी फोटोयुक्त पासबुक, पैन कार्ड, मनरेगा जॉब कार्ड, श्रम मंत्रालय की योजना के अंतर्गत जारी हेल्थ इंश्योरेंस स्मार्ट कार्ड, फोटो युक्त पेंशन दस्तावेज,सांसद/विधायक/विधान परिषद सदस्य द्वारा जारी सरकारी पहचान पत्र, एनपीआर के अंतर्गत आरजीआई द्वारा जारी स्मार्ट कार्ड तथा सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी यूनिक डिसएबिलिटी आईडी कार्ड से मतदान कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि मतदान करने के लिए मतदाता सूची में मतदाता का नाम दर्ज होना अनिवार्य है।

कोर्ट परिसर में डाक सुविधा केंद्र का हुआ उद्घाटन

बोकारो: बोकारो जिला अधिवक्ता संघ परिसर में अधिवक्ता एवं मुवक्किलों के सुविधा के लिए डाक सुविधा। केंद्र का उद्घाटन झारखंड स्टेट बार कौंसिल के सदस्य अब्दुल कलाम रशीदी, संघ के प्रभारी अध्यक्ष बासुदेव गोस्वामी, इंडियन एसोसिएशन ऑफ लॉयर्स के नेशनल कौंसिल मेंबर अधिवक्ता रणजीत गिरि ने संयुक्त रूप से फीता काट कर किया। इस अवसर पर रशीदी ने कहा कि कोर्ट परिसर में डाक से संबंधित सभी सुविधा मिलेगा। जिससे अब लोगों को डाक भेजने के लिए पोस्ट ऑफिस का चक्कर नहीं लगाना पड़ेगा। डाक सुविधा केंद्र के खुलने से कोर्ट में ही अधिवक्ताओं को डाक बुकिंग होगा। इस अवसर पर वरीय अधिवक्ता जाहिर हुसैन अंसारी, अजय सिन्हा, अतुल कुमार, कामदेव पाठक, सपूर्ण चंद्र लायक, संजीत कुमार सिंह, अताउल्लाह अंसारी, शाह मोहम्मद, शंकर दे, मो निसार, इस्तियाक अंसारी, समेत सैकड़ो अधिवक्ता उपस्थित थे।

रास्ते पर गंदे पानी के बहाव पर कसमार सीओ ने लिया संज्ञान

कसमार : प्रखंड के मधुकरपुर ग्राम में वर्षों से रास्ते पर बह रहे गंदे पानी के बहाए जाने से ग्रामीण काफी परेशान हैं। कसमार अंचलाधिकारी प्रवीण कुमार को इसकी शिकायत मिलने पर उन्होंने मधुकरपुर पहुंचकर ऑन द स्पॉट पानी बहाए जाने वाले घर के लोगों पर बिगड़ते हुए उन्हें गंदा पानी नहीं बहाए जाने की हिदायत दी। कहा कि चूंकि छठ का पर्व भी है अतः पानी बहाना बंद करें, अपने पन सोखा पर ही पानी बहाएं। उन्होंने कहा गंदा पानी रोड पर बहने का अधिकार किसी के पास नहीं है, इसे स्वच्छ रखें। इस बीच स्थानीय मुखिया राजेंद्र महतो को बुलाकर अंचलाधिकारी ने कहा कि अगर ये लोग गंदा पानी रोड पर बहाना नहीं छोड़ते हैं तो, इनका लिस्ट बनाकर दें, इनके सरकारी रोड पर बने मकान की नापी करवाकर रोड को अतिक्रमण मुक्त करवाएंगे। साथ ही उन्होंने कहा रोड पर पानी न बहे इसके एवज में जो उन्हें पन सोखा मिला है उसके निर्माण में लागत राशि की रिकवरी कर वसूली भी उनसे की जाएगी।

खीर-रोटी के साथ लोगो ने किया खरना का प्रसाद ग्रहण, आज होगा पहला अर्घ्य

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : छठ पर्व की शुरूआत नहाय खाय से शुरू हो जाती है। आज दूसरे दिन व्रतियों ने खरना का व्रत किया छठ पर्व में खरना का विशेष महत्व होता है। खरना के दिन छठ व्रती पूरे दिन निर्जल रहकर व्रत करती हैं।जिसमे आज छठ व्रतियों ने तरह-तरह के पकवान बनाये जिसे सूर्य देव और छठी मैया को प्रसाद चढ़ाया जाता है। इसी क्रम मे खीर और घी लगा कर रोटी को प्रसाद के रूप मे व्रतिया ग्रहण करती है और उसी प्रसाद को बाकी अन्य लोग भी प्रसाद के रूप मे ग्रहण करते है। जिसका हिन्दू धर्म मे काफी विशेष महत्व है। आप जानते हैं। क्यू छठ व्रती बंद कमरे में खरना करती हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, छठ व्रती खरना के दिन बंद कमरे में खरना करती हैं। ऐसी मान्यता है कि खरना के दौरान छठ का व्रत करने वाली महिलाओं को किसी भी तरह की कोई आवाज सुनाई नहीं देना चाहिए। साथ ही किसी प्रेरित की कोई बाधा भी उत्पन्न नहीं होना चाहिए। इसी कारण से जो छठ व्रती होती हैं वह शांति और श्रद्धा से बंद कमरे में खरना करती हैं। हिंदू धर्म में छठ पर्व का विशेष महत्व होता है। छठ लोक आस्था का महापर्व है इसे प्रकृति का भी पर्व कहा जाता है। धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, छठ चार दिवसीय पर्व के रूप में मनाया जाता है। ऐसे तो छठ पर्व खासतौर पर बिहार, झारखंड और उत्तर प्रदेश में मनाया जाता है, लेकिन अब पूरे देश में होता है। इसी त्योहार में डूबते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है छठ पर्व नहाय खाय से शुरू होता है और उगते हुए सूर्य को अर्घ्य पर इसका समापन होता है। ऐसे में छठ व्रत करने वाली छठ व्रती को कई कठिनाओं से होकर गुजरना पड़ता है। तब जाकर छठ व्रत का फल मिलता है। छठ पर्व को हिंदू धर्म का सबसे कठिन व्रत माना गया है। इस पर्व में भगवान सूर्य की विशेष पूजा की जाती है। साथ ही व्रत में हर एक चीज को बारीकी से खास ध्यान रखा जाता है। ताकि किसी भी प्रकार की कोई गलती नहीं हो, वरना उसकी भरपाई जरूर करनी होती है।

छठ को लेकर ट्रैफिक में बदलाव, बड़े वाहनों का परिचालन पूर्णतः बंद

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : अनुमंडल पदाधिकारी चास श्री प्रांजल ढ़ांडा एवं ट्रैफिक डीएसपी बोकारो ने सभी थाना प्रभारियों को निर्धारित समय में वाहनों का परिचालन बंद रखना सुनिश्चित करने का दिया निर्देश छठ पर्व के अवसर पर शहर के मुख्य घाट सोलागीडीह तालाब, गरगा पुल, गरगा डैम, सिटी पार्क, जगन्नाथ मंदिर आदि स्थानों पर दिनांक 07.11.2024 के अपराह्न में अस्ताचलगामी तथा दिनांक 08.11.2024 को सुबह उदियमान सूर्य की पूजा-अर्चना एवं अर्घ्य दिया जायेगा। इस अवसर पर दिनांक 07.11.2024 को 14:00 बजे से 20:00 बजे तक तथा 08.11.2024 को सुबह 03 बजे से 09 बजे तक सभी बड़ी वाहनों का परिचालन पूर्णतः बंद रहेगा। इस अवसर पर दिनांक 07.11.2024 को 14:00 बजे से 20:00 बजे तक तथा 08.11.2024 को सुबह 03 बजे से 09 बजे तक* सभी बड़ी वाहनों का प्रवेश तेलमच्चो मोड़ से आइ०टी०आइ० मोड़ की ओर तथा आइ०टी०आइ० मोड़ से जोधाडीह मोड़ एवं जोधाडीह मोड़ से महावीर चौक होकर धर्मशाला मोड़ चास की ओर तथा नयामोड़ से गरगा पुल एवं बालीडीह से नयामोड़ की तरफ आनेवाली सभी बड़ी वाहनों का परिचालन पूर्णतः बंद रहेगा। इसके अतिरिक्त सभी थाना प्रभारी अपने क्षेत्रान्तर्गत पड़नेवाले सभी छठ घाटों के पहुँच पथ में बड़ी वाहनों का परिचालन अर्घ्य के समय बंद करना सुनिश्चित करेंगे। इस बाबत अनुमंडल पदाधिकारी चास श्री प्रांजल ढ़ांडा एवं ट्रैफिक डीएसपी बोकारो ने संयुक्त आदेश जारी किया है।

विस क्षेत्र में भाजपा प्रत्याशी शत्रुघ्न महतो ने चलाया जनसंपर्क अभियान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

धनबाद : बाघमारा विधानसभा क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी शत्रुघ्न महतो अपने सघन जनसंपर्क कार्यक्रम के तहत बाघमारा प्रखंड के विभिन्न इलाकों में व्यापक दौरा किया। इस दौरान, क्षेत्रवासियों से मुलाकात कर उन्होंने आशीर्वाद और समर्थन प्राप्त किया। जनसम्पर्क के पहले चरण में विधायक चलाया गया। यहाँ उपस्थित सभी लोगों ने इस बार झारखंड में भाजपा की सशक्त सरकार बनाने का संकल्प लिया और शत्रुघ्न महतो को आशीर्वाद दिया। लोगों के समर्थन को स्वीकारते हुए श्री महतो ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया। इसके बाद उन्होंने, बाघमारा प्रखंड के छाताबाद-1 नंबर, 2 नंबर, लालधौड़ा और चेतुडीह में आयोजित जनसंवाद कार्यक्रम को संबोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने बाबा भोलेनाथ, हनुमान जी और बाबा भूतनाथ जी का आशीर्वाद प्राप्त कर क्षेत्र में सुख-शांति और समृद्धि हेतु कामना किया। बाघमारा प्रखंड के कण्ड्रा पंचायत में भी जनसंपर्क किया गया, जहां हरिजन टोला, मुखिया टोला, महतो टोला, उपर टोला, नीचे टोला, कल्याणपुर, कमाटांड और बाउरी टोला में क्षेत्रवासियों से मुलाकात की गई। यहाँ भी अपार जनसमर्थन और आशीर्वाद प्राप्त हुआ। महतो ने कहा कि लोग बाघमारा विधानसभा क्षेत्र में एक बार फिर कमल खिलाने के लिए उत्साहित हैं। कहा कि 20 नवम्बर को एक बार फिर आप सभी से आशीर्वाद प्राप्त करने की उम्मीद करता हूँ और क्षेत्र की समृद्धि, खुशहाली तथा बेहतर भविष्य के लिए आप सभी के समर्थन का आकांक्षी हूं।

एनडीए प्रत्याशी बिरंची नारायण ने डोर टू डोर लोगों से किया जनसंपर्क

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : जनसंपर्क अभियान के तहत आज बोकारो विधानसभा के भाजपा कार्यकताओं ने सेक्टर 9 के शिवशक्ति कॉलोनी, श्रमिक कॉलोनी, ए रोड में एनडीए प्रत्याशी बिरंची नारायण ने डोर टू डोर जनसम्पर्क कर भाजपा के पक्ष में 20 नवंबर को मतदान करने का आग्रह किया। बोकारो विधायक सह प्रत्याशी बिरंची नारायण ने कहा कि हेमंत सरकार पर वादा खिलाफी, झूठे वादे, लुट, भय, अत्याचार से अविश्वास से आम जनता में रोष है। जिस वादे के साथ 2019 में सरकार बनी पांच साल पूरे हो गए मगर कोई भी जनता से किया गया वादा पूरा न कर सके। दिन प्रतिदिन प्रखंड हो या जिला या प्रदेश भ्रष्टाचार चरम सीमा पर। संतरी से मंत्री तक जेल जा चुके हैं। कुछ मंत्री अभी जेल में तो कोई आईएएस अधिकारी जेल में। झारखंड की खनिजों की लूट मची जिसमे उनका परिवार के लोग भी शामिल हैं। बोकारो विधानसभा के जनता ने अपना मन बना चुके है कि राज्य में फिर से भाजपा की सरकार आए और जनहित कार्यों का काम पुनः शुरू हो ताकि राज्य का सर्वाधिक विकास हो और जरूरत मंदो को उनका हक अधिकार मिल सके। बोकारो भाजपा प्रत्याशी ने कहा कि मै अपने कार्यों को लेकर जनता के बीच आया हूं विगत 10 सालों में जो भी वादा किया उसे पूर्ण करने का कार्य किया और आगे भी करूंगा। जनसंपर्क मे मंडल अध्यक्ष विनय किशोर, मंटू राय, श्रीप्रसान यादव, सुभाष सिंह, बृज दुबे, मनीष पांडेय, अमित कुमार, सतेंद्र कुमार, दीपक सिंह, मनजीत सिंह, ओंकार सिंह,भीम सिंह, रमेश कुमार सिंह, डॉ अशोक, अनमोल, भोला कुमार, धर्मेंद्र यादव, मन्तोष, पूजा कुमारी, रिंकू देवी, कुसुम देवी,उर्मिला कुमारी, मालती देवी, आदि मौजूद रहे।

अमर कुमार बाउरी ने गांवों का किया दौरा, लोगों से मांगा समर्थन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : चंदनकियारी विधानसभा क्षेत्र के एनडीए भाजपा प्रत्याशी अमर कुमार बाउरी ने बुधवार को अमदाबाद मंडल के दर्जनों गांव का दौरा कर मतदाताओं से झारखंड में भाजपा सरकार बनने के लिए भाजपा के पक्ष में वोट करने की अपील किया। श्री बाउरी ने कहा कि लोगों को राष्ट्रहित सहित भारत को शिखर तक पहुंचने के लिए मतदान देकर भारी मतों से विजयी कर प्रधानमंत्री नागेन्द्र मोदी के हाथों को मजबूत करें व डबल इंजन का सरकार बनाएं। उन्होंने कहा चंदनक्यारी विधानसभा का चौमुखी विकास करने का प्रयास किया हूं। 2024 में झारखंड से इंडिया गठबंधन की सरकार की सफाई हो जाएगी। लोगों ने बाउरी को गर्म जोशी के साथ माला पहनकर स्वागत किया। क्षेत्र के नवाडीह, तिलाटांड, बीस्बाध, देवग्राम ,सहित दर्जनों गांव का दौरा कर जनसंपर्क किया । मौके पर भाजपा अमलाबाद मंडल अध्यक्ष राधेश्याम सिंह, पूर्व मंडल अध्यक्ष पंकज शेखर ,पृथ्वी राज सिंह, राकेश मुखर्जी ,किसन गोप, गणेश प्रमाणिक, अजय कुमार, दिनेश बाउरी उमेश सिंह, इंद्रजीत दुबे, रंजीत रजवार ,अनिल संजय प्रकाश किशन को पूरन सिंह, आदि कार्यकर्ता व ग्रामीण शामिल थे।

डिलीवरी बॉय द्वारा बाइक रैली निकाल मतदाताओं को किया गया जागरूक

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बोकारो : मतदाताओं को जागरूक करने के उद्देश्य से स्वीप कोषांग के द्वारा लगातार विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में बुधवार को अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, स्वीप नोडल डा. सुमन गुप्ता एवं शक्ति कुमार, सहायक नगर आयुक्त चास सुश्री प्रियंका कुमारी, डीडीएम कंचन कुमारी आदि ने हरी झंडी दिखाकर बाइक रैली का रवाना किया। बाइक रैली में जोमैटो एवं स्विग्गी कंपनियों के डिलीवरी बॉय शामिल हुए। शहरी उदासीनता को त्याग शहरवासियों को मतदान करने के लिए प्रेरित करने का संकल्प लिया। शहरी क्षेत्र में फूड पैकेट के साथ डिलीवरी बॉय उपभोक्ताओं को आगामी 20 नवंबर 2024 को मतदान करने के लिए प्रेरित करने वाले स्टीकर भी उपलब्ध कराएंगे। मौके पर अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी ने कहा कि जिले का मतदान प्रतिशत संतोषजनक नहीं है। मतदान प्रतिशत बढ़ाने को लेकर प्रतिदिन विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से मतदाताओं को मतदान करने के लिए जागरूक किया जा रहा है। इसी कड़ी में बोकारो शहरी क्षेत्र में फूड डिलीवरी करने वाले डिलीवरी बॉय के साथ मतदाता जागरूकता बाइक रैली का आयोजन किया गया। उन्होंने आम जन मानस से स्वयं मतदान करने एवं अपने आस पास दूसरें लोगों को भी मतदान करने के लिए प्रेरित करने की बात कहीं। बाइक रैली में शामिल लोगों ने हाथों में मतदान करने वाले लिखे स्लोगन तख्ती के माध्यम से आगामी 20 नवंबर 2024 को मतदान करने हेतु आम जन मानस को प्रेरित किया। सभी लोगों ने चुनाव आयोग का है आह्वान, सबको करना है मतदान, आओ सब मिलकर गाएँ हम देंगे वोट जरूरी जाएँ, देश के मतदाता है वोट देना आता है, उम्र अठारह पूरी है मत देना बहुत जरूरी है, प्रजातंत्र से नाता है भारत के मतदाता हैं,आओ मिलकर अलख जगाएं शत-प्रतिशत मतदान कराएं आदि नारों के माध्यम से मतदाताओं को जागरूक किया। मौके पर स्वीप नोडल पदाधिकारी द्वय ने लोगों को मतदान करने के लिए मतदाता प्रतिज्ञा दिलाया।

संक्षिप्त खबरें

छठ पूजा समिति धूमधाम से मनाएगी 27वीं वर्षगांठ

धनबाद : श्री श्री सार्वजनिक छठ पूजा समिति ठाकुर कुल्ही धैया की ओर से ठाकुर कुल्ही, छठ तालाब में लगातार 27 वीं वर्ष लोक आस्था का महापर्व छठ पूजा का आयोजन धूमधाम से किया जा रहा है। पूजा समिति के सचिव शशिकांत पांडे ने बताया कि समिति की ओर से पूजा से संबंधित सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। पूजा के दौरान छठ घाट पर सुरक्षा के दृष्टिकोण से सुरक्षाकर्मी के साथ-साथ गोताखोर भी उपलब्ध रहेंगे। साथ ही पूरे तालाब की निगरानी सीसीटीवी कैमरे की मदद से की जाएगी। छठ घाट पर समिति की ओर से पूजन सामग्री जैसे गंगाजल, नारियल, अगरबत्ती,पान पत्ता, फल, दूध आदि का वितरण किया जाएगा। छठ व्रतियों के लिए घाट पर चेंजिंग रूम की व्यवस्था भी की गई है। छठ पूजा की तैयारी में अध्यक्ष फोद्दार सिंह, सचिव शशिकांत पांडे, उपाध्यक्ष इंदर सिंह राज, नूनेश्वर सिंह, मीडिया प्रभारी प्रहलाद कुमार,पूजा प्रभारी इंदर सिंह राज, कोषाध्यक्ष संतलाल महथा, निर्मल कुमार, रणधीर कुमार, प्रमोद शर्मा, बबलू सिंह, विकास चौरसिया, सुभाष साव, संजय सिंह, पूरन सिंह, त्रिलोकी विश्वकर्मा, मोहन सिंह, अमर कुमार, बाकेश कुमार, विनोद गुप्ता, मिथुन सिंह, लालमोहन, पिंटू रजवार, गणेश, कार्तिक, शंकर, बिट्टू एवं सदस्य गण सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

लालमणि वृद्धाश्रम में मनी आर के प्रसाद की तीसरी पुण्यतिथि

धनबाद : बिहार श्रमिक संघ के केंद्रीय अध्यक्ष स्व.आर के प्रसाद की तीसरी पुण्यतिथि लालमणि वृद्धा सेवा आश्रम में मनाई गई, इस मौके पर स्व. आर. के. प्रसाद के पुत्र विजय कुमार सिन्हा, विनय कुमार सिन्हा, सत्येंद्र सिन्हा, विश्वजीत सिन्हा, सक्षम सिन्हा, समर्थ सिन्हा, सौरभ सिन्हा, पुत्री रेखा सिन्हा, पुत्र वधू संगीता सिन्हा, श्वेता सिन्हा, दीपक प्रमाणिक, आश्रम के अध्यक्ष मो.नौशाद गद्दी, सुधीर बरनवाल सहित सिन्हा परिवार के सदस्यों एवं आश्रम में निवास करने वाले माता-पिता तुल्य वृद्ध जनों ने सर्व प्रथम स्व.आर.के.प्रसाद की तस्वीर पर फूल माला चढ़ाकर नम आंखों से श्रद्धांजलि अर्पित किया।वहीं आश्रम में निवास करने वाले माता-पिता तुल्य वृद्ध जनों को परिवार के सदस्यों ने मिलकर भोजन कराया। वहीं आश्रम में निवास करने वाले वृद्ध जनों ने स्व.आर. के.प्रसाद की आत्मा की शांति के लिए भगवान से प्रार्थना किया।वहीं आपको बता दें कि स्व.आर. के. प्रसाद कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं बिहार श्रमिक संघ यूनियन के केंद्रीय अध्यक्ष थे उन्होंने मजदूर हित के लिए, मजदूर भलाई के लिए बहुत सारे ऐसे कार्य किए जिसे मजदूर जगत कभी भुला नहीं सकता। वहीं स्व. आर.प्रसाद के पुत्र विजय कुमार सिन्हा ने कहा कि आज वे अपने पिता के तीसरी पुण्यतिथि आश्रम में निवास करने वाले माता-पिता तुल्य वृद्ध जनों के साथ मिलकर मना रहे हैं। वहीं स्व.आर प्रसाद के भगना विश्वजीत सिन्हा ने कहा कि आज हम अपने मामा का तीसरा पुण्यतिथि आश्रम में निवास करने वाले माता-पिता तुल्य वृद्ध जनों को भोजन कराकर मना रहे हैं।

आर्म्स को लेकर स्क्रीनिंग समिति की हुई बैठक

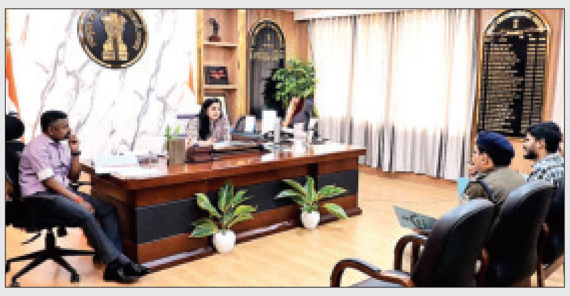

धनबाद : जिला निर्वाचन पदाधिकारी सह उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा की अध्यक्षता में आर्म्स एक्सेंपशन को लेकर जिला स्क्रीनिंग समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक में विधानसभा चुनाव के दौरान आर्म्स जमा करने से मुक्त करने हेतु प्राप्त विभिन्न प्रस्ताव की समीक्षा कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए। साथ ही सभी बैंक को अवधि के बाद गार्ड के हथियार बैंक में जमा करने का निर्देश दिया गया। बैठक में उपायुक्त सुश्री माधवी मिश्रा, वरीय पुलिस अधीक्षक हृदीप पी जनार्दनन, सिटी एसपी अजीत कुमार, एडीएम लॉ एंड ऑर्डर पीयूष सिन्हा, पुलिस उपाधीक्षक, प्रधान सहायक सामान्य शाखा असलम परवेज, अश्विन कुमार दास सहित अन्य लोग मौजूद थे।

मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य से सम वैचारिक संगठनों के प्रतिनिधियों की हुई बैठक

बोकारो : स्वदेशी जागरण मंच के तत्वावधान में आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर मतदान प्रतिशत बढ़ाने के उद्देश्य से सम वैचारिक संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठक मंच के अजय चौधरी'दीपक' के निवास स्थान 31,लोहांचल कॉलोनी में जिला संयोजक प्रमोद कुमार सिन्हा की अध्यक्षता में संपन्न हुई कबैठक में विधानसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी की जीत सुनिश्चित करने हेतु सभी पहलुओं पर विचार विमर्श किया गया सभी लोगों ने मतदाता जागरण हेतु अपने-अपने सुझाव व्यक्त किए कअधिक से अधिक लोगों को मतदान करने हेतु जनजागरण अभियान चला कर प्रेरित करने का सभी मातृ संगठन अपने स्तर से प्रयास करेंगे कबैठक में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारतीय मजदूर संघ, विश्व हिंदू परिषद, सहकार भारती,बजरंग दल, लघु उद्योग भारती,स्वदेशी जागरण मंच,भाजपा, चित्रगुप्त समिति एवं अन्य संस्था के लगभग 40 सदस्य उपस्थित थे कप्रमुख व्यक्तियों में कृष्णा राय, रामटहल, दिनेश्वर सिंह, के के बौराल, अशोक कुमार पप्पू, उमेश चंद्र पांडेय, शैलेन्द्र कुमार पांडेय, बिनोद कुमार, संजीव कुमार, उमेश चंद्र दुबे, विवेकानंद झा, अशोक रंजन, राजीव रंजन, जयशंकर प्रसाद, नवीन सिन्हा, सुजीत कुमार, गुरमैल सिंह ,अवधेश सिंह, प्रेम प्रकाश ,संजय कुमार, शिवेश पाठक ,मनीष श्रीवास्तव के अलावा अनेक कार्यकर्ता उपस्थित थें।

40 घंटे से पड़ी हैं चार लाशें, प्रावधान के अनुसार ही मिलेगा मुआवजा, दर्ज होगी प्राथमिकी : एसडीओ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : जिले के गोला थाना क्षेत्र अंतर्गत पिपरा जारा गांव में चार ग्रामीणों की मौत का मामला पिछले 40 घंटे से सुलझ नहीं पाया है। चोरी की बोलेरो से भाग रहे चोर ने चार लोगों को रौंद दिया गया था। जिसमें दो महिलाएं और दो बच्चे शामिल थे। धूमा मांझी की पत्नी मुनिया देवी (45), बहू विलासी देवी (22), डेढ़ वर्षीय पोते निरंजन मांझी और संजय मांझी की बेटी रोशनी कुमारी (12) की मौत हुई थी। इसके अलावा आधा दर्जन लोग घायल भी हैं। ग्रामीण मुआवजे की मांग को लेकर अड़े हुए हैं। जिला प्रशासन सरकारी प्रावधान के अनुसार ही सहायता राशि देने की बात कर रहा है। बुधवार को एसडीओ अनुराग कुमार तिवारी ने बताया कि जिले के आला अधिकारियों को भी इस मामले की जानकारी है। गोला अंचल अधिकारी समरेश प्रसाद भंडारी को ग्रामीणों से बात करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। जहां तक बात मुआवजे की है, तो सरकारी प्रावधान के अनुसार ही मुआवजा मिल सकता है। इसके अलावा फिलहाल कोई सहायता जिला प्रशासन की ओर से ग्रामीणों को मिलना मुश्किल है। अभी आदर्श आचार संहिता लागू है और इस माहौल में कोई आश्वासन भी देना आचार संहिता का उल्लंघन होगा। पुलिस इस मामले में प्राथमिकी दर्ज करेगी और उसके आधार पर जो भी सामने आएगा उस पर कार्रवाई होगी। ग्रामीणों से बात की जा रही है और जल्द ही शव को उठाने के लिए मनाने का प्रयास किया जा रहा है। ग्रामीणों के द्वारा पुलिस की भूमिका पर भी सवाल उठाए जा रहे हैं। एक तरफ पुलिस का कहना है कि घटना से दो दिन पहले ही बोलेरो रजरप्पा थाना परिसर से चोरी हो गई थी। इस घटना को करने वाला चोर भी अभी अस्पताल में इलाजरत है। ग्रामीण पुलिस की चोरी वाली इस कहानी पर भरोसा नहीं कर रहे हैं। उनका आरोप है कि पुलिस गाड़ी मालिक और रजरप्पा थाने के चौकीदार को बचाने का प्रयास कर रही है। गोला थाने के पिपरा जारा गांव में पिछले 40 घंटे से अधिकारियों का जमावड़ा लगा हुआ है। गोला अंचल अधिकारी समरेश प्रसाद भंडारी, गोला थाना प्रभारी अभिषेक प्रताप, गोला सर्किल इंस्पेक्टर, रजरप्पा इंस्पेक्टर और प्रखंड के अन्य अधिकारी ग्रामीणों से वार्ता करने में जुटे हुए हैं। इसके अलावा जिले के आला अधिकारी भी लगातार उनसे संपर्क बनाए हुए हैं। पीड़ित परिवारों के घर नेताओं का भी जमावड़ा लगने लगा है।

एक नजर

एनडीए प्रत्याशी रामकुमार पहान ने चलाया जनसंपर्क अभियान

अनगड़ा : खिजरी विधानसभा क्षेत्र अंगड़ा प्रखंड अंतर्गत चिलदाग पंचायत में ए एनडीए प्रत्यासी रामकुमार पहान ने जनसंपर्क अभियान चलाया ओर भारतीय जनता पार्टी के को मतदान करने का आह्वान किया कहा की राज्य में भाजपा का सरकार लाना बहुत जरूरी है चुकी महा गठबंधन की सरकार ने सिर्फ जनता को गुमराह करने का काम किया है। मौके पर आजसू पार्टी के वरिष्ठ नेता जल नाथ चौधरी आजसू प्रखंड अध्यच जगर नाथ महतो रामनाथ भाजपा मंडल अध्यक्ष सुनील महतो आदि शामिल थे।

गोंदली पोखर चुनावी कार्यालय में महिला संघ की हुई बैठक

अनगड़ा ; खिजरी विधानसभा क्षेत्र अनगडा गोंदली पोखर चुनावी कार्यालय में मंडल भाजपा मंडल अध्यक्ष सुनील कुमार महतो के नेतृत्व में महिला समूह की एक बैठक रखी गई बैठक में विशेष रूप से पंचायत में बूथ कमेटी पर चर्चा की गई। सभी को अपने अपने पंचायत में अपने स्तर से कमिटी प्रचार प्रसार ओर सपत ले की इस बार राम कुमार पहान को भारी मतो से विजय बनाए। मौके पर संजय सेट पूर्व विधायक राम कुमार पहान जिला जिला परिषद अनुराधा मुंडा कुंती देवी उपाध्यक्ष मनोज कुमार चौधरी सुरेंद्र महतो ओबीसी मोर्चा जिला अध्यक्ष नरेश साहू सिकेंदर अंसारी जलेसर महतो रामशाय मुंडा अजय महतो घनेनाथ महतो आदि शामिल थे।

डीएसओ व बीडीओ की उपस्थित में राशन वितरण कराया गया

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

चैनपुर : चैनपुर प्रखंड के बेंदोरा पंचायत के आधा दर्जन गांव के ग्रामीणों ने राशन नहीं मिलने का आरोप लगाते हुए मंगलवार को बीडीओ से शिकायत की थी। जिसके बाद जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रीति किस्कू और बीडीओ यादव बैठा ने जांच की जांचोपरांत इपोस मशीन मैं तकनीकी खराबी होने के कारण लाभुकों को राशन वितरण नहीं करने की बात सामने आई। इसके बाद डीएसओ और बीडीओ की उपस्थिति में सभी लाभुकों को राशन वितरण कराया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार बेंदोरा पंचायत के चंपा महिला समूह के बेंदोरा, सरखी, लकड़ा टोली, बेंदोरा कलोनी, किरतो, कुलाही गांव के लगभग 300 कार्डधारी मंगलवार को चैनपुर प्रखंड कार्यालय पहुंचकर बीडीओ यादव बैठा से शिकायत की थी कि उन्हें राशन नहीं मिल रहा है। इस शिकायत के आलोक में जिला आपूर्ति पदाधिकारी प्रीति किस्कू और प्रखंड विकास पदाधिकारी चैनपुर यादव बैठा ने बुधवार को जांच की। जांच में पता चला कि इपोस मशीन नहीं चल रही थी, जिससे राशन वितरण नहीं हो पा रहा था। इसके बाद जिला आपूर्ति पदाधिकारी और बीडीओ की उपस्थिति में सभी लाभुकों को राशन वितरण कराया गया। इस मामले में ग्रामीणों ने राशन वितरण में देरी के लिए प्रशासन की लापरवाही का आरोप लगाया था, लेकिन जांच में तकनीकी समस्या का मामला सामने आया। लाभुकों ने राशन मिलने के बाद राहत की सांस ली।

खूंटी में पीठासीन अधिकारियों को दिया गया चुनाव संबंधी प्रशिक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

खूंटी : विधानसभा निर्वाचन को लेकर बुधवार को लोयला इंटर कॉलेज एवं बिरसा कॉलेज खूंटी में प्रशिक्षण कोषांग द्वारा पीठासीन अधिकारियों को प्रशिक्षण दिया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी.सह.उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने मास्टर ट्रेनरों को निर्वाचन आयोग द्वारा जारी सभी निर्देशों और एसओपी का अनुपालन सुनिश्चित कराते हुए प्रशिक्षण देने का निर्देश दिया। साथ ही प्रशिक्षण ले रहे पीठासीन अधिकारियों को अच्छे से प्रशिक्षण लेने को कहाए जिससे मतदान पूरी प्रक्रिया के तहत संपन्न कराई जा सके। सुबह 10 बजे से संध्या पांच बजे तक आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान मतदान से संबंधित सभी प्रक्रियाओं से अवगत कराया गया। इसके तहत प्रपत्र 17 सीए पीठासीन डायरीए मॉक पोल रिपोर्ट समेत अन्य पर विशेष रूप से जानकारी दिया गया। प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रजेंटेशन दिखाकर सभी पीठासीन अधिकारी को मतदान प्रक्रिया की संपूर्ण जानकारी दी गई। इसके अलावा इवीएम से संबंधित विशेष जानकारी देते हुए इवीएम संचालन एवं सीलिंग के बारे में बताया गया। मौके पर उप विकास आयुक्त श्याम नारायण रामए परियोजना निदेशक आईटीडीए. सह.वरीय पदाधिकारी आलोक शिकारी कच्छप समेत अन्य पदाधिकारी मौके पर उपस्थित

संक्षिप्त खबरें

बसपा प्रत्याशी ने माले प्रत्याशी को दिया समर्थन

सरिया(गिरिडीह) : बगोदर विधानसभा से बहुजन समाज पार्टी के प्रत्याशी संतोष कुमार ने इंडी गठबंधन के साझा माले प्रत्याशी विनोद कुमार सिंह को अपना समर्थन दे दिया है । इसे लेकर बुधवार को माले प्रत्याशी विनोद कुमार सिंह और बसपा प्रत्याशी ने सरिया भाकपा माले के पार्टी कार्यालय में संयुक्त रुप से प्रेसवार्ता कर यह जानकारी दी । नेताद्वय ने बताया कि जिसप्रकार बिना किसी गुनाह के हेमंत सोरेन को भाजपा ने साजिश कर जेल भेजा इससे भाजपा की तानाशाही दिखती है । झारखंड के जल जंगल जमीन को बचाने के लिए और झारखंड में गरीब दलितों, पिछडों की सरकार बनाने के लिए बगोदर में इंडी गठबंधन प्रत्याशी विनोद कुमार सिंह की जीत आवश्यक है । भाजपा की तानाशाही सरकार झारखण्ड में ना बने इस लिए हमलोग एक मंच पर आयें हैं और सुख-दुख में हमेशा सहयोगी रहेंगे । मौके पर इंनौस प्रदेश अध्यक्ष संदीप जायसवाल, जिलाध्यक्ष सोनू पाण्डेय, माले नेता बिजय सिंह, कुश कुशवाहा, अभय साहू समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

जनसंपर्क अभियान में जुटी रिया तिर्की, कांग्रेस प्रत्याशी के पक्ष में वोट देने की अपील की

अनगड़ा : नामकुम विधानसभा चुनाव में जीत को लेकर प्रत्याशी लगातार जनसंपर्क कर समर्थन मांग रहे हैं। वहीं घर संभालने वाली प्रत्याशियों की पत्नियां भी चुनावी समर में कूद पड़ी है। वे भी अपने पति को विधायक बनाने के लिए लगातार जनसंपर्क कर अपने पक्ष में वोट देने की अपील कर रही है। खिजरी के कांग्रेस प्रत्याशी सह वर्तमान विधायक राजेश कच्छप की पत्नी रिया तिर्की भी लगातार जनसंपर्क में जुटी है। इसी क्रम में बुधवार की सुबह पतरा टोली में जनसंपर्क गठबंधन समर्पित कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी राजेश कच्छप को हाथ छाप के पक्ष में वोट करने की की अपील। उन्होंने कहा महिलाओं की उत्सुकता बताता है की फिर एक बार खिजरी में प्रचंड बहुमत के साथ राजेश कच्छप आ रहें हैं।

प्रो. बालागुरुसामी बने एसबीयू के सलाहकार

अनगड़ा : मशहूर कंप्यूटर विज्ञानी एवं शिक्षाविद् प्रो. ई. बालागुरुसामी को सरला बिरला विश्वविद्यालय की सलाहकार समिति का सदस्य नियुक्त गया है। इस आशय की जानकारी विश्वविद्यालय प्रशासन ने दी। आईआईटी रुड़की से इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग में एमई एवं सिस्टम इंजीनियरिंग में पीएचडी कर चुके प्रो. गुरुसामी देश-विदेश के अकादमिक हलकों में जाना-पहचाना नाम हैं। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में तीस से अधिक पुस्तकें लिख चुके गुरुसामी संघ लोक सेवा आयोग के सदस्य रह चुके हैं। वे अन्ना विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे। झारखंड से उनका खास नाता रहा है। अपने कार्यकाल के दौरान पूर्व राज्यपाल सी. पी. राधाकृष्णन ने उन्हें अपना शैक्षणिक सलाहकार नियुक्त किया था।

खरना संपन्न, 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू, पहला अर्घ्य आज

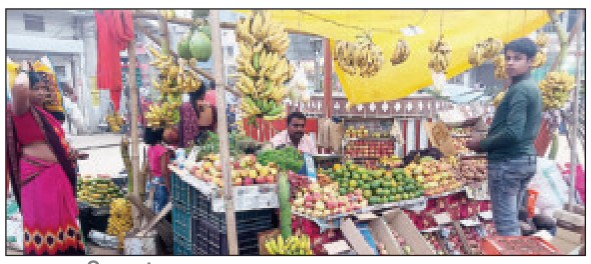

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सरिया(गिरिडीह) : लोक आस्था तथा सूर्य उपासना का महापर्व छठ जिसमें भगवान सूर्य के उगने तथा डूबते रूपों की पूजा की जाती है को लेकर सर्वत्र चहल-पहल का माहौल है। चार दिवसीय इस महापर्व के दूसरे दिन बुधवार को महिलाएं व्रत में रहकर मिट्टी से बने नए चूल्हे पर अपनी सुविधा अनुसार मिट्टी या पीतल के बर्तन में प्रसाद बनाई भगवान सूर्य नारायण की पूजा कर छठ मैया की कथा श्रवण किया पश्चात लोगों ने खरना का प्रसाद ग्रहण किया। सात्विकता के इस पर्व को लेकर गली ,कुची, सड़कों को स्थानीय स्वयं को श्रद्धालुओं तथा नगर पंचायत कर्मियों द्वारा साफ सफाई पूरी की गई है। छठ घाटों की मरम्मती की गई है। उन्हें आकर्षक ढंग से सजाया गया है। मौके पर महिलाओं ने गुरुवार की ढलते सूरज को पहले अर्घ अर्पित करेंगे। वहीं बाजार में खरीदारों की काफी भीड़ रही लोग अपने आवश्यकता अनुसार फल फूल दलिया आदि की खरीदारी करते देखे गए जबकि गुरुवार को निराहार रहकर शाम को व्रत करने वाले लोग अस्ताचलगामी भगवान सूरज को अर्घय अर्पित करेंगे। इस अवसर पर सरिया समेत केशवारी, परसिया, मंदरामों, कोयरिडीह, फकीरापहरी, बागोडीह, कैलाटांड आदि जगहों पर छठ के अवसर पर बाजे-गाजे की पुख्ता व्यवस्था कर ली गई है। वहीं नहाए खाए के दिन से ही विभिन्न छठ घाटों पर छठ मैया तथा भगवान सूरज की गीतों का प्रसारण किया जा रहा है। जिससे पूरा क्षेत्र भक्तिमय हो चुका है अनेक श्रद्धालुओं ने अपने सामर्थ के अनुसार छठ घाटों पर फल व नारियल वितरण की तैयारी पूरी कर ली है कईक श्रद्धालुओं ने छठ घाट के तोरण द्वार पर रंगोली का निर्माण तथा तोरण द्वारा को आकर्षक रूप से सजाने का कार्य पूरा कर लिए हैं।

बूथ जीत कर ही चुनाव जीता जा सकता है : डॉ लक्ष्मीकांत वाजपेई

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

सिल्ली : बुधवार को पतराहातू में भाजपा का सिल्ली विधानसभा स्तरीय चुनाव संचालन समिति की बैठक ग्रामीण जिला अध्यक्ष विनय महतो धीरज की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बैठक में बतौर मुख्य अतिथि पार्टी के झारखंड प्रदेश प्रभारी एवं राज्यसभा सांसद डॉ लक्ष्मीकांत बाजपेई ने कहा कि मैंने बूथ स्तर से अपने राजनीतिक जीवन की शुरूआत किया हैं। मजबूत इच्छाशक्ति से अगर कार्यकर्ता काम करें तो किसी भी चुनाव को जितना नामुमकिन नहीं। भाजपा के कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाते हुए कहा की जब केंद्रीय नेतृत्व ने गठबंधन धर्म निभाते हुए एनडीए का संयुक्त उम्मीदवार तय कर दिया तो हमारी जिम्मेवारी बनती है की हम अपने गठबंधन के प्रत्याशी सुदेश कुमार महतो को भारी मतों से जीत दिलाएं। उन्होंने कहा कि इसके लिए हर एक वोटर के पास जाकर वर्तमान राज्य सरकार की खामियों को बताने तथा केंद्र सरकार की उपलब्धियों को गिनाने की आवश्यकता है.वहीं भाजपा के संकल्प को बताएं। मौके पर वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ राजाराम महतो, विधानसभा प्रभारी जितेन्द्र सिंह पटेल, प्रताप कुशवाहा, उमेश महतो, विस्तारक धनंजय पांडे, भगीरथ महतो, अम्बुज रजक, चित्तरंजन महतो, पदलोचन महतो, खगेश महतो, वीणा देवी, रघुवीर महतो, हरिहर महतो, शंकर भगत, दिलेश्वर कोईरी, शिवलाल महतो, परीक्षित मंडल, मेघनाथ महतो, गोवर्धन महतो, मनोज, कमला देवी, समेत सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

हेमंत सरकार ने सिर्फ लूटा, भाजपा ही दे सकती है हर माह 2,100 रुपये : ओपी चौधरी

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

रामगढ़ : विधानसभा चुनाव में हजारीबाग क्लस्टर के प्रभारी छत्तीसगढ़ के वित्त मंत्री ओम प्रकाश चौधरी ने बुधवार को भाजपा के संकल्प पत्र को जनता के बीच रखा। इस दौरान उन्होंने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर सीधे हेमंत सरकार पर हमला बोला और कहा कि पिछले 5 वर्षों में हेमंत सोरेन ने लूट की राजनीति की है। चौधरी ने कहा कि आचार संहिता लगने से पहले हेमंत सरकार ने 1000 रुपये मईया सम्मान योजना में देकर लोगों को बहलाया है जबकि 2019 के चुनावी मेनिफेस्टो में 2000 हर माह देने का वादा किया था। उनकी गलत नीतियों से सिर्फ झारखंड के राजस्व को क्षति हो रही हैं। उनके मंत्रियों और नेताओं ने अपनी जेबें भरी। हेमंत सरकार ने चुनाव की घोषणा से जस्ट पहले 2500 देने की जो बात कही है वह भी एक छलावा है। चौधरी ने कहा कि झारखंड में सिर्फ भाजपा ही माता बहनों को 2100 रुपये प्रति माह दीदी गोगो योजना के तहत दे सकती है। यह मोदी की गारंटी है। उन्होंने चुनाव घोषणा पत्र के पंच प्रणव के संबंध में कहा कि महिला सशक्तिकरण के लिए 50 लाख तक की संपत्ति का रजिस्ट्रेशन ?1 में पुनः शुरू होगा। वृद्ध , विधवा और दिव्यांगों के लिए 2500 तक मासिक पेंशन, पीएम आवास योजना के तहत 21 लाख घरो का निर्माण होगा। चौधरी ने रोजगार सृजन के लिए झारखण्ड इंटर्नशिप और स्किल ट्रेनिंग से 5 लाख युवाओं को प्रशिक्षित करने, एक लाख की वित्तीय सहायता प्रदान करने, 2,87,500 सरकारी पदों पर भर्ती और 5 लाख स्वरोजगार के अवसर तथा नवम्बर 2025 तक 1.5 लाख पदों पर भर्ती सुनिश्चित करने के वादे को दोहराया। उन्होंने कहा कि रामगढ़ विधानसभा क्षेत्र में चंद्र प्रकाश चौधरी ने बहुत विकास किया है। रामगढ़ को जिला का दर्जा दिलाने, दुलमी और चितरपुर को प्रखंड बनाने, इंजीनियरिंग और पॉलिटेक्निक कॉलेज खोलने का काम किया है। अब उनकी पत्नी सुनीता चौधरी चुनावी मैदान में है। एनडीए की सरकार बनती है तो रामगढ़ एक आधुनिक शहर के रूप में विकसित होगा। यहां एक मल्टी मॉडल लॉजिस्टिक पार्क स्थापित करेंगे, जिससे रामगढ़ एक प्रमुख व्यापार केन्द्र के रूप में उभर सकेगा। रजरप्पा में माता छिन्नमस्तिके मन्दिर जैसे प्रमुख देवी मंदिरों को जोड़ते हुए भगवती सर्किट स्थापित करेंगे।

उपायुक्त-सह-जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, खूँटी
(जिला शस्त्र शाखा)

प्रेस विज्ञप्ति

इस कार्यालय के प्रेस विज्ञप्ति सं0 115(ii)/सा0 दिनांक–08.05.2024 एवं 176(ii)/सा0 दिनांक 21.09.2024 के द्वारा निम्नांकित अनुज्ञप्तिधारी को एक सप्ताह के अन्दर अपना लिखित पक्ष समाहरणालय (सामान्य शाखा), खूँटी में प्रस्तुत करने का निदेश दिया गया था। परन्तु निर्धारित अवधि में किसी के द्वारा अपना पक्ष प्रस्तुत नहीं किया गया। थाना प्रभारी कर्रा, मारंगहादा एवं खूँटी के द्वारा भी इनके अनुज्ञप्ति को रदद करने का अनुशंसा किया गया है। जिसका विवरण निम्नवत् है :–

क्र	अनुज्ञप्तिधारियों का नाम एवं पता	अनुज्ञप्ति सं0	अनुज्ञप्ति के प्रकार
1	कमलनाथ मिश्रा, पिता–स्व0 देवेन्द्रनाथ मिश्रा, सा0–टुनगॉव, थाना–कर्रा, जिला–खूँटी	XX/50	SBBL Gun no. 906
2	सिलास सुरीन, पिता–स्व0 जोसेफ सुरीन, कैथोलिक चर्च, कर्रा, थाना–कर्रा, जिला–खूँटी	XXI/108/77	DBBL Gum no-7504525
3	मनाय मुण्डा, पे0–बाड़ा शमशान मुण्डा, सा0–भूत थाना–मारंगहादा, जिला–खूँटी	XiX/2	DBBL GUN A/83756
4	श्री बेंजामिन फेंकलिन तिर्की, टी0टी0सी0 फुदी, खूँटी	XIX-140	DBBL Gun 139144 12 Bor

अतः थाना प्रभारी कर्रा, मारंगहादा एवं खूँटी के जाँच प्रतिवेदन तथा अनुशंसा के आलोक में विधानसभा निर्वाचन 2024 को स्वच्छ एवं शांतिपूर्ण सम्पन्न कराने के उद्देश्य से आयुद्ध अधिनियम 1959 तथा आयुद्ध नियम 2016 के कंडिका कमशः 17(क) एवं नियम 47 में उल्लेखित प्रावधानों के तहत उपरोक्त अनुज्ञप्तिधारियों के अनुज्ञप्ति को निरस्त किया जाता है।

ह0/–
जिला शस्त्र दण्डाधिकारी,
–सह– उपायुक्त, खूँटी।

PR.NO.339943 District(24-25):D

समाहरणालय, लातेहार
(प्रशिक्षण कोषांग)

आदेश

विधानसभा निर्वाचन 2024 के तैयारी के निमित मतदान संबंधी आँकड़ों की शुद्धतम प्रविष्टि के परिपेक्ष्य में मतदान दिवस को मतदान दल के पीठासीन पदाधिकारी द्वारा PDMS (Poll Day Monitoring System) App का उपयोग निदेशित है। स्पष्टतः मतदान दिवस को मतदान संबंधी आँकड़ों की प्रविष्टि ससमय PDMS (Poll Day Monitoring System) App के माध्यम से किया जाना है। इस संदर्भ में Video Confrencing के माध्यम से मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी, मंत्रिमंडल (निर्वाचन) विभाग, झारखण्ड रांची के द्वारा दिनांक 09.11.2024 को मध्याह्न 12:00 बजे से अप0 02:00 बजे तक PDMS (Poll Day Monitoring System) App का सभी नामित पीठासीन पदाधिकारियों के माध्यम से Dry Run के आयोजन हेतु निदेशित किया गया है।

अतः लातेहार विधानसभा क्षेत्र/मनिका विधानसभा क्षेत्र में मतदान हेतु गठित मतदान दल के **पीठासीन पदाधिकारियों** को आदेश दिया जाता है कि दिनांक 09.11.2024 को पूर्वाह्न 10:30 बजे तक निम्नांकित विवरण के अनुसार PDMS (Poll Day Monitoring System) App के Dry Run के लिए ससमय उपस्थित होना सुनिश्चित करें।

केन्द्र का नाम		पोलिंग पार्टी नं0	प्रतिभागी की संख्या	मास्टर प्रशिक्षक
नगर भवन, लातेहार (Town Hall Latehar)		7401–0001–0100 7402–0001–0104 7403–0001–0090 7404–0001–0053 7405–0001–0031	378 (महिला कर्मी को छोड़कर)	मो0 इरफान, बालिका मध्य विद्यालय, बालूमाथ श्री कुन्दन कुमार, उ0म0वि0, कसमार, हेरहंज
Dsitrict CM SOE, Latehar (बालक +2 उच्च विद्यालय, लातेहार)	Block-E	7301–0001–0100 7302–0001–0091	352 (महिला कर्मी को छोड़कर)	श्री बीरेन्द्र प्रसाद, उ0उ0वि0, उदयपुरा, लातेहार
	Multipurpose Hall	7303–0001–0032 7304–0001–0080 7305–0001–0039		श्री पंकज तिवारी, उ0उ0वि0 कुमण्डीह, लातेहार

नोट :– महिला पीठासीन पदाधिकारी दिनांक 09.11.2024 को पूर्व निर्धारित प्रशिक्षण केन्द्र से ही PDMS (Poll Day Monitoring System) App के Dry Run में भाग लेंगे।

सभी पीठासीन पदाधिकारियों को निदेश दिया जाता है कि अपने साथ Android मोबाईल फोन के साथ संबंधित केन्द्र पर PDMS (Poll Day Monitoring System) App के Dry Run के पूर्व PPT आधारित प्रशिक्षण लेना सुनिश्चित करें। साथ ही उक्त प्रशिक्षण हेतु नामित मास्टर प्रशिक्षक (ALMT) PPT आधारित प्रशिक्षण देना सुनिश्चित करेंगे।

प्रशिक्षण अवधि में प्रशिक्षण स्थल– नगर भवन, लातेहार (Town Hall Latehar) में श्री अनिल कुमार मिंज, कार्यपालक दण्डाधिकारी, लातेहार सदर एवं Dsitrict CM SOE, Latehar (बालक +2 उच्च विद्यालय, लातेहार) का सभागार में श्री प्रिंस कुमार, जिला शिक्षा पदाधिकारी, लातेहार प्रशिक्षण केन्द्र प्रभारी रहेंगे एवं प्रशिक्षण का स्टेटिक अनुश्रवण करेंगे।

जिला निर्वाचन पदाधिकारी–सह–
उपायुक्त, लातेहार।

PR 339907 (Election) 24-25 (D)

शारदा सिन्हा के छठ गीत सदैव सदियों तक गूंजते ही रहेंगे

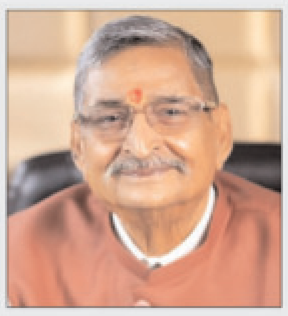

आर.के. सिन्हा

सूर्य आस्था के पञ्चदिवसीय महापर्व छठ के श्रीगणेश के साथ जब सभी छठ पर्व में आस्था रखने वालों का मन उत्साह और आनंद के वातावरण में रमा हुआ था, बस तब ही लोक गायिका पद्मश्री शारदा सिन्हा के निधन का समाचार मानो सारी दुनिया के भोजपुरी भाषियों और प्रेमियों के ऊपर वज्रपात के समान था। हालांकि शारदा जी अब हमारे बीच नहीं रहीं, पर आस्था के महापर्व छठ से जुड़े उनके सुमधुर गीतों की गूंज सदियों तक सदैव बनी रहेगी।

सूर्य आस्था के पञ्चदिवसीय महापर्व छठ के श्रीगणेश के साथ जब सभी छठ पर्व में आस्था रखने वालों का मन उत्साह और आनंद के वातावरण में रमा हुआ था, बस तब ही लोक गायिका पद्मश्री शारदा सिन्हा के निधन का समाचार मानो सारी दुनिया के भोजपुरी भाषियों और प्रेमियों के ऊपर वज्रपात के समान था। हालांकि शारदा जी अब हमारे बीच नहीं रहीं, पर आस्था के महापर्व छठ से जुड़े उनके सुमधुर गीतों की गूंज सदियों तक सदैव बनी रहेगी।

भोजपुरी संगीत में शारदा सिन्हा का नाम एक ऐसा नाम है, जो केवल गायिका से ज्यादा है, एक समृद्ध भोजपुरी संस्कृति का प्रतीक है। उनकी आवाज में न केवल भोजपुरी लोकगीतों की परंपरा झलकती है बल्कि छठ महापर्व पर्व की पवित्रता भी। उनके छठ गीत न केवल भावनाओं को छूते हैं ,बल्कि ; सुनने वालों के दिलों में छठ पर्व की गहराई को भी उकेर देते हैं। अपनी वेशभूषा रहन सहन और बोलचाल में अपनी संस्कृति की गंध लिए शारदा जी एक आम स्त्री बनी रहीं। उन्होंने बताया कि किस तरह एक स्त्री अपनी सफलता की सीढ़ियां अपनी संस्कृति के साथ चढ़ सकती हैं।

शारदा सिन्हा का निधन संगीत जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। प्रधानमंत्री मोदी ने 'एक्स' पर अपने पोस्ट में कहा, 'सुप्रसिद्ध लोक गायिका शारदा सिन्हा के निधन से अत्यंत दुख हुआ है। उनके गाए मैथिली और भोजपुरी के लोकगीत पिछले कई दशकों से बेहद लोकप्रिय रहे हैं।'

शारदा सिन्हा पिछले कुछ दिनों से अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) में भर्ती थीं और सोमवार से उन्हें वेंटिलेटर पर रखा गया था।

शारदा सिन्हा ने छठ पर्व के गीतों को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया। उनके द्वारा गाए गए 'सूर्य देवता, ओ सतवां दिन'... 'छठी मइया के घाट, घाट, घाट' जैसे गीत आने वाली सदियों तक लोकप्रिय रहने वाले हैं और छठ पूजा के दौरान घर-घर सदियों तक गूंजते ही रहेंगे । उनकी आवाज में छठ महापर्व के प्रति श्रद्धा और भक्ति का ऐसा मिश्रण था जिसने लाखों लोगों को छठ पूजा से जोड़ दिया।

जिस शारदा सिन्हा ने भोजपुरी लोक गीतों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया वह अब हमारे बीच नहीं रही हैं। शारदा जी अपने चाँद से मिलने चली गईं। उनके पति का भी कुछ माह पूर्व ही निधन हो गया था। बिहार में भिखारी ठाकुर , महेंद्र मिसिर, रघुवीर नारायण , मनोरंजन सिन्हा, विंध्यवासिनी देवी की परंपरा को आगे बढ़ानेवाली शारदा जी स्त्री सशक्तिकरण की एक प्रतीक थीं। लोक गायक अपनी जनता में किस तरह अमर हो जाता है, इसका एक ताजा उदाहरण थी।उनके गीतों से एक बार सिद्ध हुआ कि भारतीय स्त्रियों ने ही लोकगीतों को बचाये रखा है।

भोजपुर अंचल में स्त्री की वेदना विरह प्रेम वात्सल्य विवाह गीत छठ गीत की आवाज शारदा जी के गीतों में गहरी पीड़ा व्यक्त होती थी। भोजपुर अंचल से बाहर की स्त्रियों ने भी उनकी आवाज में अपनी अभिव्यक्ति पाई थी। शारदा जी ने विशुद्ध पवित्र और सात्विक गीत गाये और बताया कि यही सच्चाई है यही उनके लोकगायकी में शिखर पर पहुँचने का कारण बने ।

भोजपुरी भाषी और भोजपुरी प्रेमी होने के नाते मेरा उनसे आत्मीय संबंध रहा है । वे मुझे बड़ा भाई मानती थीं और मैं भी उन्हें अनेकों कार्यक्रमों में बुलाता रहता था । यह कम ही लोगों को पता होगा कि शारदा जी भोजपुरी भाषी न होकर उत्तर बिहार के मिथिलांचल से थीं। लेकिन , उन्होंने लोकगायकी के लिये भोजपुरी सीखी ।

साठ के दशक में कुमकुम पर फिल्माए गये भोजपुर गीतों की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए शारदा जी ने गीत गाये थे। हे गंगा मैया तोहे पियरी चढ़इबो ,लागी नाही छूटे रामा जैसे गीतों की फिर से याद शारदा जी के गीतों ने दिलाई थी।

शारदा सिन्हा के छठ गीतों की लोकप्रियता का एक कारण उनका गीतों में भावनाओं को सिलसिलेवार ढंग से पिरोना था। वो गीतों के हर शब्द को उस भावना के साथ गातीं, जो छठ पर्व के आस्था और भक्ति के साथ जुड़ी है। उनके गीतों में छठी मइया की कृपा पाने की आस, सूर्य देवता के प्रति आस्था, और परिवार की खुशहाली के लिए प्रार्थना स्पष्ट रूप से झलकती है।

शारदा सिन्हा के छठ गीतों का एक और महत्वपूर्ण पहलू उनकी भाषा और शैली है। उनकी आवाज में भोजपुरी भाषा की सरलता, लयबद्धता और भावपूर्णता का अद्भुत समन्वय था। उन्होंने छठ गीतों को अपनी आवाज से इतना प्रभावी बनाया कि ये गीत अब भोजपुरी संस्कृति का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

शारदा सिन्हा जी के गीतों को नौजवान पीढ़ी भी उतनी ही शिद्दत से सुनती है, जितनी उनके समय में सुनती थी। उनके गीतों को अनेक कलाकारों ने अपने अंदाज में गाया है।

शारदा जी के छठ गीत केवल गीत नहीं हैं, वे भोजपुरी संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। वे छठ पर्व के प्रति श्रद्धा और भक्ति को प्रोत्साहित करते हैं और हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजो कर रखते हैं।

शारदा सिन्हा , भोजपुरी संगीत की एक ऐसी रानी हैं जिनके प्रशंसक सिर्फ भारत ही नहीं, बल्कि सारे संसार में हैं। उनकी लोकप्रियता के पीछे कई कारण रहे। उनकी गायन शैली बेहद अलग और जिंदादिल है। वो अपनी आवाज से हर किरदार को जीवंत कर देती हैं, चाहे वो प्यार की बात हो, दर्द की बात हो या फिर सामाजिक मुद्दों की।

उनका संगीत जनता से सीधा जुड़ता है। उनके गाने अक्सर जीवन के आम अनुभवों, प्रेम, पारिवारिक संबंधों और सामाजिक मुद्दों को दर्शाते हैं।

शारदा सिन्हा के गाने सिर्फ मनोरंजन ही नहीं, बल्कि सामाजिक संदेश भी देते हैं। वो महिलाओं की ताकत और स्वतंत्रता के लिए आवाज उठाती हैं, और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ भी मुखर हैं।

शायद ही कोई भोजपुरी भाषी या प्रेमी हो, जिसकी जुबान पर शारदा सिन्हा के गाने ना जुबान पर ना चढ़े हुए हैं। उनकी आवाज और गाने भोजपुरी संगीत के इतिहास में हमेशा अमर रहेंगे। महत्वपूर्ण है कि उनकी लोकप्रियता सिर्फ एक गायिका के तौर पर ही नहीं, बल्कि एक शख्सियत के तौर पर भी है। उनके गाने लोगों को भावनात्मक तौर पर जोड़ते हैं, और उन्हें जीवन के मुश्किल समय में भी हिम्मत देते हैं। उन्होंने अपने गीतों से सिद्ध किया कि लोक की शक्ति ही कला को लोकप्रिय बनाती है। लोकप्रियता में गुणवत्ता भी होती है। उन्होंने भोजपुरी गीतों की लोकप्रियता और गुणवत्ता दोनों को बचाये रखा।

(लेखक वरिष्ठ संपादक, स्तंभकार और पूर्व सांसद हैं)

संपादकीय

निंदा के साथकार्रवाईभी हो

कनाड़ा के साथ चल रहे विवादों के बीच ब्रैम्पटन शहर में खालिस्तान समर्थकों ने एक बार फिर हिन्दू मंदिर में घुसकर श्रद्धालुओं को निशाना बनाया। बच्चों और महिलाओं को लाठी-डंड़ों से पीटा गया। भारतीय उच्चायोग की ओर से लगाए गए वीजा शिविर को भी निशाना बनाया। घटना पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा है, 'मैं हिन्दू मंदिर पर हमले की कड़ी निंदा करता हूं। उम्मीद करते हैं कि कनाड़ा की सरकार न्याय सुनिश्चित करेगी और विधि का शासन कायम करेगी।' प्रतिक्रिया से जाहिर होता है कि आने वाले दिनों कनाड़ा के प्रति भारत का रुख और सख्त होगा। पिछले वर्ष अमेरिका के कैलिफोर्निया में स्वामी नारायण मंदिर को खालिस्तान समर्थक तत्वों ने निशाना बनाया था। मंदिर की बाहरी दीवारों पर नारे लिखकर आतंकवादी भिंड़रावाले को शहीद बताया गया था।

सैनफ्रांसिस्को स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास में आगजनी की कोशिश की गई थी। भारतीय अधिकारियों की शिकायत पर दोषियों के खिलाफ किसी तरह की कार्रवाईनहीं की गई। अमेरिका ऐसी भारत विरोधी गतिविधियों को गंभीरता से नहीं लेता। गौर करने वाली बात है कि बाइड़न प्रशासन गुरपतवंत सिंह जैसे घोषित आतंकवादियों को संरक्षण दे रहा है तो कनाड़ा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो के लिए आतंकवादी हरदीप सिंह निज्जर नागरकि स्वतंत्रता का हीरो बन गया है। कनाड़ा में आपराधिक गैंगवार के चलते जो हत्याएं हुई हैं उनके लिए वह इन गिरोहों के खिलाफ कार्रवाई करने की बजाय भारतीय एजेंसियों को ही कठघरे में खड़ा कर रहा है। इन घटनाक्रम से जाहिर होता है कि अमेरिका की अगुवाई वाले 'फाइव आईज' देश भारत के खिलाफ सुनियोजित षड़्यन्त्र रच रहे हैं। फाइव आईज एक तरह का नस्लवादी गुट है जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, कनाड़ा, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड़ शामिल हैं। इन देशों में अंग्रेज मूल के लोगों का वर्चस्व है और इनकी घरेलू और विदेश नीति एक जैसी है। किसी भी अन्य देश के बारे में यह गुट एक जैसा रवैया अपनाता है। इन दिनों इनकी भृकुटी भारत पर तनी हुई है। इन देशों को इस बात की भी परवाह नहीं है कि मुट्ठी भर खालिस्तानियों को बचाने के लिए वे दुनिया के सबसे बड़े. लोकतांत्रिक देश भारत के साथ संबंध क्यों खराब कर रहे हैं। हालांकि ट्रूडो ने हिन्दू मंदिर पर हमले की निंदा की है लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। उनकी सरकार को दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाईकरनी चाहिए। भारत की यही मांग है।

चिंतन-मनन

सहन करना सीखें

व्यक्ति स्वयं ही बेचैनी का जीवन जीता है और अकारण ही जीवन में अनेक कष्टों को आमंत्रित कर लेता है। एक आदमी था। वह सदा प्रसन्न रहता था। एक दिन उसको उदास देखकर मित्र ने पूछा, मित्र! तुम सदा प्रसन्न रहते थे। तुम्हारी सारी अनुकूलताएं थीं। पर आज तुम बहुत उदास दिख रहे हो, यह क्यों? उसने कहा, मेरी प्रसन्नता गायब हो गई। आज से नहीं, बारह महीनों से वह गायब है। इसका भी कारण है। पहले इस गांव में मेरा मकान सबसे ऊंचा था। न जाने एक व्यक्ति कहां से आ टपका कि उसने मेरे मकान से भी ऊंचा मकान बना डाला। उसी दिन से मेरी प्रसन्नता समाप्त हो गई।

इसकी कोई दवा नहीं है। आयुर्वेद विज्ञान में, मेडिकल साइन्स में, साइकोलॉजी में इसकी कोई दवा नहीं है। यह साइकोसोमेटिक बीमारी भी नहीं है। इसका कोई स्पष्ट कारण नहीं बना। दूसरे की विशेषता को, दूसरे की सम्पन्नता को सहन न करना ही इसका कारण है। ?सी बीमारी का उपाय यह है कि व्यक्ति अपनी शक्ति को बढ़ाए, तीन मंजिले मकान के स्थान पर पांच मंजिला मकान बनाने पांच मंजिले के स्थान पर सात मंजिला मकान बनाने की क्षमता को विकसित करे और अधिक कमाए, और अधिक श्रम करे। यह उसका सकारात्मक पक्ष है। मनुष्य का दृष्टिकोण सकारात्मक कम होता है, नकारात्मक अधिक। एप्रोच नेगेटिव होने के कारण वह दुखी होता है। इससे असहिष्णुता का भाव जागता है और असहिष्णुता राहू की भांति चांद को निरंतर ग्रसित करती रहती है।

राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवसः योग एवं अध्यात्म के सहारे कैंसर पर काबू पाये

ललित गर्ग

वैश्विक स्तर साल-दर साल कैंसर रोगियों और मृतकों की संख्या बढ़ रही है। भारत में बीते सालों में कैंसर के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी देखी गई है। कैंसर की पहचान, रोकथाम और इलाज के बारे में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से हर वर्ष भारत में राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस 7 नवम्बर को मनाया जाता है। प्रसिद्ध नोबेल पुरस्कार विजेता मैडम क्यूरी की जयन्ती पर उनकी स्मृति में यह दिवस मनाया जाता, जिन्होंने कैंसर के खिलाफ चल रही लड़ाई में बहुत योगदान दिया है। उनके उत्कृष्ट शोध ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में विकास और कैंसर के उपचार के लिए रेडियोथेरेपी के उपयोग में मदद की है। यह दिवस कैंसर से लड़ने की हमारी क्षमता पर मैडम क्यूरी के वैज्ञानिक प्रयासों के बड़े प्रभाव की याद दिलाता है।

भारत में एक अनुमान के अनुसार 20 से 25 लाख कैंसर रोगी हैं, जिनमें से हर साल लगभग 7 लाख नए मामले सामने आते हैं। जब एक नए कैंसर के मामले का निदान किया जाता है, तो उनमें से दो-तिहाई पहले से ही लाइलाज अवस्था में होते हैं। इनमें से 60 प्रतिशत से अधिक कैंसर रोगी 35 से 65 वर्ष की आयु के बीच के हैं। बढ़ती जीवन प्रत्याशा और प्रगति के साथ बदलती जीवनशैली के कारण कैंसर के मामले अब की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक होंगे। हर साल, राष्ट्रीय कैंसर जागरूकता दिवस एक अनूठी थीम अपनाता है, 2023-24 में, थीम ह्यदेखभाल की कमी को पूरा करेंह्न है, यह थीम कैंसर देखभाल, कैंसर की रोकथाम, शुरूआती पहचान और उपचार तक पहुँच में सुधार के बारे में जागरूकता बढ़ाने पर केंद्रित है।

कैंसर एक ऐसा रोग है जिसके बारे में सुनकर ही लोग डर जाते हैं। कैंसर, वैश्विक स्तर पर तेजी से बढ़ती गंभीर और जानलेवा स्वास्थ्य समस्याओं एवं बीमारियों में से एक है, जिसके कारण हर साल लाखों लोगों की मौत हो जाती है। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज का अनुमान है कि दुनिया में हर छठी मौत कैंसर के कारण होती है। मेडिकल क्षेत्र में क्रांतिकारी प्रयोग और तकनीक विकास के चलते कैंसर अब लाइलाज बीमारी तो नहीं रही है, पर अब भी आम लोगों के लिए इसका इलाज काफी कठिन बना हुआ है। असाध्य बीमारी होने के बावजूद इस बीमारी को परास्त किया जा सकता है, अगर जिजीविषा एवं हौसला हो तो कैंसर को भी पस्त किया जा सकता है। हम जानते हैं कि हममें से हर एक में बदलाव लाने की क्षमता है, चाहे बड़ा हो या छोटा, और साथ मिलकर हम कैंसर के वैश्विक एवं राष्ट्रीय प्रभाव को कम करने में प्रगति कर सकते हैं।

मानव शरीर कई कोशिकाओं से मिलकर बना होता है। इनका समय-समय पर रिप्लेसमेंट होता है। जैसे-जैसे कोशिकाएं मरती जाती हैं उनकी जगह पर नई कोशिकाओं का निर्माण होता है। इन रिप्लेसमेंट के दौरान जो सेल मल्टिप्लीकेशन होता है उसके अंदर कोई एक विकृत कोशिका भी पैदा हो जाती है और यह असामान्य कोशिका ऐसी होती है जिस पर शरीर के सिस्टम्स का कोई नियंत्रण नहीं होता और वह सेल इस तरह मल्टीप्लाई करता है कि अंततोगत्वा यह ट्यूमर अथवा कैंसर का रूप अख्तियार कर लेता है। कैंसर कई प्रकार के हो सकते हैं, सभी उम्र के व्यक्तियों में इसका जोखिम देखा जा रहा है। शरीर के किसी हिस्से में असामान्य कोशिकाओं की वृद्धि और इसका अनियंत्रित रूप से विभाजन कैंसर का कारक होती है। आनुवांशिकता, पर्यावरणीय, लाइफस्टाइल में गड़बड़ी, रसायनों के अधिक संपर्क के कारण कैंसर होने का जोखिम बढ़ जाता है। महिलाओं में सर्वाइकल और ब्रेस्ट कैंसर और पुरुषों में फेफड़े-प्रोस्टेट और कोलन कैंसर का खतरा सबसे अधिक देखा जाता रहा है।

पिछले कुछ वर्षों में विज्ञान ने कैंसर के प्रकारों, कारणों और उपचारों में काफी विकास किया है। ऐसे तमाम आम और सेलिब्रेटी हैं, जिन्होंने कैंसर का सही समय पर जांच और इलाज करवाकर जीवन का सुख प्राप्त कर रहे हैं। इस दिशा में और भी जागरूकता और सतर्कता बढ़ाने की जरूरत है। कैंसर लाइलाज नहीं है, लेकिन इसका इलाज स्टेज 1 या स्टेज 2 में पता लग जाने और तुरन्त ऑपरेशन करके निकाल देने से संभव है। इन वर्षों में अनेक प्रभावी दवाइयों एवं इलाज प्रक्रियाएं भी सामने आयी है जैसे- टारगेटेड थेरेपी है, इम्यूनो थेरेपी है। उससे लोगों को काफी आराम मिलता है। उससे अनेक लोगों का खतरा पूरी तरह या कुछ मात्रा में कम हुआ एवं जीवन में कुछ वर्ष बढ़े हैं। कैंसर एक लाइफस्टाइल बीमारी भी है। इसलिये जीवन को संतुलित एवं संयममय बनाकर इस बीमारी को कम किया जा सकता है। आप कैसे रहते हैं, क्या खाते हैं, क्या आपकी आदतें हैं, क्या आपकी बुरी आदतें है, उसपर भी निर्भर करता है। लाइफस्टाइल और आहार को पौष्टिक रखने के साथ शराब-धूम्रपान को छोड़कर कैंसर के खतरे से बचाव किया जा सकता है।

असंतुलित जीवनशैली ने आज एक नहीं कई शारीरिक समस्याओं के जोखिम को बढ़ा दिया है। कैंसर भी ऐसा ही एक जोखिम है जो लंबे समय तक नजरअंदाज किये जाने के कारण अक्सर गंभीर रूप धारण कर लेता है। अगर कुछ सावधानियों को जीवन का हिस्सा बना लें तो हम ऐसी समस्याओं को आने से पहले ही रोक सकते हैं। कैंसर अब एक तरह से जीवनशैली से जुड़ी बीमारी बनती जा रही है। कई बार तो लंबे समय तक यह बीमारी पकड़ में ही नहीं आती। इसका एक बड़ा कारण जागरूकता का अभाव भी है। हालांकि, कैंसर पूर्व के कुछ लक्षण दिखते हैं, जिन्हें आमतौर पर नजरअंदाज कर दिया जाता है। मुंह में सफेद या लाल धब्बे, शरीर में कहीं गांठ बन जाना और उसका बढ़ना, लंबे समय तक खांसी, कब्ज की लगातार समस्या, अधिक थकान और वजन में गिरावट जैसे लक्षणों को कतई नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।

कैंसर को नियंत्रित करने में अध्यात्म की महत्वपूर्ण भूमिका है। क्योंकि अध्यात्म से व्यक्ति को आत्मविश्वास व मानसिक बल मिलता है। अध्यात्म के सहारे से जीवन की यात्रा को सुगम व सरल किया जा सकता है। इसे एक पारंपरिक उपचार प्रणाली के रूप में जाना जाता है, जो पूरे शरीर, मन और आत्मा में ऊर्जा के संतुलन और प्रवाह को पुनर्स्थापित करती है। जिस प्रकार दवाई हमारे शरीर के अंदर जाकर बीमारी को ठीक करती है, ठीक उसी प्रकार आध्यात्मिक इलाज हमारे मन को मजबूत बना कर किसी भी बीमारी से लड़ने की हिम्मत देता है। सुख-दुख, विपदाएं, वेदना, परेशानियां, कठिनाइयां और बीमारियों का सामना करते-करते व्यक्ति के अंदर से सकारात्मक ऊर्जा खत्म होने लगती है, जिस कारण व्यक्ति थक जाता है और अंदर से टूट जाता है। यह टूटन एवं निराशा कैंसर की सबसे बड़ी बाधा है। अध्यात्म में वो शक्ति है, जो हारे हुए व्यक्ति के जीवन में नई ऊर्जा भर देता है। अध्यात्म के बहुत सारे अंग हैं जैसे- योग, प्राणायाम, मंत्र साधना, ध्यान, आदि। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आप को भीतर से मजबूत बना सकता है। यही वजह है कि जो व्यक्ति अपने जीवन में अध्यात्म को अपना लेता है, वो कैंसर से जुड़ी हर पीड़ा, वेदना एवं हर परिस्थिति का डटकर सामना करता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में कभी हार नहीं सकता।

कैंसर संक्रामक रोग नहीं है। कैंसर के मरीजों से दूरी न बनाएं, बल्कि उनके साथ जुड़कर उनको मानसिक संबल दें, उनमें सकारात्मक सोच विकसित करें। कैंसर की जंग में सकारात्मक सोच रोगी का सबसे बड़ा हथियार हो सकता है। पूर्व क्रिकेट खिलाड़ी युवराज सिंह हों या कई बॉलीवुड सितारे, सबने अपनी सकारात्मक सोच के जरिए ही कैंसर पर विजय हासिल की है। सकारात्मक सोच वाले शरीर पर ही दवाइयां अपना असर दिखती हैं। इसलिए कभी भी व्यक्ति को हताश नहीं होना चाहिए। योग से शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। योग तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायक है।

घुलनशील खाद : भुलाए नहीं भूलेगी यह हार

मनोज चतुर्वेदी

पानी में घुलनशील उर्वरक का उपयोग दक्षता बढ़ाने, मिट्टी के स्वास्थ्य को बहाल करने और मक्का जैसी चारा फसलों में उच्च पैदावार को बनाए रखने के लिए एक प्रमुख कृषि-अवरोध के रूप में उभरा है। पारंपरिक उर्वरक अक्सर असमान पोषक तत्व वितरण, खराब फसल प्रतिक्रिया और पर्यावरणीय नुकसान के कारण बनते हैं। इसके विपरीत, पानी में घुलनशील उर्वरक संतुलित पोषक आपूर्ति प्रदान करते हैं, मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार करते हैं, और फोरेज में नाइट्रेट संचय जैसे मुद्दों को रोकते हैं, जो पशुधन को नुकसान पहुंचा सकते हैं।

चारा उत्पादन में उर्वरक आवेदन महत्त्वपूर्ण है, लेकिन यह चुनौतियों के साथ आता है। मक्का के चारे में बायोमास और कच्चे प्रोटीन को बढ़ाते हुए नाइट्रोजन-भारी उर्वरकों के परिणामस्वरूप नाइट्रेट संचय हो सकता है, जो पशुधन को नुकसान पहुंचा सकता है। प्रभावी उर्वरक उपयोग संतुलित पोषक तत्वों की आपूर्ति, फसल प्रतिक्रिया में सुधार और पर्यावरणीय प्रभावों को कम करता है। अंधाधुंध उर्वरक आवेदन के कारण फसल की पैदावार खराब हो सकती है, मिट्टी के स्वास्थ्य का क्षरण और प्रदूषण हो सकता है। क्षेत्र परीक्षण पोषक तत्वों की आपूर्ति, पोषक तत्वों का उपयोग दक्षता और फसल प्रतिक्रियाओं में पर्याप्त परिवर्तनशीलता को प्रकट करते हैं। क्षेत्रों में इस तरह की विसंगतियां समग्र चारा उत्पादकता को प्रभावित करती हैं। इन अक्षमताओं का मुकाबला करने के लिए विशिष्ट क्षेत्र विशेषताओं के अनुरूप सटीक पोषक तत्व और फसल प्रबंधन आवश्यक है। मिट्टी और उर्वरक वितरण के प्रबंधन के लिए ज्ञान-गहन ह्वष्टिकोण चारा उत्पादन में परिणामों में काफी सुधार कर सकते हैं। पानी में घुलनशील उर्वरक पौधों के लिए बेहतर पोषक तत्वों की पेशकश करके आशाजनक समाधान प्रदान करते हैं। ये उर्वरक पूरी तरह से पानी में घुलनशील होते हैं। पानी में घुलनशील उर्वरकों का उपयोग विभिन्न प्रकार के क्षेत्र की स्थितियों में किया जा सकता है, और एक कुशल, संतुलित पोषक आपूर्ति प्रदान करता है, जिससे उच्च चारा पैदावार और चारा की पोषण गुणवत्ता में सुधार होता है जबकि पानी में घुलनशील उर्वरक कई लाभ प्रदान करते हैं, पोषक तत्व अधिभार का खतरा होता है। यदि वे ओवरएप्ड या अनुचित रूप से पतला होते हैं, तो फाइटोटॉक्सिक चोट (पौधे की क्षति) हो सकती है। यह सही खुराक और अनुप्रयोग तकनीकों को सुनिश्चित करने के लिए सावधानीपूर्वक निगरानी और प्रबंधन की आवश्यकता को रेखांकित करता है। कृषि विगण केंद्र, बरनाला द्वारा किए गए फील्ड ट्रायल ने मक्का चारा उत्पादन में पानी में घुलनशील उर्वरकों (एनपीके 19-19-19) की प्रभावशीलता का आकलन किया। पता चला कि 75प्र. आरडीएफ के साथ संयुक्त, 1प्र. एकाग्रता में पानी में घुलनशील उर्वरकों के पर्ण आवेदन, मक्का के पौधे की वृद्धि (ताजा और शुष्क वजन) और हरे रंग की चारा की उपज में काफी वृद्धि हुई है। पारंपरिक प्रथाओं की तुलना में चारे की पोषण गुणवत्ता में भी सुधार हुआ। पानी में घुलनशील उर्वरक लीचिंग को कम करते हैं, प्रमुख पोषक तत्वों (एन, पी, के) और नाइट्रोजन वाष्पशीलकरण के अपवाह हानि को कम करते हैं, जो कम उत्पादन लागत में अनुवाद करता है, और पर्यावरणीय प्रभाव को कम करता है। कम पोषक तत्व अपव्यय और बेहतर दक्षता के परिणामस्वरूप किसानों के लिए कम वित्तीय बोझ में, विशेष रूप से उर्वरक लागत के मामले में।

इस्राइल, जो जल-कुशल कृषि प्रथाओं के लिए जाना जाता है, ने उर्वरक के उपयोग को उर्वरक के उपयोग का उपयोग किया है, जो उर्वरक आवेदन के साथ सिंचाई को एकीकृत करता है। पानी में घुलनशील उर्वरकों को सिंचाई के पानी में भंग कर दिया जाता है, और ड्रिप सिंचाई प्रणालियों के माध्यम से सीधे रूट जोन तक पहुंचाया जाता है। ऑस्ट्रेलियाई किसान एक संतुलित पोषक तत्व प्रोफाइल प्राप्त करने के लिए जैविक और धीमी गति से रिलीज उर्वरकों के साथ पानी में घुलनशील उर्वरकों के उपयोग को जोड़ते हैं। जापान नियंत्रित-रिलीज पानी में घुलनशील उर्वरकों को विकसित करने में सबसे आगे रहा है, जो पोषक तत्वों को धीरे-धीरे लंबी अवधि में जारी करने की अनुमति देते हैं। यूरोप में, विशेष रूप से नीदरलैंड़ जैसे देशों में स्थायी कृषि प्रमाणन योजनाएं पर्यावरण के अनुकूल खेती प्रथाओं के साथ संयोजन में पानी में घुलनशील उर्वरकों के उपयोग को प्रोत्साहित करती हैं।

जल-घुलनशील उर्वरकों जैसे पर्यावरण के अनुकूल और कुशल उर्वरकों के उपयोग को बढ़ावा देने वाली नीतियों और सब्सिडी को मजबूत किया जाना चाहिए। जल-घुलनशील उर्वरकों को अन्य टिकाऊ कृषि पद्धतियों, जैसे फसल चक्रण, कार्बनिक पदार्थ समावेशन और जल प्रबंधन तकनीकों के साथ एकीकृत किया जाना चाहिए। जल-घुलनशील उर्वरक संतुलित, पर्यावरण के अनुकूल और लागत प्रभावी दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जो पर्यावरणीय जोखिम कम करते हुए किसानों को कृषि उत्पादकता बनाए रखने में मदद कर सकते हैं।

एक नजर

चतरा के धोबे गांव में आहर में डूबने से तीन बच्चियों की मौत

चतरा : जिले के हंटरगंज प्रखंड के वशिष्ठ नगर (जोरी) थाना क्षेत्र के पैनी पंचायत अंतर्गत धोबे गांव के बड़का आहर में डूबने से तीन बच्चियों की मौत हो गई है। मृतको में विशाखा कुमारी (10), कीर्ति कुमारी (8) एवं अंशु कुमारी (10) हैं। सभी बच्चियां राजकीय मध्य विद्यालय धोबे की छात्रा थी। जानकारी के अनुसार, छुट्टी रहने के कारण सभी बच्चियां आज जंगल में लकड़ी चुनने गई थीं। इसी दौरान नहाने के क्रम में डूब गई। आसपास कोई व्यक्ति नहीं रहने के कारण तीनों बच्चियों की मौत आहार में ही हो गई थी। घटना की जानकारी मिलते ही काफी ग्रामीण आहर के किनारे पहुंचे। पानी अधिक रहने के कारण इन्हें निकालने में काफी मशक्कत करनी पड़ी। सभी को पुलिस प्रशासन के सहयोग से आहर से बाहर निकला गया। पुलिस तीनों शवों को कब्जे में ले लिया है। इस घटना से पूरे गांव में मातम है।

लॉटरी की टिकटों के साथ दो गिरफ्तार, भेजा जेल

दुमका : पुलिस ने लॉटरी की टिकट बेचते हुए शिकारीपाड़ा बाजार से दो लोगों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से पुलिस आठ हजार के टिकट और पांच हजार रुपया नगद बरामद की है। पुलिस ने अवैध धंधे से जुड़े पटना के तीन माफिया समेत छह के खिलाफ मामला दर्ज किया है। गिरफ्तार आरोपित थाना क्षेत्र के बरमसिया के उज्जल दास एवं बंगाल के रामपुरहाट निवासी तजीबुल साह को पुलिस बुधवार को जेल भेज दी है। पुलिस जिन छह लोगों को आरोपित बनाया गया है। उसमें उपरोक्त दोनों के अलावा मोहनपुर बरमसिया के संतोष साह, पटना के पाथर वाटिका हाल निवासी पवन अग्रवाल झुनझुनवाला, दीपक सिंघानिया एवं आशीष यादव शामिल हैं। जानकारी के अनुसार मंगलवार की देर शाम एएसआई परवेज आलम गश्ती पर थे। तभी सूचना मिली कि शिकारीपाड़ा सप्ताहिक हाट के पास कुछ लोग बंगाल के लाटरी टिकट बेच रहे हैं। पुलिस को देखकर दो युवक भागने लगे जिसे पुलिस खदेड़ कर पकड़ी। एक ने अपना नाम उज्जवल दास और दूसरे ने तजीबुल साह बताया। तलाशी में दोनों के पास से आठ हजार के टिकट और पांच हजार रुपया नगद भी मिला। पूछताछ में दोनों ने बताया कि संतोष साह से ही टिकट लाकर बेचते हैं। संतोष ही भारी मात्रा में बंगाल से टिकट लाकर लोगों को बेचने के लिए देता है। एएसआई ने दर्ज कराई प्राथमिकी में कहा है कि डेहरी आनसोल का रहने वाला पवन अग्रवाल ही लाटरी टिकट का संचालन करता है।

वोटर अवेयरनेस फोरम ने चलाया मतदाता जागरूकता अभियान

खूंटी : विधानसभा निर्वाचन को लेकर वोटर अवेयरनेस फोरम के द्वारा जिले के मॉल एवं प्रतिष्ठानों में बुधवार को मतदाता जागरूकता अभियान चलाया गया। इस दौरान प्रतिष्ठानों में आने वाले ग्राहकों एवं कार्यरत कर्मियों को खूंटी एवं तोरपा विधानसभा क्षेत्र में 13 नवंबर को होने वाले मतदान के दिन अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करने के लिए प्रेरित किया गया। साथ ही मतदान की विशेषता बताते हुए सभी को मतदाता प्रतिज्ञा दिलाते हुए लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने को कहा गया।

चुनाव ड्यूटी में तैनात कर्मीयों ने किया मतदान तीन दिनों में चार हजार से अधिक ने डाले वोट

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : जिले में 13 नवंबर को मतदान होना है। जिले के मतदाताओं को अपने बूथ पर लाने व 13 नवंबर को अधिकाधिक मतदान कराने के उद्देश्य से स्वीप कार्यक्रम के तहत विभिन्न गतिविधियों का आयोजन भी किया जा रहा है। इसी क्रम में चुनाव कार्य में संग्लन पदाधिकारियों/कर्मियों द्वारा भी बढ़-चढ़ कर सुविधा केंद्र में मतदान किया जा रहा है। पोस्टल बैलेट के नोडल पदाधिकारी ने भी डाला वोट, लोगों से आगामी 13 नवंबर को मतदान करने का किया आग्रह

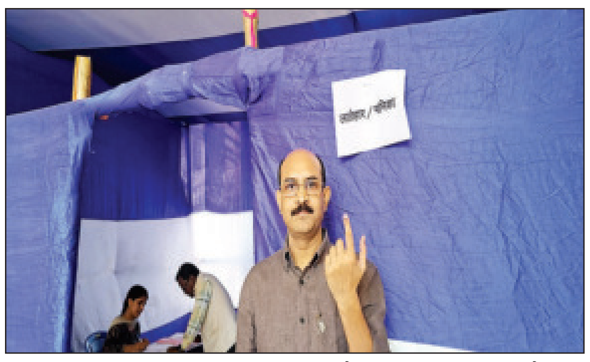

नीलांबर-पीतांबर विश्वविद्यालय परिसर में बनाये गये सुविधा केंद्र पर बुधवार को पोस्टल बैलेट के नोडल पदाधिकारी सह डीआरडीए निदेशक रतन कुमार सिंह ने भो अपने मताधिकार का इस्तेमाल किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि चूंकि मैं चुनाव कार्य में ड्यूटी पर रहने के कारण बूथ पर जाकर ईवीएम के माध्यम से वोट नहीं कर सकता इसके बावजूद मैंने पोस्टल बैलट के जरिए मतदान कर लोकतंत्र के इस महापर्व में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। उन्होंने जिले के सभी मतदाताओं से आगामी 13 नवंबर को अपने संबंधित बूथ पर जाकर मतदान करने की अपील की। सुविधा केंद्र पर जारी मतदान को लेकर उन्होंने बताया कि दिनांक 3 नवंबर से प्रारंभ मतदान में यहां अबतक 4 हजार से अधिक मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया है। उन्होंने बताया कि जिला निर्वाचन पदाधिकारी के कार्यालय में 7 नवंबर से 8 नवंबर एवं (द्वितीय चरण 15 से 16 नवंबर)को भी मतदान किया जा सकेगा। वहीं जैप 8 लेस्लीगंज में 7 नवंबर से 8 नवंबर एवं(द्वितीय चरण)15 से 16 नवंबर को भी मतदान को लेकर सुविधा केंद्र बनाया गया है। इसी तरह 9 नवंबर को हुसैनाबाद, छतरपुर एवं विश्रामपुर के निर्वाचि पदाधिकारी के कार्यालय में भी मतदान की सुविधा प्रदान की गयी है। इसी तरह आवश्यक सेवा से जुड़े लोगों के लिये जिला निर्वाचन पदाधिकारी कार्यालय में 9 व 10 नवंबर को मतदान की सुविधा प्रदान की गयी है।

पहले करें मतदान फिर धरती मां को करें एक पौधा दान : शौकत खान

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

गढवा (पलामू) : गढ़वा जिले कि जागरुक जनता कि है आह्वान मिलकर करेंगे शत प्रतिशत मतदान इसलिए पहले मतदान। फिर जलपान राष्ट्रीय तिरंगा सम्मान समारोह के आयोजक सह अनेक निःशुल्क बैंक के संस्थापक तिरंगा वाले शौकत खान ने बुधवार को आम नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि गढ़वा की लोकतंत्र के महापर्व में 13 नवंबर को खुद से आगे बढ़कर अपनी अपनी मतदान करें। फिर अपने घर परिवार, मुहल्ला, गांव, और शहर के नागरिकों को मतदान करने के लिए उन्हें प्रेरित करें और खुद से सच्चे मतदाता होने का गौरव प्राप्त करें और हो सके तो हर मतदाता अपनी-अपनी मतदान करने के बाद धरती मां को हरा भरा करने के लिए एक पौधा जरुर लगाएं। और लोगों को भी प्रेरित करें क्योंकि आपकी एक वोट से पांच वर्ष के लिए झारखंड में मजबूत सरकार बनेगी। वहीं आपका एक पौधा लगाने से आपकी जीवन भी यादगार बन जाएगी और आपकी आने वाली पिढियो को अपना मतदान और मतदान के बाद एक पौधा लगाने के लिए हर बार प्रेरित करेगी तो फिर देर किस बात कि आज ही खुद से संकल्प और चलों चलें मतदान करों फिर जाकर जलपान करें तब धरती मां के लिए आप खुद से वरदान बनें।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री आठ को तरहसी में करेंगे चुनावी सभा : शशिभूषण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : पलामू जिले में विधानसभा चुनाव को लेकर स्टार प्रचारकों के द्वारा जनसभा करने का सिलसिला शुरू होने वाला है। पांकी विधानसभा क्षेत्र के तरहसी (ब्लॉक के बगल में) मनगड़िया मैदान में 8 नवम्बर को पूर्वाह्न 11 बजे से मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जनसभा को संबोधित करेंगे। बुधवार को लेस्लीगंज स्थित मौर्या फार्म हाउस में क्षेत्रीय निवर्तमान विधायक एवं पांकी से भाजपा उम्मीदवार डा. शशिभूषण मेहता ने इस संबंध में जानकारी दी। विधायक ने कार्यकर्ताओं, समर्थकों एवं आम लोगों से इस कार्यक्रम में शामिल होकर इसे सफल बनाने का आग्रह किया। इससे पहले पांकी विधायक ने

पांकी विधानसभा क्षेत्र के पांकी-डालटनगंज मार्ग पर गजबोर में भारतीय जनता पार्टी के पांकी मंडल कार्यालय का उद्घाटन किया गया। भाजपा जिला अध्यक्ष अमित तिवारी, भाजपा उम्मीदवार डॉ शशि भूषण मेहता, मंडल अध्यक्ष शत्रुध्न सिंह, लवली गुप्ता ने संयुक्त रूप फीता काट कर कार्यालय का उद्घाटन किया। मौके पर विधानसभा चुनाव प्रभारी अशोक शर्मा, भाजपा नेत्री सह प्रदेश प्रवक्ता मंजुलता दुबे ओबीसी जिला अध्यक्ष शंकर प्रसाद, मिंटी वर्मा, महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष नीलम देवी, पांकी मंडल मंत्री रीमा शर्मा, लिरिक सिंह, मंडल महामंत्री श्यामनंदन ओझा, संकेश्वर सिंह, समाजसेवी अनुप गुप्ता, सत्यनारायण यादव सहित सैकड़ों कार्यकर्ता मौजूद थे।

छठ पूजा को लेकर रूट चार्ट जारी, 12 घंटे तक नहीं होगा भारी वाहनों का शहर में प्रवेश

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पलामू : छठ पूजा को लेकर विधि व्यवस्था और यातायात संधारण के लिए जिला मुख्यालय मेदिनीनगर में पुलिस ने रुट चार्ट जारी किया है। 7 नवंबर को दोपहर 2 बजे से रात्रि 8 बजे तक एवं 8 नवंबर को अहले सुबह 2 बजे से पूर्वाहन 8 बजे तक बड़े मालवाहक वाहनों के लिए शहर के बाहर के बाहर पड़ाव निर्धारित किया गया है। यानि दो दिनों तक दो शिफ्ट में 6-6 घंटे तक शहर में भारी वाहनों का प्रवेश नहीं होगा। गढ़वा की ओर से आने वाले वाहन चैनपुर थाना अंतर्गत मंगरदाहा घाटी के पास पड़ाव करेंगे। इसी तरह रांची की ओर से आने वाले वाहन सदर थाना अंतर्गत चियांकी रजवाड़ीह मोड़ के पास पड़ाव करेंगे। पांकी की ओर से आने वाले वाहन सदर थाना अंतर्गत रजवाड़ीह चियांकी बाईपास के पास ठहरेंगे। औरंगाबाद बी मोड़ की ओर से आने वाले वाहनों को पड़वा थाना अंतर्गत पाटन मोड़ के पास ठहरने की व्यवस्था रहेगी। इसी तरह 7 नवंबर को 2 बजे दोपहर से 8 बजे रात तक एवं 8 नवंबर को 2 बजे रात से पूर्वाह्न 8 बजे तक पार्किंग की व्यवस्था की गई है। कोयल नदी छठ घाट पर आने वाले छठ व्रति का शिवाजी मैदान एवं सद्दीक मंजिल चौक कोयल नदी पुल के पास टेंपो स्टैंड में वाहनों के लिए पार्किंग की व्यवस्था की गई है। अमानत नदी सिंगरा छठ घाट पर आने वाले छठ व्रत के वाहनों की पार्किंग की व्यवस्था अमानत नदी के बाएं साइड की गयी है।

भाजपा प्रत्याशी पुष्पा देवी ने पाटन मंडल के विभिन्न गांवों में किया जनसंपर्क

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

मेदिनीनगर (पलामू) : भाजपा प्रत्याशी पुष्पा देवी ने पाटन मंडल के आज पाटन पालहे कला, महुलिया, सधपुर, बासदह कॉलोनी, बैदा कला के विभिन्न गांवों में जनसंपर्क करके आशीर्वाद प्राप्त की। भाजपा प्रत्याशी पुष्पा देवी ने 13 नवंबर को अपने मतदान केंद्र पर ईवीएम में 2 नंबर का बटन दबाकर कमल के सामने वाला बटन दबाने की अपील लोगो से की। इस दौरान लोगो में भाजपा प्रत्याशी को लेकर काफी उत्साह देखने को मिला। लोगो ने भाजपा प्रत्याशी पुष्पा देवी को माला देकर आशीर्वाद दिया। लोगो ने भाजपा के पक्ष में जमकर नारेबाजी की और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में अपनी आस्था प्रगट की। इस मौके परअवध किशोर सिंह, गिरवर सिंह, हृदय नारायण सिंह, देवनत सिंह, धीरज सिंह, सुजाता सिंह, अर्चना देवी, गौतम सिंह, बलि सिंह, नीरज सिंह, शारदा प्रसाद सिंह, विजय प्रसाद सिंह, धरणीधर सिंह, विनय सिंह, प्रवीण सिंह, भोला सिंह, रविंद्र सिंह, शैलेंद्र सिंह, धनंजय सिंह, सुशील सिंह, बबलू सिंह, अजीत सिंह, वशिष्ठ नारायण सिंह, सुधीर सिंह, प्रवीण सिंह, जितेंद्र सिंह, रामप्रवेश सिंह, एवं गांव के सभी गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे।

विधायक बनने पर मोबाइल कनेक्टिविटी सही करुंगी : अंजू सिंह

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

विश्रामपुर (पलामू) : विश्रामपुर विधानसभा निर्वाचन क्षेत्र की सपा प्रत्याशी अंजू सिंह ने आज जनसंपर्क अभियान चलाया। सैकड़ों समर्थकों के साथ अंजू सिंह ने रजदीरिया, दुर्गा माइंस ऑफिस, सोहदाग,कुंभी खुर्द, सोहदाग मस्जिद, नावाबाजार सहित कई गांवों का दौरा कर अपने पक्ष में साइकिल छाप पर वोट करने की अपील की। उन्होंने कहा कि दुर्गा माइंस वाले क्षेत्रों में मोबाइल नेटवर्क नहीं रहता है। इससे लोगों को मोबाइल से बात करने के साथ-साथ इंटरनेट सर्व करने में काफी असुविधा होती है। 5-जी के इस जमाने में मोबाइल कनेक्टिविटी नहीं होना क्षेत्र के लिए दुर्भाग्य की बात है। विधायक बनने पर अंजू सिंह इस समस्या से लोगों को निजात दिलायेंगी। नावा

बाजार क्षेत्र में 5ऋकी सेवा देंगी, ताकि यहां के लोगों को फास्ट नेटवर्क सर्विस मिल सके। सड़क की हालत बेहाल देख उन्होंने कहा कि 20 सालों से सत्ता में रहे यहां के विधायक का यह हाल देखकर दुःख होता है। विधायक बनकर अंजू सिंह सड़क को दुरुस्त करने का कार्य करेंगी, ताकि लोग सुगम यात्रा कर सकें। साथ ही पंचायत स्तर पर एंबुलेंस की सुविधा मुहैया कराई जायेगी। इससे लोगों का बेहतर इलाज हो सकेगा। बिजली की आंख मिचौनी से लोगों को राहत दिलाई जायेगी। लो-वोल्टेज की समस्या को समाप्त करने के लिए जरूरत वाले स्थानों पर ट्रांसफॉर्मर लगवाते हुए 24 घंटे बिजली की आपूर्ति सुनिश्चित कराई जायेगी। इसके अलावा सभी को पक्का आवास देकर क्षेत्र में एकरूपता लाने का काम होगा। अंजू सिंह के अच्छे कार्यकलापों से प्रेरित होकर नावा बाजार मुखिया संघ के अध्यक्ष बिनोद विश्वकर्मा, इटको मुखिया सफीर आलम बिंदेश्वर सिंह, मुन्ना सिंह, मुनि सिंह, नरेश सिंह,परमेश्वर सिंह,हरे राम सिंह, प्रभु विश्वकर्मा,राजेंद्र सिंह, सूर्यदेव यादव,श्रवण यादव, धर्मदेव भुइया, चंद्रदेव सिंह,देवेंद्र सिंह, कईल विश्वकर्मा, पुष्कर पाण्डेय सुनील सिंह, राजेंद्र यादव सहित पूर्व में विभिन्न दलों एवं संस्थानों से जुड़े सैकड़ों लोगों ने समाजवादी पार्टी में शामिल हुए। अंजू सिंह एवं सपा के अन्य नेताओं ने पार्टी में शामिल युवाओं का जोरदार स्वागत किया। साथ ही विश्रामपुर विधानसभा क्षेत्र में विकास के दिशा में सभी से मिलकर कार्य करने का आह्वान किया गया।

संक्षिप्त खबरें

पलामू की एसपी रीष्मा रमेशन ने केरल से आकर निभाई छठ पूजा की परंपरा

मेदिनीनगर (पलामू) : पलामू जिले की पुलिस अधीक्षक रीष्मा रमेशन ने पूरे विधि-विधान के साथ छठ महापर्व की शुरूआत अपने आवास पर की। इस पर्व के दूसरे दिन का प्रसाद भी उन्होंने स्वयं तैयार किया। मूल रूप से केरल की रहने वाली एसपी रीष्मा रमेशन ने बताया कि उन्हें छठ पर्व से विशेष लगाव है और यह उनका तीसरा व पलामू में उनका पहला छठ पर्व है। एसपी के पति, एसपी अंजनी अंजान ने बताया कि उनकी पत्नी जब से बिहार और झारखंड की संस्कृति में रचे-बसे छठ पर्व से परिचित हुई हैं, तब से इसे बड़े उत्साह के साथ मनाती हैं। यह रीष्मा रमेशन का तीसरा छठ पर्व है, और उन्होंने इस पर्व के महत्व को समझते हुए पूरी श्रद्धा के साथ इसे अपनाया है। रीष्मा रमेशन का इस पर्व के प्रति प्यार और श्रद्धा उनकी समर्पण भावना को दशार्ता है, जो उन्हें अपने मूल राज्य केरल से दूर होने के बावजूद इस सांस्कृतिक परंपरा से जुड़ा रखता है।

डालटनगंज विधानसभा क्षेत्र में केएन त्रिपाठी ने चलाया जनसंपर्क अभियान

मेदिनीनगर (पलामू) : डालटनगंज विधानसभा क्षेत्र के इंडिया महागठबंधन के प्रत्याशी के० एन० त्रिपाठी ने मेदिनीनगर सदर प्रखंड के दर्जनों से अधिक विभिन्न इलाकों का सधन जनसंपर्क सह परिभ्रमण कार्यक्रम चलाया । उन्हें अपार जनसमर्थन मिलता दिखाई दे रहा था। उन्होंने सदर प्रखंड के क्षेत्रों जैसे भुसडिया, पिढिया , नउवाढोढ , सिन्दुरिया, झाबर के मगहिया टोला, यादव टोला व उरांव टोला एवं मेदिनीनगर नगर निगम के मुस्लिम मुहल्ला व पहाड़ी समेत कई ग्रामों व मुहल्लों में जाकर सघन जनसंपर्क किया। उन्होंने नवयुवकों, महिलाओं, स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार आदि समस्याओं के हल हेतु हाथ छाप पर वोट देने के लिए अपील किया।

निर्दलीय प्रत्याशी दिलीप सिंह ने कई गांवों में चलाया जनसंपर्क अभियान

पांकी (पलामू) : निर्दलीय प्रत्याशी दिलीप सिंह नामधारी ने डालटनगंज/ भंडरिया विधानसभा क्षेत्र के चैनपुर प्रखंड के चैनपुर, सलतुआ, कुमनी, बहेरा समेत कई गांवों में जनसंपर्क अभियान चलाया। दिलीप नामधारी ने लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि इस बार का चुनाव दिलीप के साथ साथ जनता अपने विकास के लिए लड़ रही है। उन्होंने अपने पक्ष में लोगो को वोट करने की अपील की और भारी मतों से विजयी बनाने का लोगो से वादा लिया।

नेता लोग आयेंगे, प्रलोभन देंगे पर आपलोगों को उसमें फसना नहीं है : दिलीप सिंह

पलामू : 76 डालटनगंज चैनपुर भंडरिया विधानसभा क्षेत्र के मेदिनीनगर निगम अंतर्गत बैरिया एवं भंडारिया प्रखंड के फकीराडीह, पाट, हरता, तिहारो, कुरुण, बिजका, नगनाहा इत्यादि दर्जनों गांवों का निर्दलीय प्रत्याशी युवा नेता दिलीप सिंह नामधारी ने तूफानी दौरा किया। दिलीप जी ने क्षेत्र की जनता को संबोधित करते हुए कहा कि बड़े बड़े नेता लोग आयेंगे, तरह तरह के प्रलोभन देंगे तथा जाते जाते एक दो हजार भी देंगे पर आपलोगों को उसमें फसना नहीं है। सभा में मौजूद लोगों ने उनकी बातों का समर्थन किया तथा 13 नवम्बर 2024 को क्रमांक संख्या 15 पर अंकित सिलाई मशीन छाप पर वोट देने की बात कही।

हाइवा ने बाइक सवार को मारी टक्कर पिता की मौत, बेटी-भतीजा गंभीर

पलामू : पलामू जिले के नेशनल हाइवे 75 पर कधवन-शंखा के बीच एक हाइवा (सीजी3डीई 9278) ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। इस घटना में एक युवक की मौत हो गयी, जबकि उसकी बेटी एवं भतीजा गंभीर हो गए। दोनों की गंभीर हालत को देखते हुए एमआरएमसीएच मेदिनीनगर से रांची रिम्स रेफर कर दिया गया है। घटना बुधवार दोपहर 1 बजे हुई। मृतक की पहचान पाटन थाना क्षेत्र के बनासो किशुनपुर निवासी 24 वर्षीय संतोष साव के रूप में हुई है। भतीजे का नाम रोहित है, जबकि बेटी का नाम स्पष्ट नहीं हो पाया है। बताया जाता है कि संतोष बेटी एवं भतीजे के साथ बाइक द्वारा ससुराल गढवा जा रहा था। इसी क्रम में नेशनल हाइवे 75 पर कधवन-शंखा के बीच एक हाइवा ने उनकी मोटरसाइकिल में जोरदार टक्कर हो गई। तीनों जख्मी हालत में घटनास्थल पर पड़े हुए थे। स्थानीय लोगों ने उन्हें उठाकर इलाज के लिए एमआरएमसीएच में भेजा। जहां संतोष की मौत हो गई। वहीं भतीजे और बेटी की गंभीर हालत देखकर रांची रिम्स रेफर कर दिया गया।

मंडल मुर्मू का सिर काटने वाले को 50 लाख इनाम देने की घोषणा करने वाला गिरफ्तार

दुमका : मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के बरहेट विधानसभा सीट से प्रस्तावक रहे सिदो कान्हू के वंशज मंडल मुर्मू के भाजपा में शामिल होने के बाद से राजनीति गरमा गयी है। सेल्स एंड सर्विस नामक ह्वाट्सएप ग्रुप में एक युवक ने मंडल मुर्मू का सिर काटने पर 50 लाख रुपये इनाम देने की घोषणा की थी। पुलिस ने इस मामले को गंभीरता से लिया और दुमका की मुफस्सिल थाना पुलिस ने चांदडीह गांव के रहने वाले साहुल हासंदा को पूछताछ के बाद गिरफ्तार कर लिया। ह्वाट्सएप ग्रुप में जिस नंबर से यह मैसेज किया गया है, उसमें वह युवक कहता है कि मंडल मुर्मू का सिर काटने वाले को सिदो कान्हू वैसी समिति की ओर से 50 लाख की राशि दी जाएगी। इस मामले को लेकर वंशज परिवार के मंडल मुर्मू ने कहा कि उन्हें भी ह्वाट्सएप के माध्यम से स्क्रीनशॉट मिला है। पूरी जानकारी भाजपा के वरिष्ठ नेताओं को दी गयी है। वह पुलिस से संपर्क कर रहे हैं और इसकी शिकायत की जा रही है। वंशज परिवार के मंडल मुर्मू को सेल्स एंड सर्विस ह्वाट्सएप ग्रुप में धमकी देने वाले नंबर को दुमका पुलिस ने ट्रेस किया। इसके बाद युवक साहुल हांसदा को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया और गिरफ्तार कर लिया।

हेमन्त सोरेन ने की भुला मोड़ में चुनावी सभा, मंगल कालिंदी को भारी मतों से जिताने की अपील की

- गरीब असहाय लोगों का बिजली बिल माफ एवं दो लाख रुपये तक ऋण माफ कर दिया गया है
- महागठबंधन की सरकार बनती है तो महिलाओं के खाते में हर वर्ष एक-एक लाख रुपये भेजने का काम करेंगे

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : जुगसलाई विधानसभा क्षेत्र से महागठबंधन प्रत्याशी मंगल कालिंदी के पक्ष में बुधवार को राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बोड़ाम प्रखंड के भुला मोड़ में चुनावी सभा को संबोधित किया। इस दौरान संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि महागठबंधन सरकार ने यंहा के महिलाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान से जोड़कर प्रत्येक माह एक- एक हजार रुपये भेजने का काम किया है। उन्होंने कहा कि दिसंबर से एक हजार रुपये से बढ़ाकर ढाई हजार रुपये करने का नियम भी बनाया है। उन्होंने कहा कि गरीब असहाय लोगों का बिजली बिल माफ एवं दो लाख रुपये तक ऋण माफ कर दिया गया है। सभी बृद्ध - बृद्धाओ को पेंशन देने के लिए एक नियम बनाया गया है। उन्होंने कहा कि फिर से महागठबंधन की सरकार बनती है तो महिलाओं के खाते में हर वर्ष एक एक लाख रुपये भेजने का काम करेंगे। अभी विपक्ष के पास कोई मुद्दा नही है । दूसरे राज्यों के भाजपा नेता यंहा चील कौआ की तरह मंडरा रहा है। उससे सावधान रहने की जरूरत है। उन्होंने महागठबंधन प्रत्याशी मंगल कालिंदी को भारी मतों से विजयी बनाने की अपील की। महागठबंधन प्रत्याशी मंगल कालिंदी ने कहा कि पांच साल के कार्यकाल में जुगसलाई विधानसभा क्षेत्र में सड़क, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल समेत कई क्षेत्र में कार्य किया गया है। आपलोग पुनः आशीर्वाद देकर विधानसभा भेजने का काम करेंगे तो बाकी बचे काम को भी पूरा करेंगे। इस दौरान आजसू और जेकेएलएम पार्टी से जुड़े कई लोगों ने झामुमो का दामन थामा। मौके पर जिला पार्षद खगेन चंद्र महतो, गीतांजलि महतो, पिंटू दत्त, माणिक मल्लिक, माणिक महतो, चंद्रशेखर टुडू, सुभाष कर्मकार, छुटुलाल हांसदा, अश्विनी महतो, कालीपद महतो समेत हजारों की संख्या में लोग मौजूद थे।

एक नजर

विधानसभा चुनाव को लेकर पुलिस प्रेक्षक का हुआ आगमन

साहिबगंज: विधानसभा चुनाव-2024 के मद्देनजर पुलिस प्रेक्षक दिनेश कुमार यादव का नया परिसदन भवन में आगमन हुआ। साथ ही अतिथि के रूप में आईजी क्रांति कुमार का नया परिसदन में आगमन हुआ। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती एवं पुलिस अधीक्षक अमित कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से पुष्प गुच्छ देकर उनका स्वागत किया। विधानसभा चुनाव-2024 के परिप्रेक्ष्य भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 01- राजमहल, 02- बोरियों , 03 बरहेट- विधानसभा चुनाव-2024 के लिए पुलिस प्रेक्षक के रूप में दिनेश कुमार यादव की प्रतिनियुक्ति की गई है।

अपराधियों की गोली से घायल व्यक्ति की मौत परिजनों ने डॉक्टर के साथ की मारपीट

गोड्डा : ललमटिया बाजार में खरीदारी करने गए एक व्यक्ति जॉन किस्कू की मंगलवार की शाम अपराधियों ने सरेआम गोली मारकर हत्या कर दी। इलाज के लिए भागलपुर ले जाने के क्रम में उसकी मौत हो गई। बुधवार की सुबह सदर अस्पताल में मेडिकल बोर्ड की मौजूदगी में पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया। मिली जानकारी के अनुसार, जॉन किस्कू अपनी पत्नी के साथ बाजार में खरीदारी कर बाइक से अपने गांव डकैता लौटने की तैयारी में था। तभी सफेद बाइक पर सवार दो नकाबपोश बदमाश पहुंचे जॉन पर निशाना साध चार गोलियां दाग दी। एक गोली बाइक पर लगी, जबकि तीन गोलियां जॉन के शरीर में लगी थीं। घायल जॉन किस्कू को तत्काल सदर अस्पताल ले जाया गया, मगर उसकी गंभीर स्थिति को देख डॉक्टर व कंपाउंडर की निगरानी में उसे भागलपुर भेज दिया गया। भागलपुर ले जाने के क्रम में पंजवारा के पास उसकी मौत हो गई। इससे गुस्साए परिजनों ने साथ आए डॉक्टर राजन कुमार के साथ मारपीट की। डॉक्टर ने किसी तरह भाग कर अपनी जान बचाई और पंजवारा थाना पहुंचकर मामले की जानकारी वरीय अधिकारियों को दी। इधर प्रशासन ने मेडिकल बोर्ड गठित कर शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया। मृतक की पत्नी के बयान पर एफआईआर दर्ज कर पुलिस जांच में जुट गई है। घटना का कारण आपसी रंजिश बताई जा रही है।

मतदाता जागरूकता को लेकर फुटबॉल प्रदर्शनी मैच का हुआ आयोजन

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

कुकड़ू : बुधवार को जिला प्रशासन सरायकेला खरसावां के निदेर्शानुसार कुकड़ू प्रखंड सह अंचल कार्यालय के तत्वावधान में कुकड़ू फुटबॉल मैदान में स्वीप कार्यक्रम के तहत मतदाता जागरूकता को लेकर दो स्कूली टीमों के बीच फुटबॉल प्रदर्शनी मैच का आयोजन किया गया। इस फुटबॉल प्रदर्शनी मैच में प्लस टू उच्च विद्यालय सिरुम और शहीद निर्मल महतो प्रस्तावित उच्च विद्यालय, कुकड़ू की टीम ने भाग लिया। प्रदर्शनी फुटबॉल मैच के माध्यम से मतदाताओं को मतदान के महत्व के प्रति जागरूक किया गया और उन्हें मतदान करने की शपथ दिलाई गई। प्रदर्शनी मैच में प्लस टू उच्च विद्यालय सिरुम ने शहीद निर्मल महतो प्रस्तावित उच्च विद्यालय कुकड़ू को दो गोल से पराजित किया। मैच की समाप्ति के बाद विजेता प्लस टू उच्च विद्यालय सिरुम और उपविजेता शहीद निर्मल महतो प्रस्तावित उच्च विद्यालय कुकड़ू को पुरस्कृत भी किया गया। मौके पर कुकड़ू प्रखंड के जीपीएएस आनंद महतो, बीपीओ रामलगन उरांव, एई सुदर्शन राणा, जेई भोलानाथ महतो, जेई तुलसी कालिंदी, प्रखंड समन्वयक रविंद्र नाथ महतो, सिरूम पंचायत के मुखिया मजीत सिंह सहित कई रोजगार सेवक, पंचायत सचिव समेत स्कूली बच्चें और स्थानीय ग्रामीण मौजूद थे।

उप प्रमुख शिवलाल डेहरी अपने समर्थकों के साथ बीजेपी में शामिल

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पाकुड़ : बुधवार को लिट्टीपाड़ा विधानसभा क्षेत्र से एनडीए समर्थित भाजपा उम्मीदवार बाबूधन मुर्मू की उपस्थिति में पाचुवाड़ा के पहड़िया टोला में आयोजित बैठक के दौरान उप प्रमुख शिवलाल डेहरी ने अपने सभी समर्थकों के साथ भारतीय जनता पार्टी की सदस्यता ग्रहण की। इस दौरान डल अध्यक्ष आशीष हेमब्रम , ST मोर्चा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य साहेब हसदा , ST मोर्चा महामंत्री बिहारी मरांडी पाचुवाड़ा पंचायत सह संयोजक प्रेम तुरी सहित कई अन्य लोग उपस्थित रहे। मुर्मू ने सभी सदस्यों का अभिनंदन करते हुए कहा कि भाजपा परिवार के साथ हर रोज बड़ी संख्या में आमलोग जुड़ रहे है, यह एक सुखद संकेत है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाति है कि लिट्टीपाड़ा में परिवर्तन होने जा रहा है। पार्टी के प्रति लोगों का बढ़ता भरोसा सभी कार्यकताओं को प्रोत्साहित भी कर रहा है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय जनता पार्टी में किसी के साथ भेदभाव नहीं होता, यहां सभी का सम्मान होता है और सभी को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। आप सभी की एकजुटता और कर्मठता हमें प्रचंड जीत दिलाएगी।

ग्रामीण इलाकों में मनाया जा रहा है लोक आस्था का महापर्व छठ

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

बरहरवा : नगर सहित प्रखंड के ग्रामीण इलाकों में लोक आस्था व नियम निष्ठा का चार दिवसीय महापर्व छठ के दुसरे दिन बुधवार को देर शाम में छठ व्रतियों के द्वारा भगवान सूर्य और छठ मइया की भक्ति भाव आराधना कर भोग चढ़ाने के वाद छठ व्रती ने खरना किया। वहीं गुरुवार को बरहरवा नगर के झालदिग्धी, मंडल पोखर, मुंशी पोखर, कल पोखर, पोद्दो पोखर, चंडीपुर, कालीतल्ला पोखर, पम्पिया पोखर, कन्हैया भगत पोखर, नील पोखर, अस्मल्ला पोखर, तारापोखर, बेतिया पोखर, थाना पोखर सहित प्रखंड के कोटालपोखर झरना मंडप, राजा पोखर, हाटपाड़ा पोखर, मयुरकोला में दुर्गा मंदिर पोखर, कुसुम पोखर, के आलावा बिजयपुर, बड़ा सोनाकड़, जामबाद, अंगुठिया, विशनपुर, महाराजपुर, भीमपाड़ा, मोगलपाड़ा, रिसौड़, पथरिया , फुलचुवां, शुकरबासनी झील बिंदु पाड़ा, भावनंदपुर गंगा घाट सहित अन्य दर्जनों गांव के छठ व्रतियों के द्वारा अपने अपने गांव के निकट तलाब व नदियों में भक्ति व श्रद्धा पूर्वक अस्ताचलगामी और शुक्रवार को उदयमान सुर्य भगवान को अर्ध्य देखकर छठव्रती महापर्व छठ पूजा का समापन होगा। इधर विभिन्न छठ पूजा कमिटी की ओर से छठ घाट की साफ सफाई और आकर्षक पंडाल का निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया है। छठ पूजा को लेकर स्वच्छ वातावरण में भक्ति का माहौल बना हुआ है। प्रशासन ने छठ पर्व को अच्छी तरह से मनाने के लिए व्यापक सुरक्षा के इंतजाम किए हैं। छठ पर्व को लेकर थाना प्रभारी बरहरवा सुमित कुमार सिंह, तथा पुलिस इंस्पेक्टर सुधीर कुमार पोद्दार, को विभिन्न छठ घाट में निरीक्षण करते देखा गया।

उपायुक्त ने पोस्टल बैलेट से चल रही मतदान प्रक्रिया का किया निरीक्षण

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

साहिबगंज : जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त हेमंत सती द्वारा समाहरणालय परिसर में पोस्टल बैलेट से चल रहे मतदान प्रक्रिया का निरीक्षण किया। इस दौरान उपायुक्त ने समाहरणालय परिसर के उतरी भाग, समाहरणालय परिसर दक्षिणी भाग में 85 तामर, 63 रांची, 64 हटिया, 65 कांके विधानसभा क्षेत्रों हेतु बनाए गए केन्द्रों का निरीक्षण करते हुए संबंधित पदाधिकारियों को आवश्यक व उचित दिशा-निर्देश दिया गया। जिला निर्वाचन पदाधिकारी-सह-उपायुक्त ने 05 से 09 नवम्बर तक चलने वाले पोस्टल बैलेट से हो रहे मतदान को लेकर भारत निर्वाचन आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का शत प्रतिशत अनुपालन सुनिश्चित करने का संबंधित पदाधिकारियों को दिया। साथ ही अबतक हुए मतदान की जानकारी के अलावा हेल्प डेस्क के माध्यम से मतदाताओं को मदद किए जाने तथा वीडियोग्राफी आदि की उपलब्धता से अवगत हुए। जिला निर्वाचन पदाधिकारी- सह- उपायुक्त ने चुनाव कार्य में प्रतिनियुक्त सभी कर्मियों को निर्देश दिया कि वे अपने मत का प्रयोग अवश्य करें। ज्ञात हो कि पोस्टल बैलेट से मतदान हेतु केन्द्रों पर मतदानकर्मी, पुलिस बल व गृह रक्षक, अनिवार्य सेवा, अन्य श्रेणी, वोटर ऑन इलेक्शन ड्यूटी के लिए पोस्टल बैलेट सुविधा केन्द्र बनाया गया है।

झारखंडी अस्मिता को बचाने का संकल्प लेकर आया हूं आप सभी रामचंद्र को जीत का आशीर्वाद दें : सुदेश महतो

- घुसपैठियों को भगाना है तो एनडीए की सरकार बनाना है : चम्पाई सोरेन
- माटी बेटी और रोटी की सुरक्षा की गारंटी एनडीए के ही हाथों में है : विद्युत वरण महतो
- झारखंड की सभ्यता-संस्कृति और स्वाभिमान की रक्षा सिर्फ एनडीए करेगा : सहिस

प्रत्यूष नवबिहार संवाददाता

पटमदा : बुधवार को आजसू प्रत्यासी रामचंद्र सहीस के पक्ष में बोड़ाम स्थित बाजार मैदान में एक सभा का आयोजन हुआ जिसमे ताबड़तोड़ प्रचार प्रसार करते हुए लोगों से अपने पक्ष के मतदान करने की अपील किए साथ ही झारखंड प्रदेश में एनडीए को मजबूत करने और झारखंडी जनमानस की सभ्यता संस्कृति और स्वाभिमान के रक्षा के लिए एनडीए को मतदान करने की बात कही साथ ही सहीस ने यह भी कहा कि पूरे झारखंड में झामुमो, कांग्रेस और राजद के आलावे सभी गठबंधन के नेता जमानत पर है और सरकार बनाने की जुगाड में लगे है लेकिन जैसे ही सरकार एनडीए की बनेगी सभी जमानत धारी नेता जेल की सलाखों में होंगे क्योंकि इनलोगो इस राज्य को लुटा और बेचने का कार्य किया है , ऐसे बहुरूपियों से सावधान रहने की जरूरत है क्योंकि जबतक ऐसे लोभी लोग जनता को लूटते रहेंगे तबतक इस राज्य का भला नहीं हो सकता है । उक्त अवसर पर जिला अध्यक्ष कन्हैया सिंह ने कहा कि पूर्व विधायक के द्वारा किए कार्य का श्रेय लेकर अपनी राजनीतिक रोटी सेक रहे है लेकिन उनके कार्य पद्धति सिर्फ जमीन दलाली शराब दलाली और बालू की अवैध निकासी का कार्य करने में मशगूल है साथ ही स्थानीय व्यापारियों से भी रंगदारी वसूलने में मशगूल है एसे विधायक से जनता त्रस्त है जो आगामी 13 नवम्बर को केला छाप पर बटन दबा के विधायक के रूप में एनडीए समर्थित उम्मीदवार रामचंद्र साहस को जीत दिलाने का कार्य करेंगे । कार्यक्रम में झारखंडी लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मंच के जिला उपाध्यक्ष उज्वल महतो के संग सैकड़ों युवा साथी पार्टी की सदस्यता लिए उक्त अवसर पर पार्टी के जिला अध्यक्ष कन्हैया सिंह, आदित्य महतो, वनविहारी महतो, श्याम कृष्ण महतो, मुचीराम बाउरी, अनिल मोदी, प्रकाश महतो, अप्पू तिवारी, सचिन महतो, रामकृष्ण महतो, रमानाथ महतो, अजीत महतो, समेत अन्य मौजूद रहे ।

संक्षिप्त खबरें

सिविल सर्जन ने सदर अस्पताल का किया निरीक्षण

साहिबगंज : बुधवार को सिविल सर्जन साहिबगंज डॉ प्रवीण कुमार संथालिया के द्वारा सदर अस्पताल साहिबगंज का औचक निरक्षण किया गया। सिविल सर्जन और डी एस मोहन मुर्मू साथ में निरीक्षण के क्रम में ओपीडी में डॉक्टर की उपस्थिति, ओपीडी पंजी, फलेरिया क्लिनिक, डॉट्स क्लिनिक, ए एफ एच सी सेंटर, आईपीडी, प्रसव कक्ष, साफ-सफाई आदि को देखे। सिविल सर्जन साहिबगंज के द्वारा उपस्थित मेडिकल ऑफिसर, पारा मेडिकल कमीर्यों को मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करने, सभी सूचकांक को सुधारने, डाटा का ससमय प्रविष्टि आदि का निर्देश दिया गया। मौके पर डी एस डॉ मोहन मुर्मू, डॉ केशव कृष्णा, मेडिकल ऑफिसर, क्लर्क, एवं अन्य स्वास्थ्य कर्मी मौजूद रहे।

भाजपा प्रत्याशी अनन्त ओझा ने किया जनसंपर्क

साहिबगंज: राजमहल विधानसभा से भाजपा प्रत्याशी अनन्त कुमार ओझा बुधवार को उधवा प्रखंड के राधानगर,दक्षिण बेगमगंज,श्रीधर सहित कई स्थानों पर जनसंपर्क करके भाजपा के पक्ष में मतदान करने के लिए आग्रह किया। विधायक ने कहा कि उधवा प्रखंड और दियारा क्षेत्र का विकास दस वर्षों में तेजी गति से हुआ हैं पहले दियारा क्षेत्र की सड़के का क्या हालत था अब कैसे सड़के हैं आप देख हैं, ये आपका दिया हुआ आशीर्वाद के कारण सम्भव हो पाया हैं। जिस प्रकार से एक अरब की अधिक की लागत से उधवा प्रखंड में सड़क का निर्माण,बिजली अब 22 घंटे मिल रही हैं,पानी के लिए जलमिनार का निर्माण कराया गया,गंगा कटाव का काम हुआ है। कहा कि उधवा में मॉडल डिग्री कॉलेज, स्टेडियम सहित कई विकास कार्य का काम हेमन्त सोरेन सरकार ने रोककर रखा हैं। भाजपा सरकार बनते ये काम एक साल के अंदर पूरा होगा। इस अवसर पर रहे राजेश मंडल, बेचन मंडल, धनंजय मण्डल,सनातन मंडल, कमलेश मंडल,तमाल मंडल अन्य लोग मौजूद रहे।

महिला के हाथ को काट कर फरार होने वाले आरोपी ने न्यायालय में किया आत्मसमर्पण

साहिबगंज: जिरवाबाड़ी थाना क्षेत्र अंतर्गत बीते दिनों 02 नवंबर 24 को रात्रि में लोहंडा निवासी लक्ष्मी देवी के पति वीर कुमार मुंडा एवं उसका दोस्त प्रताप उरांव के द्वारा लक्ष्मी देवी का हाथ काटने की घटना को अंजाम दिया गया था। इस संबंध में जिरवाबाड़ी थाना द्वारा कांड संख्या - 165/24 दर्ज करते हुए दोनों अभियुक्तों के विरुद्ध गिरफ्तारी हेतु लगातार छापामारी की जा रही थी। पुलिस के दबिश से अभियुक्त प्रताप उरांव ने न्यायालय में आत्मसमर्पण किया है, जो न्यायिक हिरासत भेजा गया है। जहां गिरफ्तारी हेतु बचे हुए एक अन्य अभियुक्त पीड़िता के पति वीर कुमार मुंडा के विरुद्ध लगातार छापामारी की जा रही है। पुलिस प्रशासन के द्वारा जल्द ही दूसरे अन्य अभियुक्त को धर दबोच लिया जाएगा।

फ्लाइंग दस्ता की टीम ने चलाया सघन वाहन जांच अभियान

बरहरवा: फ्लाइंग दस्ता टीम के द्वारा मनरेगा एसडीओ अरविंद मुर्मू ने दलबल के साथ बुधवार को बरहरवा थाना क्षेत्र के विभिन्न चेक नाका पर संघन वाहन जांच अभियान चलाया। इस दौरान उन्होंने चेक नाका पर तैनात डंडा अधिकारियों को नियमित रूप से वाहन जांच करने को लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। इस दौरान उनके साथ एस एस टी के दंडाधिकारी सनथ टुडू एवं अब्दुल्लाह शेख के आलावे बरहरवा थाना के अवर निरीक्षक एवं जैप के जवान भी उपस्थित थे। जांच के दौरान किसी प्रकार की कोई आपत्तिजनक सामग्री बरामद होने की सूचना नहीं मिली है। मालूम हो कि विधानसभा चुनाव को लेकर फ्लाइंग दस्ता की टीम लगातार बंगाल सीमा से लगते बैरिकेडिंग पर नियमित रूप से संघन वाहन जांच चला रही है। मंगलवार एवं बुधवार को की गई जांच उसी का एक हिस्सा है।

अवैध शराब पर रोक लगाएं, वारंटियों को गिरफ्तार करें : आईजी

साहिबगंज : संथाल परगना क्षेत्र के आईजी कांति कुमार बुधवार को साहिबगंज पहुंचे। पुलिस लाइन में मेजर की अगुवाई में उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर पेश किया गया। आईजी ने पुलिस लाइन सभागार में पुलिस अधिकारियों व थाना प्रभारियों के साथ समीक्षा बैठक की। विधानसभा चुनाव शांति व भयमुक्त वातावरण में संपन्न कराने के लिए जरूरी दिशा-निर्देश दिए। कहा कि अवैध शराब की बिक्री पर पूरी तरह रोक लगाएं। शराब के धंधेबाजों पर नजर रखें और उन्हें गिरफ्तार करें। विधानसभा चुनाव से पहले वारंटियों को गिरफ्तार कर जेल भेजें। अवैध हथियार रखने वालों को भी पकड़कर जेल में डालें। आईजी ने पुलिस अधिकारियों को सूचना तंत्र मजबूत करने, सुरक्षा व्यवस्था चाक-चौबंद बनाने व दियारा क्षेत्र में विशेष चौकसी बरतने का निर्देश दिया। कहा कि चुनाव के दौरान जिले में अतिरिक्त पुलिस फोर्स की तैनाती होगी। अर्ध सैनिक बल पहले से ही मुस्तैद हैं। सरकार से अतिरिक्त फोर्स की मांग की गई है। मतदान के दौरान संवेदनशील व अति संवेदनशील बूथों पर फोर्स की तैनाती सुनिश्चित कराने का निर्देश दिया। बैठक में एसपी अमित कुमार सिंह, डीएसपी मुख्यालय, सभी एसडीपीओ व थाना प्रभारी मौजूद थे।

पटना के इस थाने में लगी भीषण आग

अंदर फंसे पुलिसकर्मी; फायर ब्रिगेड की टीम पर आग पर काबू पाने में जुटी

पटना। पत्रकार नगर थाने में भीषण आग लग गई है। कुछ पुलिसकर्मी अंदर फंसे हुए हैं। इधर, सूचना मिलते ही फौरन फायर ब्रिगेड की टीम थाना परिसर पहुंची और आग पर काबू पाने में जुट गई है। बताया जा रहा है कि पहले थाने के मालखाना में आग लग गई। जब तक आग पर काबू पाया जाता, तब तक आसपास के कमरे भी आग की जद में आ गए। फायर ब्रिगेड की टीम पहुंची लेकिन तब तक मालखाना का सारा सामान जलकर खाक हो गया। फायर ब्रिगेड की टीम आग पर काबू पाने में जुटी है। बताया जा रहा है

कि बिल्डिंग में 50 से ज्यादा पुलिसकर्मी मौजूद थे। पांच पुलिसकर्मी आग की लपटों के बीच फंस गए। इनमें से चार को फायर ब्रिगेड की क्रेन की मदद से निकाला गया। एक पुलिसकर्मी छत पर फंसे थे। उन्हें भी क्रेन की मदद से बाहर निकाल लिया गया। नुकसान का आकलन किया जा रहा जिला अग्निशमन पदाधिकारी मनोज नट बताया कि आग पर काबू पा लिया गया है। अंदर फंसे पुलिसकर्मियों को सुरक्षित बाहर निकाल गया गया है। समय रहते फायर ब्रिगेड की टीम पहुंचे गई नहीं तो बड़ा हादसा हो सकता था। कितने मूल्य की संपत्ति का नुकसान हुआ है? इसका आंकलन किया जा रहा है। जांच के बाद ही आग लगने की वजहों का पता चल पाएगा। थाना परिसर में मौजूद पुलिसकर्मियों से पूछताछ चल रही है। शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी वहीं घटना के वक्त थाना परिसर में मौजूद पुलिसकर्मी दीपक कुमार ने बताया कि हम खाना बना रहे थे। अचानक नीचे से आग की लपटें उठने लगीं। हमलोग फौरन दौड़ पड़े। जब तक कुछ समझ पाते तब तक आग पूरी तरह फैसल चुकी थी। इसके बाद फायर ब्रिगेड की मदद से सभी लोगों को बाहर निकाल लिया गया। पुलिसकर्मियों का कहना है कि शॉर्ट सर्किट की वजह से लगी है।

संक्षिप्त डायरी

यमुने नदी में व्यक्ति का शव मिलने से छठ पर्व की खुशी मातम में बदली, पुलिस जांच में जुटी

जहानाबाद। जहानाबाद जिले के मखदुमपुर प्रखंड स्थित खलकोचक गांव में उस समय मातमी माहौल छा गया, जब गांव के ही एक व्यक्ति का शव यमुने नदी में उतराते हुए मिला। छठ महापर्व के दौरान पूरे गांव में खुशी का माहौल था, लेकिन रामदेव पासवान का शव मिलने के बाद से गांव में मातम छा गया है। ग्रामीणों ने शव को बाहर निकाला और तुरंत मखदुमपुर थाना पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए जहानाबाद सदर अस्पताल भेज दिया है। परिजनों ने की खोजबीन, नदी में तैरता मिला शव मृतक के परिजन निरंजन पासवान ने बताया कि रामदेव पासवान ने सोमवार की रात घर से शौच के लिए बाहर जाने की बात कही थी। लेकिन जब वह देर रात तक वापस नहीं लौटे, तो परिजनों और ग्रामीणों ने उनकी खोजबीन शुरू की। किसी तरह का सुराग न मिलने पर पुलिस को सूचना दी गई। मंगलवार सुबह यमुने नदी में उनका शव मिला, जिसे ग्रामीणों ने काफी मशक्कत के बाद बाहर निकाला। मृतक अपने परिवार का इकलौता कमाने वाला सदस्य रामदेव पासवान अपने परिवार का इकलौता कमाने वाले व्यक्ति थे। वह मजदूरी करके अपने परिवार का भरण-पोषण करते थे। उनकी मृत्यु से परिवार में गहरा शोक है और परिवार के लिए यह समय बेहद कठिन है। उनकी मौत के बाद पूरे गांव में छठ का पर्व गमगीन माहौल में बदल गया है। छठ पर्व के बीच परिजन शोक में डूबे छठ के इस पवित्र पर्व के दौरान गांव में पहले जहां आस्था और उल्लास का माहौल था, अब रामदेव पासवान की मौत के कारण सभी के चेहरों पर उदासी और शोक का माहौल है। गांव के लोगों का कहना है कि रामदेव पासवान की मौत ने पूरे पर्व की खुशियों को गम में बदल दिया है।

घर पर दर्शन के लिए रखी गई पार्थिव देह, सीएम नीतीश ने दी श्रद्धांजलि

पटना। बिहार की मशहूर लोक गायिका शारदा सिन्हा का पार्थिव शरीर पटना के राजेन्द्र नगर स्थित आवास पर लाया गया है। सीएम नीतीश कुमार ने घर पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कल (गुरुवार) को उनका अंतिम संस्कार पटना के गुलबी घाट पर राजकीय सम्मान के साथ होगा। बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा गुरुवार शाम शारदा सिन्हा के राजेन्द्र नगर स्थित घर जाकर उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। मंगलवार रात दिल्ली अक्सर में शारदा सिन्हा का निधन हो गया। वे 72 साल की थीं। छठ के गाए उनके गीत बेहद मशहूर हुए और इस पर्व के पहले ही दिन उन्होंने अंतिम सांस ली। दिल्ली अक्सर ने बताया कि सेप्टिसीमिया (ब्लड इंफेक्शन) की वजह से शारदा सिन्हा की मौत हुई। 26 अक्टूबर को तबीयत बिगड़ने के बाद उन्हें दिल्ली अक्सर में भर्ती कराया गया था। 3 नवंबर को हालत में सुधार होने पर प्राइवेट वार्ड में शिफ्ट किया गया। लेकिन 4 नवंबर की शाम उनका ऑक्सीजन लेवल गिरने लगा, इसके बाद से वे वेंटिलेटर पर थीं। शारदा सिन्हा के निधन पर पीएम मोदी ने कहा- उनके (शारदा) गाए मैथिली और भोजपुरी के लोकगीत कई दशकों से बेहद लोकप्रिय रहे हैं। महापर्व छठ से जुड़े उनके गीतों की गूंज भी सदैव बनी रहेगी।

पीएम मोदी से सीएम नीतीश कुमार तक शारदा सिन्हा को लेकर चिंतित थे, निधन की खबर से सभी दुखी

बिहार। छठ हर्षोल्लास का पर्व है। लेकिन, छठी मइया की पूजा के पहले दिन इस बार छठ गीतों का पर्याय रहीं शारदा सिन्हा के निधन की खबर से सदमा जैसा हरेक घर तक पहुंचा है। यह शारदा सिन्हा की पहचान थीं। पद्म विभूषण शारदा सिन्हा को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार चिंतित थे। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार लगातार अपडेट ले रहे थे। हर तरह की सुविधा का आश्वासन मिला हुआ था। देखने के लिए, केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह एम्स दिल्ली में उनके परिजनों के पास भी पहुंचे। लेकिन, अब हर तरफ से निधन पर दुःख जताने वाला संदेश आ रहा है।

पीएम ने आज भी लिया था अपडेट, सीएम ने कहा- बिहार और संगीत की क्षति प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार एम्स के डॉक्टरों के संपर्क में थे। अपडेट ले रहे थे। परिजनों को भी उम्मीद बंधा रहे थे। लेकिन, अब वह भी दुखी हैं। दुखों का पहाड़ बिहार के लोगों पर टूटा है,

क्योंकि छठ के समय ही छठ गीतों का पर्याय रहीं शारदा सिन्हा छोड़कर चली गईं।

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अपने शोक संदेश में कहा कि बिहार कोकिला शारदा सिन्हा मशहूर लोक गायिका थीं। उन्होंने मैथिली, बज्जिका, भोजपुरी के अलावा हिन्दी गीत भी गाये थे। उन्होंने कई हिन्दी फिल्मों में भी अपनी मधुर आवाज दी थी। संगीत जगत में उनके योगदान के लिए भारत सरकार ने 1991 में पद्मश्री और 2018 में पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया था।

स्व. शारदा सिन्हा ने छठ महापर्व पर सुरीली आवाज में गाए मधुर गाने बिहार और उत्तर प्रदेश समेत देश के सभी भागों में गूंजा करते हैं। उनके निधन से संगीत के क्षेत्र में अपूरणीय क्षति हुई है। मुख्यमंत्री ने स्व. शारदा सिन्हा की आत्मा की चिर शान्ति तथा उनके परिजनों, प्रशंसकों एवं अनुयाइयों को दुःख की इस घड़ी में धैर्य धारण करने की शक्ति प्रदान करने की ईश्वर से प्रार्थना की है।

शोक संवेदना जता रहा हर वर्ग सोशल मीडिया पर शारदा सिन्हा को श्रद्धांजलि दी जा रही है। इधर, भाजपा के संस्थापकों में रहे पूर्व राज्यसभा सांसद आरके सिन्हा, पटना के सांसद रविशंकर प्रसाद, पाटलिपुत्र के पूर्व सांसद रामकृपाल यादव, भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री ऋतुराज सिन्हा, भाजपा सांसद मनोज तिवारी कांग्रेस नेता सूरज सिन्हा समेत सैकड़ों नेताओं का शोक संदेश प्राप्त हो रहा है। राजद प्रवक्ता चित्तरंजन गगन ने लोक गायिका पद्मविभूषण शारदा सिन्हा के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा है कि अपने गाये छठ गीतों से लोक आस्था के महापर्व छठ को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक नयी पहचान देने वाली शारदा सिन्हा का निधन छठ अनुष्ठान के दौरान हीं होना इस पर्व के प्रति उनके आत्मीय लगाव को दर्शाती है।

नो फ्लाइंग जोन घोषित हुआ राजगीर हॉकी खेल परिसर

11 नवंबर से 20 नवंबर तक लागू रहेगा प्रतिबंध, खेल के दौरान तैनात रहेंगे अतिरिक्त सुरक्षा बल

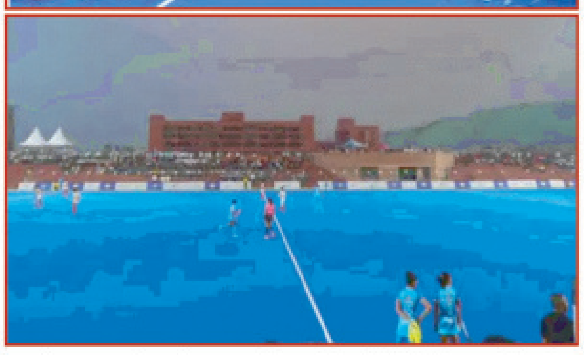

नालंदा। राजगीर में आगामी एशियाई महिला हॉकी चैंपियनशिप के मद्देनजर प्रशासन ने कड़ी सुरक्षा व्यवस्था का ऐलान किया है। जिला न्यायाधीश शशांक शुभंकर ने खेल परिसर को 'नो फ्लाइंग जोन' घोषित करते हुए ड्रोन उड़ाने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया है। 11 से 20 नवंबर तक चलने वाली इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में बड़ी संख्या में दर्शकों के आने की संभावना को देखते हुए यह निर्णय लिया गया है। नालंदा के पुलिस अधीक्षक की अनुशंसा पर जारी किए गए आदेश के अनुसार संपूर्ण खेल परिसर को ड्रोन नियम-2021 के तहत 'रेड जोन' घोषित किया गया है।

नो फ्लाइंग जोन घोषित हुआ खेल परिसर सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। किसी भी मानवरहित हवाई वाहन के संचालन की अनुमति नहीं होगी। विशेष परिस्थितियों में ड्रोन उड़ाने के लिए सक्षम प्राधिकार से पूर्व अनुमति आवश्यक होगी। यह प्रतिबंध 11 नवंबर सुबह 5 बजे से 20 नवंबर रात 10 बजे तक प्रभावी रहेगा। आदेश का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता-2023 की धारा-223 के तहत कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन द्वारा इस आदेश का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जा रहा है। विशेष रूप से, यह टूर्नामेंट न केवल भारतीय महिला हॉकी के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि राजगीर के पर्यटन को भी बढ़ावा देने की उम्मीद है। स्थानीय प्रशासन ने आसपास के जिलों से आने वाले दर्शकों के लिए विशेष परिवहन और आवास की व्यवस्था की योजना भी बनाई है। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि टूर्नामेंट के दौरान अतिरिक्त सुरक्षा बल तैनात किए जाएंगे।

4 पुलिस वालों को सुरक्षित निकाला गया, एक का छत से रेस्क्यू हुआ, मालखाना जलकर राख

पटना। पत्रकार नगर थाने में बुधवार को आग लग गई। फायर ब्रिगेड की 12 गाड़ियों की मदद से 2 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया गया। बिल्डिंग के ग्राउंड फ्लोर पर थाना है और ऊपर पुलिसकर्मी परिवार के साथ रहते हैं। बताया जा रहा है कि जिस वक्त आग लगी बिल्डिंग में 50 से ज्यादा पुलिसकर्मी मौजूद थे। 5 पुलिस वाले आग की लपटों के बीच फंस गए थे। इनमें से 4 को फायर ब्रिगेड की क्रेन की मदद से निकाला गया। एक पुलिसकर्मी छत पर फंसा था। कड़ी मशक्कत के बाद उसे भी रेस्क्यू किया गया। थाने के अंदर मालखाना जलकर खाक

हो चुका है। डॉक्यूमेंट्स भी जल गए हैं। फायर डिस्ट्रिक्ट ऑफिसर मनोज नट बताया कि 'आग भयावह थी, समय से टीम नहीं पहुंचती तो हादसा बड़ा हो सकता था। नुकसान का आंकलन किया जा रहा है। जांच के बाद ही आग लगने की वजहों का पता चल पाएगा।' आग में फंसे पुलिसकर्मी दीपक ने बताया कि 'हम खाना बना रहे थे। नीचे से आग की लपटें उठ रही थीं। शॉर्ट सर्किट से आग लगी थी। 10 से ज्यादा लोग फंसे थे सभी को निकाल लिया गया है। थाने के पास रहने वाले दुकानदार मुन्ना ने बताया कि 'सुबह एकदम से थाने से लपटें उठ रही थीं। आसपास के लोगों की मदद से आग बुझाने की कोशिश करने लगे। इसके बाद फायर ब्रिगेड को सूचना दी गई। थाने में पुलिस वाले परिवार के साथ रहते थे। कई पुलिस वालों को हमने बाहर निकाला।'

नालंदा त्रिवेणी धाम में उमड़ेगा आस्था का जनसैलाब

संगम स्थल पर व्रतियों को मिलेगी सुविधा, सजावट के साथ घाट तैयार

नालंदा। गिरियक प्रखंड के ऐतिहासिक त्रिवेणी धाम में छठ महापर्व को लेकर भव्य तैयारियां कर ली गई हैं। यह तीन पवित्र नदियों के संगम स्थल है। जहां छठ पर्व करने के लिए लोगों की खूब भीड़ उमड़ती है। जिसे ग्रामीणों ने सजाकर तैयार कर दिया है। त्रिवेणी धाम छठ पूजा समिति के अध्यक्ष एवं चोरसुआ पंचायत के मुखिया चंदन कुमार ने बताया कि इस वर्ष पूजा की व्यवस्थाएं पिछले वर्षों की तुलना में और भी बेहतर की गई हैं। नालंदा लोकसभा सांसद कौशलेंद्र कुमार के विशेष सहयोग से निर्मित विशाल छठ घाट पर व्रतियों की सुविधा का पूरा ध्यान रखा गया है। आधुनिक चेंजिंग रूम, भव्य सजावट और रोशनी व्यवस्था, सेल्फी पॉइंट, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, प्रशिक्षित गोताखोर,मनोरंजन के लिए झूले आदि की व्यवस्था की गई है। स्थानीय त्रिवेणी धाम फिजिकल अकादमी के युवाओं ने घाट की साफ-सफाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्रीय वीर नवयुवक संघ की ओर से निशुल्क चाय वितरण की व्यवस्था की गई है।

जगमगाते दीपों के बीच व्रतियों का स्वागत समिति के सचिव अशोक कुमार ने बताया कि द्वितीय अर्घ्य के प्रातःकाल में पंचायत की सभी गलियों में दीपदान की परंपरा विशेष आकर्षण का केंद्र होगी। हर गली में जगमगाते दीपों के बीच व्रतियों का स्वागत एक अद्भुत दृश्य होगा। इस आयोजन को सफल बनाने में संजीव कुमार, राकेश कुमार, उदय शंकर पंडित, सत्येंद्र कुशवाहा, दीपक कुमार, सूरज कुमार समेत कई स्थानीय कार्यकर्ताओं का योगदान सराहनीय रहा है। छठ पूजा समिति ने सभी श्रद्धालुओं से सुरक्षा नियमों का पालन करने की अपील की है। पुलिस प्रशासन की ओर से भी पर्याप्त सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

खरना का प्रसाद खाकर 36 घंटे का निर्जला व्रत आरंभ करेंगी व्रती

पटना। लोक आस्था के महापर्व छठ आज यानी बुधवार दूसरा दिन है। नहाय-खाय के बाद व्रती खरना का प्रसाद ग्रहण है। इस दिन शाम को गुड़ और चावल की खीर बनाकर उसका भोग लगाया जाएगा। महिलाएं निर्जला व्रत रखकर अगले दिन यानी गुरुवार शाम को अस्ताचलगामी सूर्य को अर्घ्य देंगी और शुक्रवार को उगते हुए सूर्य को अर्घ्य देकर संतान और परिवार के लिए मंगल कामना करेंगी। छठ पूजा के दूसरे दिन खरना पूजा का भी विशेष महत्व होता है। खरना छठ पूजा के सबसे महत्वपूर्ण पूजा दिनों में से एक है। इस दिन छठी मैया का आगमन होता है जिसके बाद भक्त 36 घंटे का निर्जला उपवास शुरू करते हैं। इस साल खरना पूजा पर विशेष

संयोग बन रहा, जिसे ज्योतिष काफी शुभ मान रहे। आइए जानते हैं आज खरना का शुभ मुहूर्त पूजा विधि और महत्व के बारे में। जानिए, कब से कब तक है खरना पूजा का मुहूर्त बुधवार सुबह 04:59 बजे से 05:52 बजे तक ब्रह्म मुहूर्त है। सूर्योदय सुबह 06:45 बजे पर हुआ और सूर्यास्त का समय शाम 09:26 बजे है। पंडित अनंत चौधरी की मानें तो इस साल खरना पूजा मूल नक्षत्र में बन रहा है, जिसे सनातन में काफी शुभ माना गया है। खरना पूजा का शुभ मुहूर्त शाम 05:29 से 07:48 तक है। पूर्वाषाढ़ नक्षत्र के साथ सुकर्मा योग बन रहा है। इस नक्षत्र में खरना पूजा करने से घर में सुख-समृद्धि आती है। इस शुभ मुहूर्त में पूजा करने से व्रतियों को विशेष फल और आशीर्वाद मिलता है।

छठ खरना पूजा में किनकी आराधना होती है? छठ पूजा के दूसरे दिन को खरना कहा जाता है। इस बार खरना छठ नवंबर यानी बुधवार को है। कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी तिथि को खरना का प्रसाद बनाया जाता है। इस दिन माताएं दिनभर व्रत रखती हैं और पूजा के बाद खरना का प्रसाद खाकर 36 घंटे के निर्जला व्रत का आरंभ करती हैं। इस दिन मिट्टी के चूल्हे में आम की लकड़ी से आग जलाकर प्रसाद बनाया जाता है।

छठ का पहला अर्घ्य और दूसरा अर्घ्य कब है? छठ पूजा के तीसरे दिन शाम के समय नदी या तालाब में खड़े होकर अस्त होते सूर्य देव को अर्घ्य दिया जाता है। इस बार सात नवंबर यानी गुरुवार को पहला अर्घ्य दिया जाएगा। इसमें बांस के सूप में फल, गन्ना, चावल के लड्डू, ठेकुआ सहित अन्य सामग्री रखकर पानी में खड़े होकर पूजा की जाती है। छठ पूजा के चौथे और आखिरी दिन उगते हुए सूर्य को अर्घ्य दिया जाता है। इस बार आठ नवंबर यानी शुक्रवार को दूसरा अर्घ्य दिया जाएगा। इस दिन व्रती अपने व्रत का पारण करते हैं। साथ ही अपनी संतान की लंबी उम्र और अच्छे भविष्य की कामना करते हैं।

आस-पास भी बहुत कुछ

ऊटी व आस-पास घूमने के लिए हमने एक दिन के लिए छोटी बस किराये पर ली थी। मानसून में ऑफ सीजन होता है, तो हमें यह बेहद कम दाम में उपलब्ध हो गई। ऊटी में तो हम जगह-जगह घूमे ही, ऊटी के आस-पास भी बहुत-से ऐसे स्थान थे जहां जाकर हम रोमांचित हुए बिना नहीं रह सके। पहले जिक्र करते हैं ऊटी से आठ किलोमीटर दूर और समुद्र तल से 2623 मीटर की ऊंचाई पर स्थित डोडाबेटा शिखर की। यहां पूर्वी व पश्चिमी घाटों का मिलन होता है। यहां से नीलगिरी पहाड़ियों का अकल्पनीय दृश्य नजर आता है। डोडाबेटा शिखर शोला वनों से घिरा है। पर्यटन विभाग ने यहां एक दूरबीन भी लगा रखी है।

यूं लगा जन्नत में है ऊटी

मुन्नार की मखमली खूबसूरती से तीन दिन तक रू-ब-रू रहने के बाद हमारी टोली ऊटी के लिए रवाना हुई तो एक उदासी-सी मन में थी। एक तो जन्नत जैसे मुन्नार से हम विदा ले रहे थे जहां से वापस आने का दिल शायद ही किसी का करे। दूसरे, मन में यह सवाल बार-बार सिर उठा रहा था कि मुन्नार को देखने के बाद ऊटी कहीं फीका लगा और अगले दो दिन बेकार चले गए, तो? मुन्नार से कोयम्बटूर और वहां से आगे ऊटी जाने के लिए यूं तो अच्छी सडक है, पर चूंकि टोली में आठ-दस बच्चे और कुछ महिलाएं भी थीं, तो बेहतर यही था कि सडक के मुश्किल सफर के बजाय ऊटी तक की दूरी ट्रेन से तय की जाए। इस फैसले की वजह मेट्टुपालयम से ऊटी तक घुमावदार पहाडी रास्तों पर रेंगने वाली टॉय ट्रेन भी थी जो खासकर बच्चों के लिए मजेदार अनुभव होता।

एक सफर में दो रंग

ऊटी तक के ट्रेन के इस सफर को हम दो हिस्सों में बांट सकते हैं। पहला, मेट्टुपालयम से कुन्नूर। यहां ट्रेन स्टीम इंजन से चलती है। स्टीम इंजन है तो जाहिर है ट्रेन की चाल भी बेहद धीमी रहती है। कुन्नूर तक चढाई ज्यादा तीखी है जिसे स्टीम इंजन अपनी कछुआ चाल से बडी आसानी से तय कर लेता है। पूरा रास्ता चट्टानी है, रास्ते में ऊंचे पेड हैं और अनेक छोटे-बडे पुल भी। कुन्नूर इस रेलखंड का एक अहम स्टेशन है जहां गाडी काफी देर रुकती है। खाने-पीने के यहां बेहतर बंदोबस्त हैं। कुन्नूर में ट्रेन स्टीम इंजन का दामन छोडकर डीजल इंजन को अपना सारथी बनाती है, और शुरू हो जाता है सफर का दूसरा हिस्सा जो कहीं ज्यादा सुकून देने वाला है। कह सकते हैं कि ऊटी का असल रंग दिखना यहीं से शुरू होता है। चाय के तराशे हुए बौने पौधे ऊंचे पेडों की जगह ले लेते हैं। अभी तक जो गहरा हरा रंग आंखों तक पहुंच रहा था, उस पर लगता है जैसे प्रकृति ने दिल खोलकर धूप मसल दी हो। चारों तरफ खिली हुई हरियाली.. मन को प्रफुल्लित करती हरियाली। और इस हरियाली के बीच गर्व से सिर उठाए खडे छोटे-छोटे घर.. एक अलग ही दृश्य है यह, जो एक बार दिल पर छप गया तो फिर कभी धूमिल होने वाला नहीं।

बादलों का है अलग रिश्ता

समुद्र तल से 2240 मीटर की ऊंचाई पर स्थित ऊटी अंग्रेजों का समर रिजॉर्ट हुआ करता था। मूल रूप से यह इलाका टोडा जनजाति का घर है। उन्होंने अंग्रेजों को अपनी जमीन का एक बडा हिस्सा दे दिया था, जिस पर अंग्रेजों ने शहर बसाया। इस इलाके का असल नाम ऊटकमंड है, इसी को अंग्रेजों ने छोटा करके ऊटी कर दिया। हालांकि, अब शहर का आधिकारिक नाम उदगमंडलम है जो ऊटकमंड का तमिलीकरण है। पांच घंटे के सफर के बाद दिन में करीब 12 बजे ट्रेन उदगमंडलम स्टेशन पर जा लगी तो बूंदाबांदी हो रही थी। हम लोग मानसून के दौरान वहां गए थे। इस मौसम में बादलों का दिल कब हो जाए ऊटी को भिगोने का, कह नहीं सकते। बादलों का ऊटी से अलग ही रिश्ता है। जब-जब दिल करता है, ये बादल किसी बेसब्र प्रेमी की तरह आकर ऊटी को अपने आगोश में ले लेते हैं। इसका प्रमाण ऊटी की गोद में विचरण करते वक्त मिला। बादल चेहरे पर आ-आकर ठहरते और पानी के कण गालों पर छोडकर आगे निकल जाते। बारिश मुन्नार में भी खूब देखी हमने.. वहां भी बादल पहाडों व पेडों के साथ अठखेलियां करते दिखे। लेकिन वहां के अप्रतिम सौंदर्य को बादल अपने आलिंगन में नहीं लेते। मानो, कोई झिझक उन पर तारी रहती हो। लेकिन ऊटी में समीकरण अलग है। यहां बादल आएंगे तो पहले प्यार में डूबकर हर गोशे को छुएंगे और फिर भावुक होकर बरस पडेंगे।

खूबसूरत शहर

ऊटी की सुंदरता की किसी और जगह से तुलना बेमानी है। नीलगिरी की गोद में एक चुप्पी ओढे शहर की तस्वीर पेश करता है यह। बडे नाम वाले हिल स्टेशनों के मुकाबले जिंदगी बहुत तेज नहीं है यहां। ऊंचाई से देखो तो अंग्रेजी स्टाइल में बने घरों की छटा अलग ही है। घरों के जमावडे के बीच से झांकता वहां का मशहूर रेसकोर्स.. इसके अलावा हरे-भरे बाग, झील, गोल्फ कोर्स, स्टेशन परिसर.. हमने ऊटी का यह विहंगम नजारा डोडाबेटा टी फैक्टरी की बालकनी से देखा। यह दक्षिण भारत में सबसे ज्यादा ऊंचाई पर बनी टी-फैक्टरी है। पांच रुपये की टिकट पर चाय बनाने की प्रक्रिया यहां देख सकते हैं। ताजा चाय की महक में तलब लगना लाजिमी है। लीजिए, इलायची वाली चाय का कप भी हाजिर है आपके लिए। चुस्की लीजिए और तर-ओ-ताजा हो जाइए। यहां कई तरह की चाय बिक्री के लिए भी उपलब्ध है। हमारे साथियों ने कितनी खरीदारी की यहां, इसका पता बाहर आकर चला जब हरेक के हाथ में दो-दो थैले झूलते नजर आए।

लोकेशन

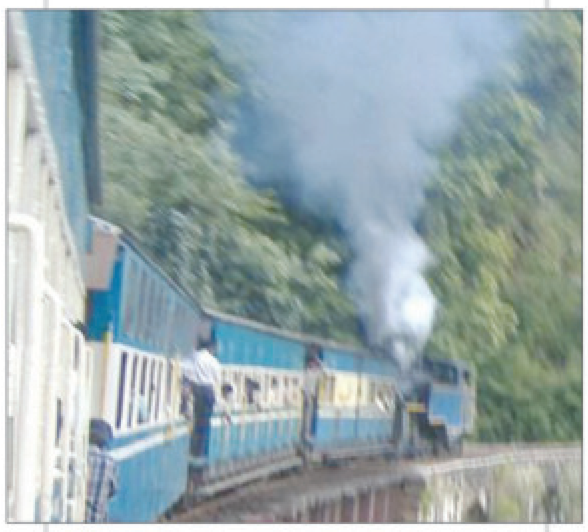

छुक-छुक रेलगाडी

मुन्नार को अलविदा कहकर हम बस से कोच्चि पहुंचे, जहां से कोयम्बटूर और फिर आगे मेट्टुपालयम तक हमें ट्रेन से जाना था। मेट्टुपालयम कस्बा कोयम्बटूर से 35 किलोमीटर की दूरी पर है और यहां तक बडी लाइन की ट्रेनें जाती हैं। सफर का असल रोमांच मेट्टुपालयम से शुरू होता है जहां से नैरोगेज लाइन पर चार डिब्बों वाली ट्रेन ऊटी के लिए निकलती है। नीलगिरी पहाडियों में चीड के पेडों के बीच से मंद गति से तय होता यह सफर बेहतरीन कुदरती नजारे हमारे सामने पेश कर रहा था। कहीं ऊंचाई से गिरते पानी का शोर था, कहीं पहाडों ने अपने हरे चोगे पर सफेद बादल कंगन की तरह टांग रखे थे, तो कहीं सांप की तरह रेंगती सडक हमसे आ मिलने को बेताब दिख रही थी। रास्ते में प्रहरी की तरह खडे ऊंचे पेड और कुछ पलों के लिए ट्रेन को निगल लेने वाली सुरंगें हमारे रोमांच को दूना करने में कोई कसर नहीं छोड रहे थे। जैसे ही ट्रेन सुरंग के अंधेरे में समाती, यात्रियों का जोशभरा शोर उस अंधेरे पर भारी पडता दिखता। इस पूरे सफर के दौरान दिक्कत थी तो सिर्फ एक, और वो यह कि इस छुटकी-सी ट्रेन में बैठने की जगह बेहद तंग थी। लेकिन इस दौरान अगर आप खुद को कुदरत के मोहपाश में जकडे रहने देते हैं तो इस दिक्कत का एहसास ही नहीं होता।

कई रंग हैं ऊटी में

हमारे सामने ऊटी शहर अपने विविध रंगों को लेकर शान से खडा था। घूमने-फिरने के लिए ऊटी में और इसके आस-पास कई जगहें हैं। ऊटी की बात करें तो सबसे पहले जिक्र झील का आएगा। स्टेशन से दो किलोमीटर की दूरी पर मौजूद इस कृत्रिम झील पर सैलानियों तथा छुट्टी बिताने आए स्थानीय लोगों की भीड हमें नजर आई। 190 साल पहले यह झील जॉन सुलिवन ने बनवाई थी। यहां पर नौका विहार का आनंद लेने से हम खुद को नहीं रोक पाए। नाव में आधे घंटे तक झील की सैर के दौरान कितने ही प्यारे-प्यारे नजारों ने हमें बांधे रखा। यहां नौका विहार के अलावा मनोरंजन के अन्य साधन भी हैं, खासकर बच्चों के लिए। टॉय ट्रेन आपको झील के किनारे-किनारे चक्कर कटाकर लाती है तो लेक गार्डन में थोडी देर सुस्ताना सारी थकान भगा देगा। इसके अलावा, खाने-पीने व शॉपिंग के भी यहां खासे विकल्प नजर आए। झील के पास ही ऊटी का मशहूर थ्रेड गार्डन है, जहां धागे से रंग-बिरंगे फूल बनाए जाते हैं। यहां की खासियत है कि फूलों को हाथ से बनाया जाता है और इन्हें बनाने में सुई का इस्तेमाल भी नहीं होता। इसके अलावा, दुनियाभर में मशहूर बॉटेनिकल गार्डन यहां है जहां हजारों प्रजातियों के पेड-पौधे हैं। 22 एकड में फैले इस गार्डन में हर साल मई में होने वाले फ्लावर शो में बडी तादाद में लोग पहुंचते हैं। यहां एक अन्य आकर्षण एक पेड का करीब दो करोड साल पुराना जीवाश्म है। बॉटेनिकल गार्डन के पास ही चिल्ड्रन पार्क है। यहां जाएंगे तो लगेगा कि मखमल का कोई गलीचा आपके सामने बिछा हुआ है। बच्चों का दिल अगर यहां से आने को न करे तो इसमें उनका कोई कुसूर नहीं। ऊटी का एक अन्य आकर्षण छह एकड में फैला रोज गार्डन है। यह विजयनगरम इलाके में एल्क हिल की ढलान पर है जहां गुलाब के 17,000 से ज्यादा पौधे हैं। तभी तो इसे देश का सबसे बडा रोज गार्डन होने का गौरव हासिल है। इसके अलावा, गोल्फ कोर्स व रेस कोर्स की हरियाली वहां जाने वाले को अपने जादू में बांध लेने के लिए काफी है।

वेनलॉक का जादू

टोडा जनजाति के घरों को तो हमने दूर से देखा, लेकिन वेनलॉक के नैसर्गिक सौंदर्य को हम अपने भीतर भरकर ले लाए। सफेद बादलों में लिपटी चटख हरे रंग की पहाडियां.. हर बार पलकें उठाते ही भीतर एक पूरी दुनिया आबाद हो रही थी, और हर सांस के साथ मानो अमृत घुलता जा रहा था शरीर में। यह स्थान ऊटी से छह मील व नौ मील के बीच स्थित है। स्थानीय लोग बोलचाल में इसे फिल्म शूटिंग पॉइंट कहते हैं। चाय की खेती होने से पहले नीलगिरी पर्वतमाला की हर पहाडी ऐसी ही होती थी। हल्की ढलान वाली इन बल खाती हुई पहाडियों की तुलना ब्रिटेन के यॉर्कशर डेल्स से की जाती है। पहले तो हमने सोचा कि बारिश में कौन चढेगा पहाडी के ऊपर, चलो रहने देते हैं। लेकिन फिर हिम्मत की तो ऊपर जाकर पता चला कि हमसे क्या छूटने जा रहा था। एक पहाडी की ढलान दूसरी पहाडी की ढलान में मिल रही थी। दूर तक जन्नत के सिवा कुछ नहीं था। ये क्या! अभी-अभी जो जगह साफ दिख रही थी, उसे अचानक सफेद जलकणों ने ढक लिया था। ठंड से हम कांप रहे थे और कानों के सिरे लाल हुए जा रहे थे।

लेकिन यकीन मानिए, वहां से वापस आने के लिए मन को समझाना मुश्किल हो रहा था। हमारे सामने जो था, वो किसी स्वप्न से कम नहीं था। हमारा ऊटी आना सफल हो गया।

ऋषभ पंत को आईसीसी रैंकिंग में फायदा, छठे स्थान पर पहुंचे

दुबई (एजेंसी)। भारतीय विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत पिछले हफ्ते मुंबई में न्यूजीलैंड के खिलाफ तीसरे टेस्ट में प्रदर्शन के बूते बुधवार को ताजा जारी आईसीसी पुरुष टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में पांच पायदान के फायदे से छठे स्थान पर पहुंच गए। पंत ने मुंबई टेस्ट के दौरान दो अर्धशतकीय पारियां खेलीं, हालांकि भारत तीसरे और अंतिम टेस्ट में हार से श्रृंखला 0-3 से गंवा बैठा।

इस प्रदर्शन से पंत को रैंकिंग में फायदा हुआ जो संकेत है कि वह गंभीर कार दुर्घटना के बाद अपनी सर्वश्रेष्ठ फॉर्म में वापसी कर चुके हैं। अब यह बायें हाथ का बल्लेबाज जुलाई 2022 में रैंकिंग में हासिल किये गये अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ पांचवें स्थान से महज एक कदम पीछे है। शीर्ष टेस्ट बल्लेबाजों की सूची में शामिल अन्य भारतीय बल्लेबाजों में बायें हाथ के युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल भी मौजूद हैं जो एक पायदान नीचे चौथे स्थान पर खिसक गये हैं।

न्यूजीलैंड ने मुंबई में 25 रन की करीबी जीत से श्रृंखला में व्हाइटवाश किया जिससे शीर्ष 10 टेस्ट बल्लेबाजी रैंकिंग में पंत और दौरा करने वाली टीम के डेरिल मिचेल को फायदा हुआ। मिचेल आठ पायदान की छलांग से सातवें स्थान पर पहुंच गये, उन्होंने मुंबई टेस्ट में भारत के खिलाफ पहली पारी में 82 रन की पारी खेली जिससे वह टीम के साथी केन विलियमसन (दूसरे स्थान) के साथ शामिल हो गये जो न्यूजीलैंड के शीर्ष 10 में मौजूद एकमात्र खिलाड़ी थे।

इंग्लैंड के दाएं हाथ के बल्लेबाज जो रूट ने सूची में शीर्ष पर अपनी बढ़त बरकरार रखी है जिसमें विलियमसन, हैरी ब्रूक (तीसरे), जायसवाल (चौथे) और स्टीव स्मिथ (पांचवें) उनके लिए चुनौती हैं। भारत के शुभमन गिल ने मुंबई में न्यूजीलैंड के खिलाफ पहली पारी में 90 रन की पारी खेली जिससे वह चार पायदान के लाभ से 16वें स्थान पर पहुंचे जबकि न्यूजीलैंड के 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' विल यंग 29 पायदान की उछाल से 44वें स्थान पर काबिज होने में सफल रहे।

रविंद्र जडेजा न्यूजीलैंड के खिलाफ 10 विकेट लेने से टेस्ट गेंदबाजी रैंकिंग में दो पायदान के फायदे से छठे स्थान पर पहुंचे जिससे वह रविचंद्रन अश्विन से एक स्थान पीछे हैं। कागिसो रबाडा शीर्ष रैंकिंग पर काबिज हैं। ऑस्ट्रेलिया के जोश हेजलवुड भारतीय तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह और पैट कमिंस से आगे दूसरे स्थान पर हैं। वहीं टीम साथी वाशिंगटन सुंदर टेस्ट गेंदबाजों में सात पायदान के लाभ से 46वें स्थान पर पहुंच गये। न्यूजीलैंड के स्पिन जोड़ीदार एजाज पटेल (12 पायदान के फायदे) और ईश सोढ़ी (तीन पायदान के फायदे) क्रमशः 22वें और 70वें स्थान पर बने हुए हैं।

रोहित के बाद ऋषभ को टेस्ट कप्तान बनायें : कैफ

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व क्रिकेटर मोहम्मद कैफ का मानना है कि कप्तान रोहित शर्मा के उत्तराधिकारी के तौर पर विकेटकीपर-बल्लेबाज ऋषभ पंत सबसे बेहतर रहेंगे। न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू मैदान पर भारतीय टीम की 3-0 से करारी हार के बाद रोहित की कप्तानी पर भी सवाल उठने लगे हैं। ऐसे में भविष्य को देखते हुए रोहित के उत्तराधिकारी की भी तलाश की जा रही है।

इसी को लेकर कैफ ने कहा कि रोहित के पद छोड़ने के बाद आक्रामक बल्लेबाज ऋषभ को कमान सौंपी जानी चाहिए। कैफ ने कहा कि मौजूदा टीम से केवल ऋषभ ही टेस्ट कप्तान बनने की दौड़ में हैं। वह इसके योग्य है वह जब भी खेले, भारतीय टीम को आगे रखने में लगे रहे। वह जिस भी नंबर पर खेलने आएं, मैच जिताने वाली पारी खेलने के लिए तैयार रहते हैं। उन्होंने सभी प्रकार की हालातों में रन बनाए हैं, चाहे वह इंग्लैंड हो, ऑस्ट्रेलिया हो या दक्षिण अफ्रीका। चाहे सीमिंग हो या टर्निंग ट्रैक, वह एक पूर्ण बल्लेबाज के तौर पर उभरकर आये हैं। इस पूर्व क्रिकेटर के अनुसार मुंबई में न्यूजीलैंड के खिलाफ जब भारत को 147 रनों का पीछा करना था तब भी ऋषभ ने अपनी ओर से पूरा प्रयास किया था। कीवी टीम ने तब तक दबाव महसूस किया जब तक वह विकेट पर था। कैफ ने कहा कि हाल के समय में इस युवा ने अपनी विकेटकीपिंग में भी खासा सुधार किया है। उन्होंने आगे कहा कि जब ऋषभ अपना अंतिम टेस्ट मैच खेल रहे होंगे, तो वह एक दिग्गज खिलाड़ी के रूप में संन्यास लेंगे। उन्होंने दिखाया है कि पहले से ही उनकी कीपिंग में काफी सुधार हुआ है। जब तक वह क्रीज पर थे, न्यूजीलैंड को राहत नहीं लेने दी। इसी को देखते हुए मेरा मानना है कि वह कप्तानी के लिए सबसे बेहतर रहेंगे।

हॉकी इंडिया टीम राजगीर पहुंची... ग्लास ब्रिज पर खिंचवाई तस्वीर

पटना (एजेंसी)। एशियाई महिला हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी में शामिल इंडिया हॉकी टीम को आज जिला प्रशासन नालंदा द्वारा ग्लास ब्रिज राजगीर का भ्रमण कराया गया। इंडिया हॉकी टीम के सभी महिला खिलाड़ियों ने बिहार सरकार द्वारा निर्मित ग्लास ब्रिज पर ट्रॉफी के साथ फोटो खिंचवाकर काफी उत्साहित हुईं।

विदित है कि बिहार राज्य खेल प्राधिकरण ,पटना के तत्वाधान में राजकीय खेल अकादमी- सह- खेल परिसर, राजगीर में एशियन महिला हॉकी चैंपियंस ट्रॉफी का आयोजन दिनांक 11 नवंबर से 20 नवंबर 2024 तक निर्धारित है । इस प्रतियोगिता में कुल 6 देश के टीम यथा भारत, चीन, मलेशिया ,जापान ,दक्षिण कोरिया एवं थाईलैंड भाग ले रही हैं ।

वहीं भ्रमण के दौरान इंडिया हॉकी टीम के सभी महिला खिलाड़ियों ने बिहार सरकार द्वारा निर्मित ग्लास ब्रिज पर ट्रॉफी के साथ फोटो खिंचवाकर काफी उत्साहित हुई । बिहार में टूरिज्म को बढ़ावा देने के उद्देश्य से उत्कृष्ट कार्यों की इंडिया हॉकी टीम के द्वारा सराहना की गई ।

SA vs IND : भुवनेश्वर के रिकॉर्ड पर अर्शदीप सिंह की नजरें, टूटा ही समझिए

मुम्बई (एजेंसी)। अर्शदीप सिंह टी20ई में भारत के लिए एक बड़ा रिकॉर्ड बनाने की दहलीज पर खड़े हैं। बाएं हाथ के तेज गेंदबाज के पास एक कैलेंडर वर्ष में पुरुष टी20ई में किसी भारतीय गेंदबाज द्वारा सर्वाधिक विकेट लेने का रिकॉर्ड बनाने का मौका है। उनका टी20 विश्व कप में प्रदर्शन शानदार रहा। संयुक्त राज्य अमेरिका में हुए टूर्नामेंट में वह 7.14 की इकॉनमी रेट से लीडिंग विकेटटेकर्स की लिस्ट में ऊपर रहे।

एक साल में 32 मैच खेलकर 6.98 की इकॉनमी रेट से 37 विकेट लेने का रिकॉर्ड फिलहाल भुवनेश्वर कुमार के नाम पर है। अर्शदीप भी 21 मैचों में 8.17 की इकॉनमी रेट से 33 विकेट लेने के बाद इस सूची में दूसरे स्थान पर हैं। इस तेज गेंदबाज के पास दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ भारत की आगामी तीन मैचों की टी20 सीरीज में भुवनेश्वर के रिकॉर्ड को पीछे छोड़ने का मौका होगा।

अर्शदीप वर्तमान में पुरुषों की टी20ई में किसी भारतीय द्वारा सर्वाधिक विकेट लेने की सूची में चौथे स्थान पर हैं। उन्होंने 56 मैचों में 8.28 की इकॉनमी रेट से 87 विकेट लिए हैं, जिसमें 2 बार 4 विकेट लेने का कारनामा भी उनके नाम है। यदि वह श्रृंखला में 10 या अधिक विकेट लेते हैं, तो वह पुरुषों की टी20ई में भारत के अग्रणी विकेट लेने वाले गेंदबाज बन जाएंगे।

बता दें कि भारतीय टीम ने साऊथ अफ्रीका में 4 टी20 मुकाबले खेलने हैं। पहला टी20 8 नवंबर दिन शुक्रवार को डरबन के किंग्समीड में होगा। इसके बाद गकेबरहा, सेंचुरियन और जोहान्सबर्ग क्रमशः 10, 13 और 15 नवंबर को शेष तीन टी20ई होंगे।

100 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज !

टी20 इंटरनेशनल में अब तक भारत के लिए कोई प्लेयर 100 विकेट नहीं ले पाया है। महिला क्रिकेट में यह कारनामा दीप्ति शर्मा कर चुकी है। 2022 में इंग्लैंड दौरे पर भारत के लिए डैब्यू करने वाले अर्शदीप जल्द ही पुरुषों में पहले 100 विकेट लेने वाले भारतीय हो सकते हैं। इस मुकाम तक पहुंचने के लिए उन्हें 13 ही विकेट चाहिए।

स्वियाटेक को हराकर कोको गॉफ डब्ल्यूटीए फाइनल में सेमीफाइनल में पहुंची

रियाद - अमेरिका की महिला टेनिस स्टार कोको गॉफ ने डब्ल्यूटीए फाइनल में गत चैंपियन इगा स्वियाटेक को सीधे सेटों में हराकर सेमीफाइनल में जगह बना ली हैं। ऑरेंज ग्रुप एकल के दूसरे दौर के मंगलवार को हुए मुकाबले में दोनों खिलाड़ियों ने पहले सेट में 3-3 तक सर्विस बरकरार रखी। इसके बाद गॉफ ने लगातार दो बार स्वियाटेक की सर्विस तोड़कर पहला सेट 6-3 से जीत लिया। दूसरे सेट में दोनों

खिलाड़ियों ने पहले आठ गेम मे दो बार एक दूसरे की सर्विस तोड़ी और स्कोर 4-4 पर पहुंच गया। इसके बाद गॉफ ने एक बार फिर स्वियाटेक की सर्विस तोड़कर यह सेट 6-4 से जीतकर मुकाबला अपने नाम कर लिया। मैच के बाद गॉफ ने कहा, 'आज यह निश्चित रूप से मेरे लिए एक अच्छा मैच था। आप जानते हैं कि इगा के साथ खेलना मेरे लिए कठिन है, लेकिन मैं वास्तव में खुश हू कि मैं पूरा मैच मे खेलने में कामयाब रही।' वहीं एक अन्य मैच में चेक गणराज्य की बारबोरा क्रेजिकोवा ने अमेरिकी जेसिका पेगुला को एक घंटे और 9 मिनट चले मुकाबले में 6-3, 6-3 से हराया।

पीटरसन ने टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजी कौशल में गिरावट पर चिन्ता जतायी

लंदन । इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर केविन पीटरसन ने टेस्ट क्रिकेट में बल्लेबाजी तकनीक में गुणवत्ता में आ रही कम पर चिंता जतायी है। पीटरसन ने सोशल मीडिया में कहा कि आजकल पारंपरिक बल्लेबाजी कौशल में गिरावट आई है। पीटरसन ने कहा कि किसी को भी टेस्ट मैच क्रिकेट में बल्लेबाजी अनुप्रयोग और तकनीक की कमी पर अब हैरान नहीं होना चाहिये क्योंकि क्रिकेट अब एक स्मैकर्स खेल है और खेल मे ऐसे बल्लेबाजी कौशल नीचे आ रहा है। पीटरसन की टिप्पणियां क्रिकेट में टी20 और सीमित ओवरों के प्रारूपों के कारण टेस्ट बल्लेबाजी की कला कमजोर होने को लेकर है। इससे पहले पीटरसन ने भारतीय टीम के अनुभवी बल्लेबाजों विराट कोहली और रोहित शर्मा को ट्रोल करने के लिए सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया। केविन ने रिकी पोंटिंग का एक बयान पोस्ट किया। जिसमें लिखा था कि अगर आपका टेस्ट क्रिकेट में औसत 35 के पास है और आप फिर भी खेल रहे हैं तो आपके पिता को आपको बास्केटबॉल या फुटबॉल शूज देकर इन खेलों को खेलने के लिए कहना चाहिए। गौरतब है कि न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैचों की टेस्ट सीरीज के दौरान विराट और रोहित रन बनाने में असफल रहे। दोनों ही एक एक अर्धशतक ही लगा पाये।

धोनी का अनुभव चेन्नई के लिए अमूल्य संपत्ति : पोंटिंग

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने चेन्नई सुपर किंग्स को पांच बार खिताब जिताने वाले महेंद्र सिंह धोनी की जमकर प्रशंसा की है। पोंटिंग ने कहा कि धोनी का अनुभव और नेतृत्व चेन्नई के लिए अमूल्य संपत्ति की तरह है। सीएसके ने आईपीएल के नये नियमों के कारण इस बार धोनी को केवल 4 करोड़ रुपए में रिटेन किया है। धोनी ने साल 2019 में ही संन्यास ले लिया था। ऐसे में पांच साल बाद उन्हें केवल अनकैप्ड खिलाड़ी के तौर पर ही आईपीएल में रखा जा सकता है। ऑक्शन नियमों के मुताबिक अनकैप्ड प्लेयर के लिए अधिक से अधिक 4 करोड़ कीमत रखी गई है। धोनी 4 करोड़ में खेलने को तैयार हो गये जबकि वह मेगा नीलामी में बड़ी रकम हासिल कर सकते थे। पोंटिंग ने आईसीसी रिव्यू में मेजबान संजना गणेशन के साथ खेल में धोनी के महत्व पर बात की। पोंटिंग ने कहा कि संरक्षक भूमिकाओं के बीच धोनी टीम में अद्वितीय संतुलन लाते हैं। पोंटिंग ने कहा कि दो सीजन पहले उनके लिए समय सही नहीं था, पर पिछले साल उन्होंने फिर से वापसी की और कुछ मैचों में अपने खेल से पुरानी यादें ताजा करायी हैं। मुझे लगता है कि टीम पूरे सत्र में उसे शायद ही ले पाये। वे उसे एक गेम के लिए बाहर रखने और उसे यहां-वहां आराम देने के बारे में सोच सकते हैं जिससे यह पक्का हो सके कि वे सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर रहे हैं। पोंटिंग ने कहा कि धोनी अभी भी सीएसके के लिए महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने कहा कि वह किसी भी टीम में हो, चाहे वह कप्तान हो या नहीं, वह हमेशा उस समूह के लिए एक संरक्षक और एक नेता के तौर पर ही रहेगा, चाहे वह खेल रहा हो, चाहे वह किनारे पर बैठा हो। वह मैदान के अंदर और बाहर नेतृत्व लाते हैं।

ऑस्ट्रेलिया दौरे में बुमराह पर रहेगा अधिक दबाव : घावरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। गुजरे जमाने के बाएं हाथ के दिग्गज तेज गेंदबाज रहे करसन घावरी ने कहा है कि भारतीय टीम के नये तेज गेंदबाजों को ऑस्ट्रेलिया दौरे में लाइन व लैंथ के लिए संघर्ष करना पड़ेगा। घावरी के अनुसार ऐसे में मुख्य तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह पर ही पूरा दारोमदार रहेगा। भारतीय टीम इसी माह ऑस्ट्रेलिया में बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी खेलेगी। घावरी ने कहा कि भारतीय टीम को अनुभवी तेज गेंदबाज मो शमी की कमी भी खलेगी। शमी फिट नहीं होने के कारण इस दौरे से बाहर हैं। ऐसे बुमराह पर ही पूरी जिम्मेदारी आ जाएगी। भारतीय टीम 22 नवंबर से 7 जनवरी तक ऑस्ट्रेलिया में 5 टेस्ट खेलेगा। इस दौरान तेज गेंदबाजी आक्रमण का नेतृत्व बुमराह करेंगे जबकि मोहम्मद सिराज , आकाशदीप , प्रसिद्ध कृष्णा, हर्षित राणा जैसे गेंदबाज उनका

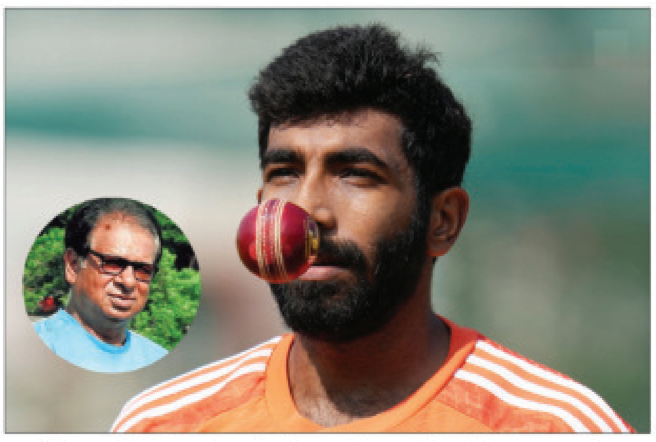

साथ देंगे। घावरी ने टीम इंडिया के तेज गेंदबाजी आक्रमण में अनुभव की कमी पर चिंता व्यक्त की और कहा कि नए खिलाड़ियों के लिए ऑस्ट्रेलिया में कठिन समय हो सकता है। घावरी ने कहा कि नए गेंदबाज ऑस्ट्रेलिया में संघर्ष करेंगे। उनके लिए उन हालातों में गेंदबाजी करना बहुत मुश्किल होगा। शमी अगर होते तो बुमराह को अच्छा साथ मिलता पर वह वह वहां नहीं है। भारत केवल बुमराह पर निर्भर नहीं रह सकता है। सिराज वहां है और उसके पास कुछ अनुभव है पर बाकि 2 नए तेज गेंदबाजों को रखना आदर्श स्थिति नहीं है। घावरी ने कहा कि टेस्ट सीरीज के दौरान बुमराह काफी दबाव में होंगे और उन्हें सिराज से काफी समर्थन की आवश्यकता होगी। बुमराह और सिराज को नई गेंद से काफी बोझ उठाना होगा। आप तीसरे तेज गेंदबाज से यह उम्मीद नहीं कर सकते कि वह अनुभवी लोगों की तरह प्रदर्शन करें। अगर वे तीन तेज गेंदबाजों को खिलाते हैं, तो आप अनिश्चित हैं कि तीसरा कैसा प्रदर्शन करेगा, इसलिए बुमराह और सिराज को निश्चित रूप से काफी प्रयास करने होंगे।

बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी में आक्रामक वापसी कर सकती है भारतीय टीम: हेजलवुड

मेलबर्न (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलियाई तेज गेंदबाज जोश हेजलवुड ने कहा है कि भारतीय क्रिकेट टीम को न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज में भले ही करारी हार का सामना करना पड़ा हो पर वह बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी से एक बार फिर दमदार वापसी कर सकती है। हेजलवुड के अनुसार न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज में 3-0 से मिली हार के बाद भले ही भारतीय टीम का मनोबल गिरा हो पर उसे कमजोर मानना गलत होगा। उसके पास कई मैच विजेता खिलाड़ी हैं। हेजलवुड ने अपनी टीम को आगाह किया है कि भारतीय टीम इस सीरीज में पलटवार करने के इरादे से उतरेगी। इसलिए हमें 22 नवंबर से शुरू होने वाली बॉर्डर-

हेज़लवुड ने कहा,'' भारतीय टीम वापसी करने के लिए प्रतिबद्ध होगी। इसलिए सीरीज शुरू होने पर ही हमें पता चलेगा की चीजें कैसे आगे बढ़ रही हैं।'' घरेलू धरती पर मिली हार से

भारतीय टीम के लिए विश्व टेस्ट चैम्पियनशिप (डब्ल्यूटीसी) फाइनल की राह भी मुश्किल हुई है। लगातार तीन हार से वह डब्ल्यूटीसी तालिका में भी फिसल गयी है। भारत को लगातार तीसरी बार डब्ल्यूटीसी फाइनल के लिए क्वालीफाई करने के लिए ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ अपने पांच में से चार मैच जीतने होंगे। हेज़लवुड ने कहा, ''इस करारी हार से उनका आत्मविश्वास कुछ डगमगाया होगा। उसके कुछ खिलाड़ी यहां खेल चुके हैं पर कुछ ऐसे बल्लेबाज हैं जिनको यहां खेलने का अनुभव नहीं है। इसलिए वह पूरी तरह से सुनिश्चित नहीं होंगे कि उन्हें यहां किस तरह की चुनौती का सामना करना पड़ेगा। यह परिणाम निश्चित रूप से हमारे लिए अच्छा होगा।''

उन्होंने कहा,''न्यूजीलैंड की टीम को भी श्रेय मिलना चाहिए। उन्होंने पूरी सीरीज में शानदार क्रिकेट खेली। सीरीज तो छोड़ो भारत में एक मैच जीतना भी काफी कठिन होता है।'' भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला 22 नवंबर से पर्थ में शुरू होगी। हेज़लवुड ने कहा,''हम इसके लिए तैयार हैं।यह सीरीज हमारे लिए भी काफी महत्व रखती है। जब भी हम भारत के खिलाफ खेलते हैं तो वह एशेज में खेलने जैसा होता है।

रोनाल्डो के गोल की मदद से अल नासर की एएफसी चैंपियंस लीग में बड़ी जीत

रियाद - क्रिस्टियानो रोनाल्डो के गोल की मदद से अल नासर ने एएफसी चैंपियंस लीग फुटबॉल प्रतियोगिता के एलीट वर्ग में संयुक्त अरब अमीरात के क्लब और गत चैंपियन अल ऐन को 5-1 से हराकर 12 टीमों की तालिका में शीर्ष तीन में जगह बनाई। सऊदी अरब के क्लब अल नासर के चार मैचों में 10 अंक हैं तथा वह स्थानीय प्रतिद्वंद्वियों अल हिलाल और अल अहली से दो अंक पीछे हैं। इन दोनों ने अभी तक अपने चारों मैच जीते हैं। एंडरसन तालिस्का ने खेल शुरू होने के पांच मिनट बाद ही अल नासर की तरफ से पहला गोल किया। इसके बाद रोनाल्डो ने आधे घंटे के अंतराल के ठीक बाद इस सत्र में प्रतियोगिता में अपना दूसरा गोल किया। फैबियो कार्डोसो के आत्मघाती गोल से सऊदी अरब की टीम ने मध्यांतर तक 3-0 की बढ़त बना दी। वेस्ले और तालिस्का ने दूसरे हाफ में अल नासर के लिए गोल किए। इस बीच जापान के विसेल कोबे ने दक्षिण कोरिया के ग्वांगजू एफसी पर 2-0 से जीत से अपने ग्रुप में पहला स्थान हासिल कर लिया। मलेशिया के जोहोर दारुल ताज़िम दक्षिण कोरिया के दो बार के चैंपियन उल्सान एचडी पर 3-0 से जीत के साथ तीसरे स्थान पर पहुंच गया।

डेविस कप कोच आशुतोष सिंह को 16 साल के मानस धामने से काफी उम्मीदें

नई दिल्ली - जीशान अली की जगह नये डेविस कप कोच बने आशुतोष सिंह को उम्मीद है कि मानस धामने अपनी कड़ी मेहनत और शानदार जज्बे की बदौलत भारतीय टेनिस के लिए भविष्य में अहम खिलाड़ी साबित हो सकते हैं। आशुतोष ने स्टॉकहोम में मालेगांव के इस युवा खिलाड़ी को देखा जहां भारत ने स्वीडन के खिलाफ डेविस कप ग्रुप एक मुकाबले में हिस्सा लिया था। हालांकि 16 वर्षीय

धामने को कोई मैच खेलने का मौका नहीं मिला लेकिन वह एक अन्य युवा खिलाड़ी आर्यन शाह के साथ स्टॉकहोम गई टीम का हिस्सा थे। भारत को मेजबान टीम के हाथों 0-4 से हार का सामना करना पड़ा, लेकिन कोच आशुतोष ने स्वीडन में हुए इस निराशाजनक प्रदर्शन में सकारात्मक पहलू देखा। पूर्व डेविस कप खिलाड़ी बलराम सिंह के बेटे आशुतोष ने कहा, 'मानस एक मेहनती खिलाड़ी है। कोर्ट पर वह सिर्फ आंखों से संपर्क बनाता है और 'ओके' करता है। उसके पास एकल में भारत के 'मिस्टर डिपेंडेबल' बनने की क्षमता है जिसकी तलाश भारतीय टेनिस को लंबे समय से है। आशुतोष ने कहा, 'निश्चित रूप से अभी बहुत लंबा सफर तय करना है। लेकिन वह जिस रास्ते पर चल रहा है और उसके मेहनती दृष्टिकोण से यह संभव लगता है।' उन्होंने कहा, 'यह भी ध्यान रखना होगा कि मानस सिर्फ 16 साल का है और उसे अपने कार्यभार प्रबंधन के कुछ पहलुओं में सतर्कता बरतते हुए निगरानी की जरूरत है। लेकिन वह इटली में अपने 'ट्रेनिंग बेस' में सही ट्रेनिंग ले रहा है।' भारत के पास शीर्ष-100 में केवल एक खिलाड़ी सुमित नागल (83) है। उनके बाद रामकुमार रामनाथन हैं जो 309वें नंबर पर हैं। फिर शशि कुमार मुकुंद (365) हैं। पर अन्य सभी शीर्ष-500 रैंकिंग से बाहर हैं।

अनिल कुंबले को उम्मीद, दक्षिण अफ्रीका में युवा खिलाड़ियों को मिलेगा मौका

मुंबई (एजेंसी)। पूर्व कप्तान अनिल कुंबले का मानना है कि यश दयाल, विशाक विजयकुमार और रमनदीप सिंह को घरेलू क्रिकेट में उनके शानदार रिकार्ड को देखते हुए भारतीय टी20 टीम के दक्षिण अफ्रीका दौरे में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण का मौका मिलना चाहिए। सूर्यकुमार यादव की अगुवाई वाली भारतीय टीम डरबन में शुक्रवार से शुरू होने वाली पांच टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच की श्रृंखला में दक्षिण अफ्रीका का सामना करेगी।

पूर्व दिग्गज बल्लेबाज वीवीएस लक्ष्मण इस टीम के कोच हैं। कुंबले ने जिओ सिनेमा से कहा, 'मुझे उम्मीद है कि इन तीनों खिलाड़ियों को भारतीय टीम की तरफ से खेलने का मौका मिलेगा क्योंकि उन्होंने घरेलू स्तर पर वास्तव में अच्छा प्रदर्शन किया है।' कुंबले ने तेज गेंदबाज यश दयाल की शानदार वापसी करने के लिए प्रशंसा की, जिन पर रिंकू सिंह ने आईपीएल 2023 के दौरान लगातार पांच छक्के जड़े थे।

उन्होंने कहा, 'यश दयाल जिन पर रिंकू सिंह ने लगातार पांच छक्के लगाए थे, उन्होंने क्या शानदार वापसी की। इससे उनके जज्बे का पता चलता है। वह बाएं हाथ का शानदार तेज गेंदबाज है जो दोनों तरफ गेंद को मूव कर सकता है।' कुंबले ने हैरानी जताई कि रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने विजयकुमार को रिटेन नहीं किया।

उन्होंने कहा, 'विजयकुमार वास्तव में बहुत अच्छा तेज गेंदबाज है जिसने घरेलू क्रिकेट में अच्छा प्रदर्शन किया है। मुझे वास्तव में हैरानी हुई कि आरसीबी ने उसे रिटेन नहीं किया। मुझे उम्मीद है कि दक्षिण अफ्रीका में उसे मौका मिलेगा। उसके पास डेथ ओवरों के लिए हर तरह का वेरिएशन है।'

कुंबले ने कहा कि अगर रमनदीप को अंतिम एकादश में जगह मिलती है तो उनका गेंदबाज के रूप में भी उपयोग किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, 'रमनदीप अच्छा आक्रामक बल्लेबाज और शानदार क्षेत्ररक्षक है। मुझे उम्मीद है कि उसका गेंदबाज के रूप में भी उपयोग किया जाएगा क्योंकि आईपीएल में इंपैक्ट प्लेयर के नियम के बाद लोग ऑलराउंडर को नजर अंदाज करने लगे हैं।'

बीजेपी सरकार यदि अटलजी का नजरिया अपनाती तो कश्मीर की स्थिति अलग होती

सीएम उमर अब्दुल्ला ने की पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की जमकर तारीफ

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर विधानसभा सत्र मंगलवार को शुरू हो गया है, जिसमें सीएम उमर अब्दुल्ला ने पूर्व पीएम अटल बिहारी वाजपेयी की जमकर तारीफ की है। श्रद्धांजलि सभा में सीएम उमर ने अटल जी को याद करते हुए उनके दृष्टिकोण की सराहना की और कहा कि अगर केंद्र में बीजेपी सरकार ने अटलजी का नजरिया अपनाया होता, तो जम्मू-कश्मीर की स्थिति आज अलग ही होती।

उमर अब्दुल्ला ने बताया कि अटलजी ने हमेशा जम्मू-कश्मीर में स्थिति को सुधारने की कोशिश की। अटलजी ने 1999 में दिल्ली-लाहौर बस यात्रा चलाने के दौरान पाकिस्तान की मीनार-ए-पाकिस्तान का दौरा किया था, जो एक कठिन कदम था। इसके बाद उन्होंने सरहद पर खड़े होकर कहा था कि हम दोस्त बदल सकते हैं, लेकिन पड़ोसी नहीं। अटलजी का यह विचार था कि बातचीत ही एकमात्र रास्ता है और उन्होंने कई असफलताओं के बावजूद बार-बार दोस्ती का हाथ बढ़ाया।

सीएम उमर ने कहा कि अटल बिहारी जी ने एलओसी के पार रास्तों को खोलने के लिए काम किया, जिससे लोगों को एक-दूसरे के करीब लाने की कोशिश की, लेकिन बाद में ये रास्ते बंद कर दिए गए। उन्होंने यह भी कहा कि आज जम्मू-कश्मीर को अलग-थलग करने की कोशिश की जा रही है, जबकि अटलजी का दृष्टिकोण हमेशा समग्रता और संवाद पर आधारित था। उमर अब्दुल्ला ने पूर्व राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी को भी श्रद्धांजलि दी और कहा कि उनके जीवन से बहुत कुछ सीखने को मिला है। उमर ने मुखर्जी की कड़ी मेहनत और राजनीति में उनके संघर्ष की तारीफ की। उन्होंने यह भी कहा कि मुखर्जी ने सभी पदों के साथ न्याय किया और उन्होंने राजनीति में एक बड़ा योगदान दिया।

इसके अलावा सीएम उमर अब्दुल्ला ने पूर्व लोकसभा अध्यक्ष सोमनाथ चटर्जी और बीजेपी नेता देवेंद्र सिंह राणा को भी श्रद्धांजलि दी। राणा के निधन पर उन्होंने कहा कि चुनावी प्रतिद्वंद्विता के बावजूद उनके साथ मेरे बहुत अच्छे रिश्ते थे। मैं नहीं जानता था कि वह इतने बीमार हैं, अगर मुझे पता होता तो मैंने हमारे रिश्तों को बेहतर बनाने की कोशिश की होती। अब्दुल्ला ने यह भी कहा कि श्रद्धांजलि देने के लिए तैयार की गई दिवंगत लोगों की सूची में शामिल सभी 56 लोगों ने जनता की सेवा में अपना योगदान दिया है।

अब लॉरेंस बिश्नोई बाबा सिद्दीकी हत्याकांड के गवाहों के पीछे पड़ा, कर रहा धमकी भरा फोन कॉल

मुंबई। राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (अजित पवार) के दिवंगत नेता बाबा सिद्दीकी हत्याकांड को लेकर अब एक नई जानकारी सामने आई है। विजयादशमी के दिन यानी 12 अक्टूबर को मुंबई के बांद्रा स्थित खेरवाड़ी जंक्शन इलाके में बाबा सिद्दीकी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। इस दौरान बाबा सिद्दीकी के आसपास कई लोग मौजूद थे। पुलिस ने इन लोगों के बयान दर्ज करना शुरू किया। जब यह प्रक्रिया चल रही थी, तो यह पता चला कि एक गवाह को लॉरेंस बिश्नोई गिरोह से धमकी भरा फोन आया था। इस मामले में संबंधित प्रत्यक्षदर्शी ने खार पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराई है। बताया गया है कि उक्त शख्स के पास कुछ दिन पहले एक अनजान शख्स का फोन आया। इस अज्ञात शख्स ने गवाह को धमकाया और उससे 5 करोड़ रुपये की मांग की। पैसे न देने पर चश्मदीद को जान से मारने की धमकी दी गई। पुलिस का शुरुआती अनुमान है कि फोन लॉरेंस बिश्नोई गैंग का है। बहरहाल अब पुलिस गवाहों की सुरक्षा के लिए क्या कदम उठाती है ये तो आने वाले समय में ही पता चलेगा।

सार्वजनिक जगहों पर थूंकने वालों की अब खैर नहीं, 5200 लोगों पर लगा 9 लाख का जुर्माना

सूरत। शहर में सार्वजनिक जगहों पर थूंकना लोगों को महंगा पड़ सकता है। पहली बार सूरत में सार्वजनिक जगहों पर थूंकने वालों पर बड़ी कार्रवाई की गई है। सूरत नगर निगम (एसएमसी) ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में पहली बार बड़ी संख्या में थूकने वालों पर कार्रवाई की है। एसएमसी ने शहर के विभिन्न क्षेत्रों में सार्वजनिक स्थलों पर गंदगी करने वालों पर 9 लाख का जुर्माना लगाया है। दिवाली-न्यू ईयर समेत सड़क पर थूकने पर 5200 लोगों पर जुर्माना लगाया गया है। पुलों, डिवाइडरों, सड़कों और सर्किलों के पेंटवर्क को नुकसान पहुंचाने वालों पर कार्रवाई की गई है। साथ ही कमांड एंड कंट्रोल सेंटर के 4500 सीसीटीवी से अब 24 घंटे निगरानी की जाएगी। दरअसल त्योहारों को लेकर महोत्सव ताने सूरत के सभी जोन में करोड़ों की लागत से पुल-सड़कों, सर्किलों का रंग-रोगन किया गया था। लेकिन सौंदर्यीकरण को मावा-गुटखा खाकर थूकने वालों ने बिगाड़ दिया। इसके चलते सार्वजनिक स्थानों पर खबरें थूकने वालों के खिलाफ कंट्रोल एंड कमांड सेंटर के 4500 कैमरों से निगरानी कर थूकने वालों को पकड़ा गया है। सीसीटीवी के जरिए ऐसे 5200 लोगों पर 9 लाख का जुर्माना लगाया गया है। एसएमसी का दावा है कि सूरत में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में थूकने वालों पर कार्रवाई की गई है। हालांकि कार्रवाई के बाद भी ऐसे थूकने वाले सुधरने का नाम नहीं ले रहे हैं। इसलिए नगर निगम ने आने वाले दिनों में सख्ती बढ़ाने और जुर्माने की राशि दोगुनी करने की तैयारी शुरू कर दी है।

पी चिदंबरम ने एयर इंडिया पर लगाए बदइंतजामी के आरोप

नई दिल्ली। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता पी चिदंबरम ने एयर इंडिया के स्टाफ पर बदइंतजामी के आरोप लगाए हैं। खास बात ये है कि चिदंबरम ने ये आरोप सार्वजनिक रूप से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर लगाए हैं। 15 मिनट से वो एयरो ब्रिज पर खड़े होकर फ्लाइट का इंतजार कर रहे थे, लेकिन विमान का दरवाजा नहीं खुला तो उन्होंने ट्वीट किया है। पी चिदंबरम ने एक्स पर ट्वीट किया, दिल्ली से चेन्नई जा रही उड़ान एआई 540 के सभी यात्री पिछले 15 मिनट से एयरो ब्रिज पर खड़े हैं। हमें गेट पर चढ़ने के लिए मंजूरी दे दी गई थी, लेकिन विमान के दरवाजे पर इंतजार करने के लिए कहा गया था। यात्री प्रस्थान समय के 10 मिनट बाद ही सवार हो रहे हैं। कोई नहीं जानता कि फ्लाइट कब रवाना होगी। इसके बाद कांग्रेस के सीनियर नेता ने लिखा, मैं एयर इंडिया से अक्सर यात्रा करता रहा हूं। मुझे खेद है कि प्रबंधन के सरकार से निजी क्षेत्र में हाथ बदलने के बाद से व्यावहारिक रूप से कोई सुधार नहीं हुआ है। मैं उड़ान के कई पहलुओं को सूचीबद्ध कर सकता हूं, जिन्हें एक सक्षम प्रबंधन द्वारा बेहतर बनाया जा सकता है। मुझे लगता है कि एयर इंडिया में विभिन्न स्तरों पर सक्षम प्रबंधकों की कमी है।

पटना-नई दिल्ली पूजा स्पेशल ट्रेन का परिचालन

हाजीपुर। त्योहारों के अवसर पर यात्रियों के सुविधाजनक आवागमन के लिए कई पूजा स्पेशल ट्रेनों का परिचालन किया जा रहा है। इसी कड़ी में छठ पर्व बाद नई दिल्ली जाने वाले यात्रियों की सुविधा के लिए एक जोड़ी अतिरिक्त पूजा स्पेशल ट्रेन का परिचालन किया जाएगा। गाड़ी संख्या 03329 पटना-नई दिल्ली पूजा स्पेशल 09.11.2024 एवं 11.11.2024 को पटना से 14.05 बजे खुलकर दानापुर, आरा, बक्सर, पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन के रास्ते अगले दिन 08.00 बजे नई दिल्ली पहुंचेगी। इसी तरह वापसी में गाड़ी संख्या 03330 नई दिल्ली-पटना पूजा स्पेशल 10.11.2024 एवं 12.11.2024 को नई दिल्ली से 09.30 बजे खुलकर पंडित दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा, दानापुर के रास्ते अगले दिन 02.20 बजे पटना पहुंचेगी। इस बात की जानकारी पूर्व मध्य रेल के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी सरस्वती चंद्र ने एक विज्ञप्ति में दी। न यादव ने इस बार कड़ा रुख अख्तियार किया है।

आईसीजी महिपालपुर में डेटा सेंटर बनाएगा, आधारशिला रखी गई

नई दिल्ली। भारतीय तटरक्षक बल (आईसीजी) नई दिल्ली के महिपालपुर में डेटा सेंटर बनाएगा। आईसीजी के उप महानिदेशक (नीति एवं योजना) एवं महानिरीक्षक (आईजी) आनंद प्रकाश बडोला ने प्रोजेक्ट डिजिटल कोस्ट गार्ड (डीसीजी) के टियर-III के तहत डेटा सेंटर की आधारशिला रखी। नवीनतम तकनीक से लैस यह डेटा सेंटर महत्वपूर्ण आईटी संसाधनों की निगरानी और प्रशासन के लिए मस्तिष्क केंद्र के रूप में काम करेगा, जिससे आईसीजी के प्रशासनिक कामकाज को महत्वपूर्ण सहायता मिलेगी।

वाराणसी में सामूहिक हत्याकांड से 28 साल पुरानी यादें ताजा

वाराणसी। वाराणसी के भेलूपुर थाना क्षेत्र के भदैनी इलाके में हुए सामूहिक हत्याकांड ने 28 साल पुरानी यादें ताजा कर दी। बता दें कि मंगलवार की सुबह शराब ठेकेदार राजेंद्र गुप्ता, उनकी पत्नी, दो बेटे और बेटी के शव उनके घर में मिले थे जिनकी गोली मारकर हत्या की गई थी। घटना के बाद पूरे क्षेत्र में भय का माहौल है। इस सामूहिक हत्याकांड ने 28 साल पुरानी त्रासदी की यादें ताजा कर दी हैं, जब इसी घर में 1996 में राजेंद्र के भाई कृष्ण कुमार गुप्ता और उनकी पत्नी मंजू गुप्ता की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। कृष्ण कुमार और उनकी पत्नी की मौत के बाद राजेंद्र ने उनके दोनों बेटों विक्की और जुगनू उर्फ प्रशांत तथा बहन डॉली की जिम्मेदारी संभाली थी। 1997 में राजेंद्र के पिता लक्ष्मी गुप्ता और उनके गार्ड की भी हत्या कर दी गई थी। इस मामले में राजेंद्र पर आरोप लगे और उसे जेल भी जाना पड़ा, लेकिन बाद में कोर्ट से जमानत मिल गई। पुलिस पुराने मामले को देखते हुए इस नए हत्याकांड की जांच कर रही है और उनका मानना है कि हो सकता है कि इस घटना को पेशेवर शार्प शूटर ने अंजाम दिया हो। वाराणसी के पुलिस कमिश्नर मोहित अग्रवाल ने बताया कि इस केस की जांच में हर एंगल को ध्यान में रखा जा रहा है और एक विशेष टीम को इस काम में लगाया गया है। इस दिल दहला देने वाली घटना ने वाराणसी में सुरक्षा के मुद्दे को लेकर चिंताएं बढ़ा दी हैं। मामले में वाराणसी पुलिस कमिश्नर ने सीसीटीवी फुटेज और मोबाइल फोन की हिस्ट्री खंगालना शुरू कर दिया है। पुलिस राजेंद्र के भतीजे जुगनू उर्फ प्रशांत से पूछताछ कर रही है, लेकिन दूसरे भतीजे विक्की से संपर्क नहीं हो पाया है, क्योंकि उसका फोन बंद है।

मोदी और शाह के नेतृत्व में देश का सियासी स्तर गिरा

-संजय राउत ने केंद्रीय नेतृत्व को लिया निशाने पर

मुंबई (एजेंसी)। शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि इन दोनों के नेतृत्व में देश का सियासी स्तर नीचे चला गया है। संभवतः-यही वजह है कि बीते दिनों शरद पवार ने चुनाव नहीं लड़ने का फैसला किया। लेकिन, हम जैसे सभी लोग जो उन्हें चाहते हैं, उनसे आग्रह करना चाहेंगे कि वो राजनीति से अभी संन्यास ना लें।

उन्होंने कहा, कि शायद यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि शरद पवार भारतीय राजनीतिक जगत के सर्वाधिक वरिष्ठ नेताओं में से एक हैं। उनके जैसा वरिष्ठ नेता भारतीय राजनीति में मौजूदा समय में कोई दूसरा नहीं है। हम सभी लोगों ने उनसे राजनीति का पाठ पढ़ा और सीखा है। उन्होंने अपने राजनीतिक जीवन की यात्रा के दौरान अमिट छाप छोड़ी है। ऐसे में उनकी उपेक्षा को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं किया जा सकता है। लेकिन, इस बात को भी खारिज करना गवारा नहीं रहेगा कि मौजूदा वक्त में जिस तरह से राजनीति का स्तर नीचे चला गया है, वो निंदनीय है। शायद इसी वजह से पवार ने बीते दिनों चुनाव ना लड़ने की इच्छा जाहिर की। लेकिन, हम चाहेंगे कि वो राजनीति में बने रहें। इसी बीच उन्होंने देवेंद्र फडणवीस को भी आड़े हाथों लिया और कहा, कि वह छत्रपति शिवाजी महाराज के विरोधी हैं। उन्होंने कहा कि, यहां एक बात मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि उनका विरोध करने से कुछ होने वाला नहीं है। उद्धव ठाकरे स्पष्ट कर चुके हैं कि हर जिले में छत्रपति शिवाजी महाराज का मंदिर बनेगा। लेकिन, ना जाने क्यों कुछ लोग इसका विरोध कर रहे हैं। इसी के साथ सवाल करते हुए राउत ने कहा, कि जब अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण हो सकता है, तो हमारे महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज का मंदिर क्यों नहीं बन सकता है। उन्होंने कहा कि मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हम महाराष्ट्र में छत्रपति शिवाजी महाराज का मंदिर बनवाकर रहेंगे। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज के दौरान भी कई फडणवीस थे, जिन्होंने उनका विरोध किया था। लेकिन, उनके वजूद पर किसी भी प्रकार की आंच नहीं आई थी। इसलिए मैं कहना चाहूंगा कि कोई उनका कितना भी विरोध क्यों ना करे, लेकिन उनकी अस्मिता पर किसी भी प्रकार की आंच नहीं आने वाली है।

भड़काऊ भाषण देकर बुरे फंसे मिथुन चक्रवर्ती, उत्तर 24 परगना में दिए गए बयान को लेकर दर्ज की गई एफआईआर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के कार्यक्रम में 'भड़काऊ' बयान को लेकर अभिनेता से नेता बने मिथुन चक्रवर्ती के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई। चक्रवर्ती ने भाजपा के सदस्यता अभियान कार्यक्रम के पश्चिम बंगाल चरण में कथित 'भड़काऊ' बयान दिया, जिसमें केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह भी शामिल हुए। पुलिस सूत्रों ने बताया कि चक्रवर्ती के खिलाफ शिकायत 27 अक्टूबर को साल्ट लेक इलाके में ईजेडसीसी में एक भाजपा कार्यक्रम के दौरान दिए गए भाषण से संबंधित है, जिसके आधार पर पुलिस ने विधाननगर दक्षिण पुलिस स्टेशन में एक प्राथमिकी दर्ज की थी।

बिधाननगर पुलिस के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि हमने मामले की जांच शुरू कर दी है। भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री सुकांत मजूमदार ने एफआईआर को 'प्रतिशोध की राजनीति' का परिणाम बताया। उन्होंने कहा कि उनके भाषण में कुछ भी उत्तेजक नहीं है। ये कुछ और नहीं बल्कि पुलिस को राजनीतिक हथियार के तौर पर इस्तेमाल कर उन्हें डराने की कोशिशें हैं। इस साल की शुरुआत में भारत का सर्वोच्च फिल्म सम्मान, दादा साहब फाल्के पुरस्कार प्राप्त करने वाले चक्रवर्ती ने 27 अक्टूबर को कहा था कि 2026 के विधानसभा चुनावों के बाद पश्चिम बंगाल का ÷मसनद÷ (सिंहासन) भाजपा का होगा, उन्होंने कुछ भी करने का वादा किया था। लक्ष्य हासिल करने में लगता है।

ईस्टर्न जोनल कल्चरल सेंटर (ईजेडसीसी) में कार्यक्रम में बोलते हुए, चक्रवर्ती ने कहा कि 2026 में मसनद हमारा होगा, और हम लक्ष्य हासिल करने के लिए सब कुछ करेंगे। लोकसभा चुनाव के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं पर टीएमसी विधायक हुमायूं कबीर की सांप्रदायिक टिप्पणियों के स्पष्ट संदर्भ में, चक्रवर्ती ने चेतावनी दी कि किसी को भी भगवा पार्टी के मतदाताओं को अगले विधानसभा चुनावों में मतदान से दूर रहने के लिए डराने-धमकाने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

हमें स्वदेशी समुदायों की विशिष्टता और पुराने बाशिंदों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए : बीरेन सिंह

इंफाल। मणिपुर के मुख्यमंत्री एन बीरेन सिंह ने थाडौ सम्मेलन में पारित उस प्रस्ताव पर संतोष जताया, जिसमें राष्ट्रीय नागरिक पंजी (एनआरसी) और राज्य के ꠲मादक पदार्थ के खिलाफ युद्ध꠲ अभियान के प्रति समर्थन व्यक्त किया गया है। सिंह ने इस बात पर भी जोर दिया कि उनकी सरकार शांति लाने के नाम पर बाहरी लोगों को शामिल करके अपनी नीतियों से समझौता नहीं करेगी। पिछले हफ्ते गुवाहाटी में आयोजित सम्मेलन में थाडौ जनजाति ने एनआरसी और राज्य के 'मादक पदार्थ के खिलाफ युद्ध' अभियान के प्रति समर्थन जताया था। थाडौ कुकी समुदाय में सबसे बड़ी जनजाति है। हालांकि, हालिया सम्मेलन के दौरान समुदाय ने जोर देकर कहा, 'थाडौ लोगों का एक विशिष्ट जातीय समूह है, जिसकी अपनी अलग भाषा, संस्कृति, परंपराएं और महान इतिहास है। थाडौ समुदाय न तो कुकी है, न ही कुकी के अधीन है और न ही कुकी का हिस्सा है। यह कुकी से अलग एक स्वतंत्र समुदाय है।' व्यावसायिक पाठ्यक्रमों से जुड़ी प्रवेश परीक्षाओं के लिए मुख्यमंत्री कोचिंग योजना की शुरुआत के अवसर पर सिंह ने कहा, 'शांति जरूर बहाल होगी। थाडौ राज्य की सबसे पुरानी जनजातियों में से एक है। थाडौ सम्मेलन में एनआरसी और मादक पदार्थ के खिलाफ युद्ध अभियान के लिए समर्थन जताए जाने के बाद राज्य के कई नागरिक समाज संगठनों ने इस रुख का स्वागत और सराहना की है।' सिंह ने कहा, 'हम शांति के नाम पर अपनी नीतियों से समझौता नहीं कर सकते। समावेशिता की आड़ में हम हर बाहरी शख्स को अपने यहां जगह नहीं दे सकते। हमें अपने स्वदेशी समुदायों की विशिष्टता और पुराने बाशिंदों के अधिकारों की रक्षा करनी चाहिए। इस उद्देश्य के चलते हमें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि हम भारतीय हैं।' कोचिंग योजना के बारे में सिंह ने कहा कि इसका मकसद मणिपुर के छात्रों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में दाखिले के लिए राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित की जाने वाली जेईई (मेन/एडवांस्ड) और नीट जैसी प्रवेश परीक्षाओं में बैठने के लिए तैयार करना है। उन्होंने कहा, 'पढ़े-लिखे, शिक्षित लोगों के संघर्ष में शामिल होने की संभावना कम होती है और वे अपनी वाणी एवं कार्यों में शालीनता बनाए रखेंगे। भारत की एकता और अखंडता की रक्षा करना हमारा सामूहिक कर्तव्य है। हमें संविधान के तहत गारंटीकृत अधिकारों को समझना चाहिए।'

मदरसों ने देश को आईएएस, आईपीएस, मंत्री दिए, उन पर संदेह करना गलत

-पर्सनल लॉ बोर्ड के प्रवक्ता अब्बास पे की फैसले की तारीफ

-सुप्रीम कोर्ट के फैसले का मुस्लिम संगठनों और धार्मिक नेताओं ने किया स्वागत

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने यूपी के मदरसा शिक्षा बोर्ड अधिनियम की वैधता को बरकरार रखते हुए मदरसों के संचालन के अधिकारों की पुष्टि की। कोर्ट ने कहा कि यह अधिनियम राज्य की उस जिम्मेदारी के अनुरूप है, जो यह तय करती है कि मान्यता प्राप्त मदरसों में शिक्षा का स्तर ऐसा हो जो छात्रों को समाज में सक्रिय रूप से भाग लेने और जीविकोपार्जन में सक्षम बनाए। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले का मुस्लिम संगठनों और धार्मिक नेताओं ने स्वागत किया है।

ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के मौलाना खालिद रशीद फरंगी महली ने इस फैसले का स्वागत करते हुए कहा कि यह अधिनियम असंवैधानिक नहीं हो सकता क्योंकि इसके जरिए से हजारों लोग जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि अब मदरसे बिना किसी बाधा के स्वतंत्र रूप से काम कर सकते हैं। ऑल इंडिया शिया पर्सनल लॉ बोर्ड के प्रवक्ता मौलाना यासूब अब्बास ने भी फैसले की तारीफ की और कहा कि मदरसों ने देश को आईएएस, आईपीएस, मंत्री और राज्यपाल जैसे अहम पद के विराजमान अधिकारी दिए हैं। उन्हें संदेह की नजर से देखना सही नहीं है।

जमीयत उलेमा-ए-हिंद के मौलाना काब रशीदी ने इसे एक बड़ा संदेश बताया है और सुप्रीम कोर्ट के फैसले का आभार मानते हुए उसका स्वागत किया। सीजेआई डी. वाई. चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि कोई कानून तभी असंवैधानिक माना जा सकता है जब वह संविधान के भाग-3 के तहत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता हो। उन्होंने साफ कहा कि यह कानून राज्य की विधायी क्षमता के अंतर्गत आता है और उच्च न्यायालय ने इसे धर्मनिरपेक्षता का उल्लंघन मानने में गलती की थी।

हालांकि, कोर्ट ने फाजिल और कामिल जैसी डिग्रियों पर अधिनियम के प्रावधानों को असंवैधानिक माना क्योंकि ये डिग्रियां यूजीसी अधिनियम के तहत आती हैं, जो उच्च शिक्षा को नियंत्रित करती है। इन प्रावधानों को संविधान के केंद्रीय अधिकार क्षेत्र में अतिक्रमण के कारण राज्य की विधायी सीमा से बाहर करार दिया। इस फैसले ने मदरसा अधिनियम को संवैधानिक मान्यता देते हुए, मदरसों को स्वतंत्र रूप से शिक्षा प्रदान करने का अधिकार तय किया है, जबकि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में यूजीसी के अधिकार क्षेत्र की भी पुष्टि की।

स्टालिन ने फिर छेड़ी उत्तर-दक्षिण की बहस, द्रविड़ियन मॉडल का जिक्र करते हुए जानें क्या कहा

चेन्नई (एजेंसी)। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एमके स्टालिन ने राज्य के कोंगु बेल्ट (तमिलनाडु का पश्चिमी और उत्तर-पश्चिमी भाग) के अपने दौरे के दौरान एक कार्यक्रम में बोलते हुए कहा कि तमिलनाडु के नेतृत्व में दक्षिणी राज्यों की आर्थिक प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। राष्ट्र की वृद्धि, जिससे उत्तरी राज्यों को लाभ मिलता है। उन्होंने सफलता का श्रेय तमिलनाडु के शासन के द्रविड़ियन मॉडल को दिया, जिसे उन्होंने समावेशी, लोकप्रिय और विकासात्मक लक्ष्यों से प्रेरित बताया। मुख्यमंत्री ने कहा कि द्रविड़ मॉडल सरकार लोगों के दिलों से जुड़ी हुई है, चाहे उन्होंने हमें वोट दिया हो या नहीं। इसीलिए लोग हमारा समर्थन कर रहे हैं और मुझसे और अधिक की उम्मीद कर रहे हैं। विधानसभा और संसद चुनावों के बीच तुलना करने पर डीएमके की लोकप्रियता बढ़ी है।

स्टालिन ने इस बात पर जोर दिया कि पिछले पांच दशकों में उत्तरी राज्यों के साथ राज्य की प्रगति की तुलना करते हुए तमिलनाडु की प्रगति देश में एक मॉडल के रूप में खड़ी है। तमिलनाडु अब भारत की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था और सबसे अधिक शहरीकृत राज्य है। हम संयुक्त राष्ट्र के मानकों के अनुरूप विकास पहलों को लागू करने में अग्रणी हैं।

इससे पहले तमिलनाडु के उपमुख्यमंत्री उदयनिधि स्टालिन ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि दक्षिण की तरह उत्तर भारत के कई राज्यों में अपनी पहचान और सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा के लिए कोई फिल्म उद्योग नहीं है। उन्होंने कहा कि यदि राज्य अपनी भाषाओं की रक्षा करने में विफल रहे तो हिंदी हावी हो जाएगी और उनकी पहचान खत्म हो जाएगी।

उन्होंने कहा कि यही कारण है कि द्रविड़ आंदोलन हिंदी थोपे जाने के खिलाफ है, लेकिन उसमें उस के प्रति कोई द्वेष नहीं है। द्रविड़ राजनीति में साहित्यिक और भाषायी लोकाचार पर उन्होंने कहा कि तमिलनाडु में द्रविड़ राजनीतिक आंदोलन, जो अपने मजबूत भाषायी और सांस्कृतिक गौरव के लिए जाना जाता है, ने लंबे समय से साहित्य और को अपने आधार स्तंभ के रूप में रखा है।

दिल्ली की हवा जहरीली बनी हुई है, 358 रहा औसत एक्यूआई

- बच्चे और बुजुर्गों को घर से बाहर निकलने के दौरान सांस लेने में हो रही परेशानी

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली की हवा बेहद खराब श्रेणी में बनी हुई है। बुधवार को दिल्ली की औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) 358 रहा। पिछले कुछ दिनों से दिल्ली की हवा जहरीली बनी हुई है। दिल्ली वासियों को खासतौर पर बच्चे और बुजुर्गों को घर से बाहर निकलने के दौरान सांस लेने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के अनुसार राजधानी दिल्ली में बुधवार सुबह 7.30 बजे तक औसत वायु गुणवत्ता सूचकांक 358 अंक रहा। जबकि दिल्ली एनसीआर के शहर फरीदाबाद में 234, गुरुग्राम में 304, गाजियाबाद में 276, ग्रेटर नोएडा में 274 और नोएडा में 266 एक्यूआई रहा। दिल्ली के चार इलाकों में एक्यूआई लेवल 400 से ऊपर मापा गया, जिसमें बवाना में 412, मुंडका में 419, एनएसआईटी द्वारका में 447 और वजीरपुर में 421 एक्यूआई दर्ज किया गया। जबकि दिल्ली एनसीआर के अधिकांश इलाकों में एक्यूआई 300 से 400 के बीच में दर्ज किया गया। अलीपुर में 372, अशोक विहार में 398, आया नगर में 334, बुराड़ी क्रॉसिंग में 370, चांदनी चौक में 311, मथुरा रोड में 333, डॉ करणी सिंह शूटिंग रेंज में 367, डीटीयू में 355, द्वारका सेक्टर 8 में 355, आईजीआई एयरपोर्ट में 347, आईटीओ में 327, जहांगीरपुरी में 398, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में 315 और लोधी रोड में 309 एक्यूआई रहा। इनके अलावा मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में 354, मंदिर मार्ग में 356, नजफगढ़ में 354, नरेला में 377, नेहरू नगर में 376, न्यू मोती बाग में 381, नॉर्थ कैंपस डीयू में 373, ओखला फेस 2 में 357, पटपड़गंज में 381, पंजाबी बाग में 388, पूषा में 330, आर के पुरम में 373, शादीपुर में 372, सिरी फोर्ट में 341, सोनिया विहार में 354 और दिलशाद गार्डन में 358 एक्यूआई दर्ज किया गया। एक दिन पहले की बात करें तो मंगलवार को सुबह 7.15 बजे तक दिल्ली का औसत एक्यूआई लेवल 384 दर्ज किया गया था। दिल्ली के 14 इलाकों में एक्यूआई लेवल 400 के ऊपर मापा गया था, जबकि 23 स्थानों पर ये 300 से 400 के बीच बना रहा।

नवबिहार मीडिया प्रा. लि. के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. रामाज्ञा तिवारी द्वारा विश्वेश्वरा पब्लिकेशनंस एलएलपी की ओर से शिवासाईं पब्लिकेशन प्राइवेट लिमिटेड, नियर टेंडर बागीचा पेट्रोल पंप, रातू, रांची (झारखंड)- 835222 से मुद्रित एवं उद्योग भवन मार्ग, 19 A कोकर औद्योगिक क्षेत्र रांची- 834001 (झारखंड) से प्रकाशित। **संपादक- डॉ. रामाज्ञा तिवारी,, प्रबंध संपादक- पंकज कु. सिंह* प्रधान संपादक-देवेंद्र सिंह*** (*पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार), **प्रबंधक- नरेंद्र कुमार सिंह.** 9334331934, 9386895799, 9507466535, **RNI Regn.: JHAHIN/2011/40902**